FAIZAN-E-MADINA

माहनामा

फ़ैज़ाने मदीना

(दावते इस्लामी)

अप्रैल 2026 ई. / ज़ुल क़ादतुल हराम 1447 हि.

- भलाई में तआवुन का क़ुरआनी मफ़्हूम 3
- क़ियामत का अन्धेरा 7
- बे दीनी की अ़य्यारियां 17
- बरकत का ज़वाल : अस्बाब और हमारी ज़िम्मेदारियां 23
- चट्टान रेज़ा रेज़ा हो गई 44
- बेटियां और माली मुआमलात की बुन्यादी तालीम 50

माल व अस्बाब की नुक़्सानात से हिफ़ाज़त

दुकान या मकान या माल व अस्बाब पर रोज़ाना

يَا اَللّٰهُ

49 बार पढ़ कर दम कर दिया जाए तो اِنْ شَآءَاللّٰهُ الْكَرِيْم मुख़्तलिफ़ नुक़्सानात से हिफ़ाज़त होगी। (मेंडक सुवार बिच्छू, स. 26)

(नोट : वज़ीफ़े के अव्वल आख़िर एक एक बार दुरूद शरीफ़ पढ़ना है)

इबादत व रियाज़त का शौक़ पैदा करने के लिये

يَامُحْصِی

(ऐ हर चीज़ के घेरने वाले)

अगर तबीअत इबादत की तरफ़ माइल न होती हो तो सोते वक़्त अपना हाथ सीने पर रख कर 7 मरतबा येह इस्म पढे, اِنْ شَآءَاللّٰهُ الْكَرِيْم बहुत जल्द इबादतो रियाज़त का शौक़ पैदा हो।

(मदनी पंजसूरह, स. 291)

(नोट : वज़ीफ़े के अव्वल आख़िर तीन तीन बार दुरूद शरीफ़ पढ़ना है)

अल्लाह पाक ने चाहा तो हर काम बने

يَا اَللّٰهُ، يَا رَحْمٰنُ، يَا رَحِيْمُ، يَا حَيُّ يَا قَيُّوْمُ

नमाज़े अस्र के बाद से ग़ुरूबे आफ़ताब तक

चलते फिरते उठते बैठते, काम काज करते हुए या सिर्फ़ बैठ कर बे शुमार बार पढ़ते रहिये, अव्वल आख़िर और बीच में दुरूद शरीफ़ भी पढ़ लीजिये। اِنْ شَآءَاللّٰهُ الْكَرِيْم हर काम बने।

मसलन कारोबार चमके, क़र्ज़ अदा हो, अच्छी नौकरी मिले, अफ़्सर या सेठ मेहरबान हो, ख़ानदानी झगड़े ख़त्म हों, पुराने अटके हुए काम हो जाएं, रिश्ते की रुकावट दूर हो, बे औलादी ख़त्म हो, क़ैदी को रिहाई मिले, इबादत में दिल लगे, वीज़े का मस्अला हल हो, सास बहू का झगड़ा और तलाक़ का ख़तरा ख़त्म हो, मियां बीवी की नाराज़ी का ख़ातिमा हो, जैसी भी बीमारी हो चली जाए, शक करने और वस्वसे की आफ़त दूर हो, اِنْ شَآءَاللّٰهُ الْكَرِيْم। (मुराद पूरी होने तक रोज़ाना ही अमल करते रहिये اِنْ شَآءَاللّٰهُ الْكَرِيْم जल्द ही तरकीब बन जाएगी)

अमीरे अहले सुन्नत मौलाना इल्यास अत्तार क़ादिरी
14 रमज़ान 1446 हि. 15-3-25

माहनामा
फ़ैज़ाने मदीना

(दावते इस्लामी)

अप्रैल 2026 ई.

ब फ़ैज़ाने नज़र
सिराजुल उम्मह, काशिफ़ुल ग़ुम्मह,
इमामे आज़म हज़रते सय्यिदुना
इमाम अबू हनीफ़ा नोमान बिन साबित رحمۃ اللہ تعالٰی علیہ

ब फ़ैज़ाने करम
आला हज़रत इमामे अहले सुन्नत
मुजद्दिदे दीनो मिल्लत शाह
इमाम अहमद रज़ा ख़ान رحمۃ اللہ تعالٰی علیہ

माहनामा फ़ैज़ाने मदीना धूम मचाए घर घर
या रब जा कर इश्क़े नबी के जाम पिलाए घर घर

(अज़ : अमीरे अहले सुन्नत دامت برکاتہم العالیہ)

क़ुरआनो हदीस	
भलाई में तआवुन का क़ुरआनी मफ़्हूम	3
क़ियामत का अन्धेरा	7
फ़ैज़ाने सीरत	
रसूलुल्लाह صلی اللہ علیہ واٰلہ وسلم का अन्दाज़े तबस्सुम	10
फ़ैज़ाने अमीरे अहले सुन्नत	
हालते एहराम में नारियल का तेल लगाना कैसा ? मअ़ दीगर सुवालात	13
दारुल इफ़्ता अहले सुन्नत	
इन्आमी इस्कीम और जूए की शरई हैसिय्यत मअ़ दीगर सुवालात	15
मज़ामीन	
बे दीनी की अ़य्यारियां	17
इस्लाम का तरबियती निज़ाम	20
बरकत का ज़वाल : अस्बाब और हमारी ज़िम्मेदारियां	23
बुज़ुर्गाने दीन के मुबारक फ़रामीन	25
इस्लाम कमज़ोरों का मुहाफ़िज़	26
ताजिरों के लिये	
अहकामे तिजारत	28
बुज़ुर्गाने दीन की सीरत	
हज़रते यूसुफ़ علیہ السلام के भाइयों की तौबा	30
हज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुर्रहमान बिन औ़फ़ رضی اللہ عنہ	32
हज़रते अ़ब्दुल्लाह बिन आ़मिर رضی اللہ عنہما	34
अपने बुज़ुर्गों को याद रखिये	35
मुतफ़र्रिक़	
बकरी का गोश्त	37
क़ारिईन के सफ़हात	
नए लिखारी	40
बच्चों का "माहनामा फ़ैज़ाने मदीना"	
सच की बरकत	43
चटान रेज़ा रेज़ा हो गई	44
तेज़ आंधी वाली जंग	46
बच्चों को नज़र अन्दाज़ मत कीजिये	48
इस्लामी बहनों का "माहनामा फ़ैज़ाने मदीना"	
बेटियां और माली मुआ़मलात की बुन्यादी तालीम	50
इस्लामी बहनों के शरई मसाइल	52

क़ुरआनी तालीमात

भलाई में तआवुन का क़ुरआनी मफ़्हूम

क़ुरआनी तालीमात में एक मुकम्मल और जामेअ़ निज़ामे ह़यात मौजूद है जो इन्सान की इन्फ़िरादी और इजतिमाई, दुन्यवी और उख़रवी ज़िन्दगी के तमाम पहलुओं को मुनज़्ज़म करता है। इन्ही जामेअ़ तालीमात में से एक येह तालीम भी है कि नेकी और तक़्वा के कामों में एक दूसरे का साथ दो और गुनाह और ज़ुल्म के कामों से बाज़ रहो। चुनान्चे अल्लाह करीम का फ़रमान है :

﴿وَتَعَاوَنُوْا عَلَى الْبِرِّ وَالتَّقْوٰى ۪ وَلَا تَعَاوَنُوْا عَلَى الْاِثْمِ وَالْعُدْوَانِ ۪ وَاتَّقُوا اللّٰهَ ؕ اِنَّ اللّٰهَ شَدِيْدُ الْعِقَابِ(۲)﴾

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : और नेकी और परहेज़गारी पर एक दूसरे की मदद करो और गुनाह और ज़ियादती पर बाहम मदद न दो और अल्लाह से डरते रहो बेशक अल्लाह का अ़ज़ाब सख़्त है।[1]

येह आयते करीमा इस्लामी मुआ़शरे की तश्कील का बुन्यादी उसूल बयान करती है। इस में चार अहम अ़नासिर का ज़िक्र है : اَلْبِرّ (नेकी), اَلتَّقْوٰی (परहेज़गारी), اَلْاِثْم (गुनाह) और اَلْعُدْوَان (ज़ियादती)। पहले दो अ़नासिर वोह हैं जिन में तआवुन और मुआ़वनत का हुक्म दिया गया है, जब कि आख़िरी दो अ़नासिर वोह हैं जिन में मुआ़वनत से मना किया गया है।

इसी त़रह़ अल्लाह तआ़ला ने सूरतुल मुजादिला में मोमिनों को हिदायत दी :

﴿يٰۤاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْۤا اِذَا تَنَاجَيْتُمْ فَلَا تَتَنَاجَوْا بِالْاِثْمِ وَالْعُدْوَانِ وَمَعْصِيَتِ الرَّسُوْلِ وَتَنَاجَوْا بِالْبِرِّ وَالتَّقْوٰى ؕ وَاتَّقُوا اللّٰهَ الَّذِيْۤ اِلَيْهِ تُحْشَرُوْنَ(۹)﴾

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : ऐ ईमान वालो तुम जब आपस में मशवरत करो तो गुनाह और ह़द से बढ़ने और रसूल की ना फ़रमानी की मशवरत न करो और नेकी और परहेज़गारी की मशवरत करो और अल्लाह से डरो जिस की त़रफ़ उठाए जाओगे।[2]

इस आयत में अल्लाह करीम ने इन्ही चार अ़नासिर का ज़िक्र फ़रमाया है और ताकीद फ़रमाई है कि जब लोग आपस में सरगोशी करें तो नेकी और भलाई की बातें करें, न कि गुनाह और बुराई की।

इन चारों अ़नासिर यानी "اَلْبِرّ, اَلتَّقْوٰی, اَلْاِثْم और اَلْعُدْوَان" को क़ुरआने करीम ने मुख़्तलिफ़ सियाक़ व सबाक़ में कई बार ज़िक्र फ़रमाया है, चुनान्चे इस मज़मून में हम इन चारों अ़नासिर को क़ुरआने करीम की आयात की रौशनी में तफ़्सील से बयान करेंगे,

ताकि हमें येह मालूम हो सके कि क़ुरआने करीम ने किन आमाल, नज़रियात और अ़क़ाइद को इन के ज़ुमरे में रखा है।

“اَلْبِرّ” क़ुरआने करीम की रौशनी में

लफ़्ज़ “اَلْبِرّ” अ़रबी ज़बान में ख़ैर, नेकी, एह़सान, भलाई और हर उस अ़मल के लिये इस्तिमाल होता है जो अल्लाह पाक को पसन्द हो और जिस में दुन्या व आख़िरत की भलाई हो। “اَلْبِرّ” का मफ़्हूम इन्तिहाई वसीअ़ है और येह तमाम नेकियों को अपने अन्दर समेटे हुए है।

क़ुरआने करीम में “اَلْبِرّ” का लफ़्ज़ मुख़्तलिफ़ मआ़नी में इस्तिमाल हुवा है। कभी येह लफ़्ज़ अ़क़ीदा व ईमान के माना में आया है, कभी इ़बादात के माना में, कभी अख़्लाक़ व मुआ़मलात के माना में, और कभी वालिदैन के साथ हुस्ने सुलूक के माना में।

“اَلْبِرّ” के इत़्लाक़ात

अल्लाह तआ़ला ने सूरतुल बक़रह में “اَلْبِرّ” के इत़्लाक़ात के बारे में फ़रमाया :

﴿لَيْسَ الْبِرَّ اَنْ تُوَلُّوْا وُجُوْهَكُمْ قِبَلَ الْمَشْرِقِ وَ الْمَغْرِبِ وَ لٰكِنَّ الْبِرَّ مَنْ اٰمَنَ بِاللّٰهِ وَ الْيَوْمِ الْاٰخِرِ وَ الْمَلٰٓئِكَةِ وَ الْكِتٰبِ وَ النَّبِيّٖنَ ۚ وَ اٰتَى الْمَالَ عَلٰى حُبِّهٖ ذَوِي الْقُرْبٰى وَ الْيَتٰمٰى وَ الْمَسٰكِيْنَ وَ ابْنَ السَّبِيْلِ ۙ وَ السَّآئِلِيْنَ وَ فِي الرِّقَابِ ۚ وَ اَقَامَ الصَّلٰوةَ وَ اٰتَى الزَّكٰوةَ ۚ وَ الْمُوْفُوْنَ بِعَهْدِهِمْ اِذَا عٰهَدُوْا ۚ وَ الصّٰبِرِيْنَ فِي الْبَاْسَآءِ وَ الضَّرَّآءِ وَ حِيْنَ الْبَاْسِ ؕ اُولٰٓئِكَ الَّذِيْنَ صَدَقُوْا ؕ وَ اُولٰٓئِكَ هُمُ الْمُتَّقُوْنَ (۱۷۷)﴾

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : कुछ अस्ल नेकी येह नहीं कि मुंह मश्रिक़ या मग़रिब की त़रफ़ करो हां अस्ली नेकी येह कि ईमान लाए अल्लाह और क़ियामत और फ़रिश्तों और किताब और पैग़म्बरों पर और अल्लाह की मह़ब्बत में अपना अ़ज़ीज़ माल दे रिश्तेदारों और यतीमों और मिस्कीनों और राहगीर और साइलों को और गर्दनें छोड़ाने में और नमाज़ क़ाइम रखे और ज़कात दे और अपना क़ौल पूरा करने वाले जब अ़हद करें और सब्र वाले मुसीबत और सख़्ती में और जिहाद के वक़्त येही हैं जिन्हों ने अपनी बात सच्ची की और येही परहेज़गार हैं।[3]

इस आयते करीमा में अल्लाह तआ़ला ने “اَلْبِرّ” के छे अहम त़रीक़े इरशाद फ़रमाए हैं : (1) अल्लाह तआ़ला, यौमे आख़िरत, फ़रिश्तों, आसमानी किताबों और अम्बिया عَلَيْهِمُ السَّلَام पर ईमान लाना (2) अल्लाह तआ़ला की मह़ब्बत में मुस्तह़िक़ अफ़राद को अपना पसन्दीदा माल देना (3) नमाज़ क़ाइम करना (4) ज़कात देना (5) अ़हद पूरा करना (6) मुसीबत, सख़्ती और जिहाद में सब्र करना।

इसी त़रह सूरतुल बक़रह में दूसरे मक़ाम पर फ़रमाया :

﴿وَ لَيْسَ الْبِرُّ بِاَنْ تَاْتُوا الْبُيُوْتَ مِنْ ظُهُوْرِهَا وَ لٰكِنَّ الْبِرَّ مَنِ اتَّقٰى ۚ وَ اْتُوا الْبُيُوْتَ مِنْ اَبْوَابِهَا ۪ وَ اتَّقُوا اللّٰهَ لَعَلَّكُمْ تُفْلِحُوْنَ (۱۸۹)﴾

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : और येह कुछ भलाई नहीं कि घरों में पछेत (पिछली दीवार) तोड़ कर आओ हां भलाई तो परहेज़गारी है और घरों में दरवाज़ों से आओ और अल्लाह से डरते रहो इस उम्मीद पर कि फ़लाह़ पाओ।[4]

ज़मानए जाहिलिय्यत में लोगों की येह आ़दत थी कि जब वोह ह़ज के लिये एह़राम बांध लेते तो अपने मकान में उस के दरवाज़े से दाख़िल न होते, अगर ज़रूरत होती तो पिछली दीवार तोड़ कर आते और उस को नेकी जानते। इस पर येह आयत नाज़िल हुई कि येह कोई नेकी नहीं कि तुम घरों के पीछे से आओ। अस्ल नेकी तक़्वा, ख़ौफ़े ख़ुदा और अह़कामे इलाही की इत़ाअ़त है।[5]

इस से मालूम हुवा कि किसी चीज़ को बग़ैर मुमानअ़त के नाजाइज़ समझना जुहला का काम है। अपनी त़रफ़ से ग़लत़ क़िस्म की रस्में और पाबन्दियां लगा लेना जाइज़ नहीं।[6]

सूरतुल बक़रह की आयत 177 के आख़िर में फ़रमाया :

﴿اُولٰٓئِكَ الَّذِيْنَ صَدَقُوْا ؕ وَ اُولٰٓئِكَ هُمُ الْمُتَّقُوْنَ (۱۷۷)﴾

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : येही हैं जिन्हों ने अपनी बात सच्ची की

और येही परहेज़गार हैं।[7]

और सूरतुल बक़रह की आयत 189 के आख़िर में फ़रमाया :

﴿وَ اتَّقُوا اللّٰهَ لَعَلَّكُمْ تُفْلِحُوْنَ(۱۸۹)﴾

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : और अल्लाह से डरते रहो इस उम्मीद पर कि फ़लाह पाओ।[8]

इस से मालूम हुवा कि "اَلْبِرّ" और "اَلتَّقْوٰی" एक दूसर से जुदा नहीं बल्कि एक दूसरे के लाज़िम व मल्ज़ूम हैं। जो शख़्स मुत्तक़ी होगा वोही ह़क़ीक़ी मानों में नेक होगा।

"اَلْبِرّ" और इन्फ़ाक़ फ़ी सबीलिल्लाह

सूरए आले इ़मरान में फ़रमाया :

﴿لَنْ تَنَالُوا الْبِرَّ حَتّٰى تُنْفِقُوْا مِمَّا تُحِبُّوْنَ۬ؕ﴾

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : तुम हरगिज़ भलाई को न पहुंचोगे जब तक राहे ख़ुदा में अपनी प्यारी चीज़ न ख़र्च करो।[9]

येह आयते करीमा اَلْبِرّ के एक अहम पहलू "अल्लाह की राह में अपनी पसन्दीदा चीज़ों में से ख़र्च करना" बयान करती है। और ताकीद करती है कि जब तक इन्सान अपनी महबूब और पसन्दीदा चीज़ों में से अल्लाह की राह में ख़र्च नहीं करता, वोह कामिल नेकी को नहीं पहुंच सकता।

वालिदैन के साथ नेकी

इसी त़रह क़ुरआने करीम में वालिदैन के साथ ह़ुस्ने सुलूक के लिये भी लफ़्ज़ "بِرّ" इस्तिमाल हुवा है। अल्लाह तआ़ला ने ह़ज़रते यहया عَلَيْهِ السَّلَام की तारीफ़ में फ़रमाया :

﴿وَّ بَرًّۢا بِوَالِدَیْهِ وَ لَمْ یَكُنْ جَبَّارًا عَصِیًّا(۱۴)﴾

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : और अपने मां बाप से अच्छा सुलूक करने वाला था और ज़बरदस्त व ना फ़रमान न था।[10]

इसी तरह ह़ज़रते ई़सा عَلَيْهِ السَّلَام के बारे में फ़रमाया :

﴿وَّ بَرًّۢا بِوَالِدَتِیْ٘ وَ لَمْ یَجْعَلْنِیْ جَبَّارًا شَقِیًّا(۳۲)﴾

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : और अपनी मां से अच्छा सुलूक करने वाला और मुझे ज़बरदस्त बदबख़्त न किया।[11]

"اَلْبِرّ" के दीगर पहलू और अज्र का बयान

इसी त़रह कुछ आयाते करीमा में "اَلْبِرّ" यानी नेकी व भलाई वग़ैरा की तालीम देने के साथ ख़ुद भी अ़मल करने का फ़रमाया गया, नेकी और भलाई वालों यानी "اَبرار" का साथ त़लब करने की दुआ़ की तरग़ीब दिलाई गई, उन का ठिकाना जन्नत और नेमतें होने का ज़िक्र फ़रमाया गया, उन्हें इ़ज़्ज़त वाले शुमार किया गया, उन्हें जन्नत में काफ़ूर मिले मश्रूबात पिलाए जाने और जन्नती बाग़ात जिन के नीचे नहरें रवां होंगी, की बिशारत दी गई जैसा कि सूरए आले इ़मरान में फ़रमाया : ﴿وَ تَوَفَّنَا مَعَ الْاَبْرَارِ(۱۹۳)ۚ﴾

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : (ऐ हमारे रब !) और हमारी मौत अच्छों के साथ कर।[12]

अबरार के लिये जन्नत की बिशारत देते हुए फ़रमाया :

﴿لٰكِنِ الَّذِیْنَ اتَّقَوْا رَبَّهُمْ لَهُمْ جَنّٰتٌ تَجْرِیْ مِنْ تَحْتِهَا الْاَنْهٰرُ خٰلِدِیْنَ فِیْهَا نُزُلًا مِّنْ عِنْدِ اللّٰهِ ؕ وَ مَا عِنْدَ اللّٰهِ خَیْرٌ لِّلْاَبْرَارِ(۱۹۸)﴾

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : लेकिन वोह जो अपने रब से डरते हैं उन के लिये जन्नतें हैं जिन के नीचे नहरें बहें हमेशा उन में रहें अल्लाह की त़रफ़ की मेहमानी और जो अल्लाह के पास है वोह नेकों के लिये सब से भला।[13]

अबरार के लिये नेमतों का तफ़्सीली ज़िक्र आया है :

﴿اِنَّ الْاَبْرَارَ یَشْرَبُوْنَ مِنْ كَاْسٍ كَانَ مِزَاجُهَا كَافُوْرًا(۵)ۚ﴾

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : बेशक नेक पिएंगे इस जाम में से जिस की मिलूनी (आमेज़िश) काफ़ूर है।[14]

﴿كِرَامٍۭ بَرَرَةٍ(۱۶)ؕ﴾

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : जो करम वाले निकोई वाले।[15]

﴿اِنَّ الْاَبْرَارَ لَفِیْ نَعِیْمٍ(۱۳)ۚ﴾

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : बेशक निकूकार ज़रूर चैन में हैं।[16]

﴿كَلَّاۤ اِنَّ كِتٰبَ الْاَبْرَارِ لَفِیْ عِلِّیِّیْنَؕ(۱۸)﴾

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : हां हां बेशक नेकों की लिखत सब से ऊंचे महल इल्लिय्यीन में है।(17)

येह तमाम आयात इस बात पर दलालत करती हैं कि जो लोग दुनिया में नेक आमाल करेंगे, अल्लाह तआला उन्हें आख़िरत में अज़ीम अज्र से नवाज़ेगा।

“اَلْبِرّ” के तर्क की मज़म्मत

सूरतुल बक़रह में बनी इसराईल को मुख़ातब करते हुए फ़रमाया :

﴿اَتَاْمُرُوْنَ النَّاسَ بِالْبِرِّ وَ تَنْسَوْنَ اَنْفُسَكُمْ وَ اَنْتُمْ تَتْلُوْنَ الْكِتٰبَؕ اَفَلَا تَعْقِلُوْنَ(۴۴)﴾

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : क्या लोगों को भलाई का हुक्म देते हो और अपनी जानों को भूलते हो हालांकि तुम किताब पढ़ते हो तो क्या तुम्हें अक़्ल नहीं।(18)

येह आयते करीमा एक अहम उसूल बयान करती है कि लोगों को नेकी की तालीम देना बहुत अच्छा काम है, लेकिन अगर ख़ुद अमल न किया जाए तो येह बहुत बड़ा तज़ाद है। बनी इसराईल की येह आदत थी कि वोह दूसरों को तो नेकी की तल्क़ीन करते थे लेकिन ख़ुद उस पर अमल नहीं करते थे। अल्लाह तआला ने इस रविश की सख़्त मज़म्मत फ़रमाई।

“اَلْبِرّ” का ख़ुलासा और तरग़ीब

क़ुरआने करीम की मज़कूरा बाला आयात से येह वाज़ेह होता है कि اَلْبِرّ एक जामेअ इस्तिलाह है जो तमाम नेकियों को अपने अन्दर समेटे हुए है। इन आयाते करीमा से “اَلْبِرّ” के बारे में ख़ुलासा येह हासिल हुवा है कि • हमेशा नेकी और भलाई की बात करो और ख़ुद भी अमल करो • अल्लाह पाक, यौमे आख़िरत, फ़रिश्तों, आसमानी किताबों और अम्बिया عَلَیْهِمُ السَّلَام पर ईमान रखो • अल्लाह के बताए हुए तरीक़ों पर, अल्लाह तआला की महब्बत में अपना पसन्दीदा माल ख़र्च करो • नमाज़ क़ाइम करो • ज़कात अदा करो • अहद पूरा करो • मुसीबत, सख़्ती और जिहाद में सब्र करो • मां बाप के साथ भलाई करो। • नेक लोगों की सोहबत इख़्तियार करने की कोशिश करो • अपनी निजी महाफ़िल और मुशावरतों और सरगोशियों में भी इन नेकियों ही को शामिल करो • और इन जुम्ला उमूर में एक दूसरे का साथ दो, बाहम तआवुन करो।

(**नोट :** दूसरे अन्सर “اَلتَّقْوٰی” की तफ़्सीलात अगले माह “मई 2026 ई.” के शुमारे में पढ़िये। اِنْ شَآءَاللّٰه)

---

(1)پ6، المآئدۃ:2(2)پ28، المجادلۃ: 9(3)پ2، البقرۃ:177(4)پ2، البقرۃ:189(5)تفسیر مدارک، البقرۃ، تحت الآیۃ:189، ص101(6)صراط الجنان، 1/304(7)پ2،البقرۃ:177(8)پ2، البقرۃ:189(9)پ4، اٰلِ عمرٰن:92 (10)پ16، مریم:14(11)پ16، مریم:32(12)پ4، اٰلِ عمرٰن:193 (13)پ4، اٰلِ عمرٰن:198(14)پ29، الدھر:5(15)پ30، عبس:16 (16)پ30،الانفطار:13(17)پ30،المطففین:18(18)پ1،البقرۃ:44۔

क़ुरआने की रौशनी में एक मोमिन को कैसा होना चाहिये ? जानने के लिये इस रिसाले का मुतालआ कीजिये।

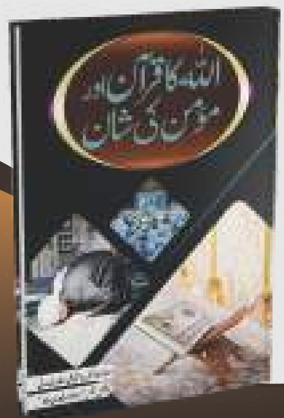

शर्हे ह़दीसे रसूल

क़ियामत का अन्धेरा

ह़ज़रते अ़ब्दुल्लाह बिन उ़मर رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہُمَا से रिवायत है कि रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : اَلظُّلْمُ ظُلُمَاتٌ یَوْمَ الْقِیَامَۃ तर्जमा : ज़ुल्म क़ियामत के दिन कई अन्धेरों की सूरत में होगा।[1]

ह़ज़रते इमाम बुख़ारी رَحْمَۃُ اللّٰہِ عَلَیْہ ने इस रिवायत को किताबुल मज़ालिम में इस लिये ज़िक्र किया कि इस में ज़ुल्म को क़ियामत के दिन अन्धेरा क़रार दिया गया है।

ह़दीसे रसूल की शर्ह़

ज़ालिम ज़ुल्म की वज्ह से इकठ्ठे कई गुनाहों का इर्तिकाब करता है। अल्लाह पाक और उस के रसूल صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की ना फ़रमानी, एक कमज़ोर मुसलमान को तक्लीफ़ पहुंचाना, गाली दे कर, मार पीट कर के या माल छीन कर या उन सब का इर्तिकाब एक साथ करना जैसा कि अक्सर येही देखने में आता है। मुसलमान की आबरू रेज़ी करना। सोसाइटी में फ़साद फैलाने की कोशिश करना। इस लिये उस की सज़ा क़ियामत के दिन ज़ालिम का ज़ुल्म अन्धेरा ही अन्धेरा बन कर उसे घेर लेगा।[2] ज़ुल्म उस शख़्स पर किया जाता है जो उ़मूमन बदला लेने पर क़ादिर नहीं होता। जिन्हों ने दुनिया ही में तौबा कर के तक़्वा का नूर ह़ासिल कर लिया उन से ज़ुल्म के अन्धेरे ज़ाइल हो जाते हैं।[3]

ज़ुल्म का माना है : وَضْعُ الشَّیْءِ فِیْ غَیْرِ مَوْضِعِه किसी चीज़ को उस की जगह के इ़लावा कहीं और रखना।[4] जब कि शरीअ़त में ज़ुल्म से मुराद येह है कि किसी का ह़क़ मारना, किसी को ग़ैर मह़ल में ख़र्च करना, किसी को बग़ैर क़ुसूर के सज़ा देना।[5]

ज़ुल्म की जदीद सूरतें

मुख़्तलिफ़ अदवार में ज़ुल्म की मुख़्तलिफ़ सूरतें राइज रही हैं, आज के दौर में भी ज़ुल्म के मुख़्तलिफ़ अन्दाज़ अपनाए जाते हैं जिन पर शरई़ गिरिफ़्त होती है। ज़ैल में मौजूदा दौर की नुमायां सूरतों की झलक पेश की जा रही है :

1 घरेलू ज़ुल्म (Domestic Abuse) बीवी बच्चों पर जिस्मानी तशद्दुद करना या ज़ेहनी अज़िय्यत देना जैसे उन्हें ह़क़ीर क़रार देना ❁ बूढ़े वालिदैन की बेक़द्री करना ❁ छोटे बहन भाइयों को तक्लीफ़ देह ह़द तक झाड़ना। येह ज़ुल्म अक्सर घर की चार दीवारी में छुप जाता है, इस लिये इस की संगीनी मज़ीद बढ़ जाती है।

2 मआशी ज़ुल्म (Economic Exploitation)

❁ मज़दूर को पूरी उजरत न देना ❁ तै शुदा काम के इलावा और ज़ाइद काम लेना और उजरत न देना ❁ मज़दूर का काम कम करना और तनख़्वाह पूरी लेना ❁ सूदी निज़ाम के ज़रीए ज़रूरत मन्दों का इस्तिहसाल करना ❁ क्रप्शन और बद उन्वानी करना। ग़ुर्बत को बढ़ाने और तबक़ाती फ़र्क़ को गहरा करने में येह ज़ुल्म बुन्यादी किरदार अदा करता है।

3 मुआशरती ज़ुल्म (Social Injustice) ❁ ज़ात पात या नस्ल की बुनियाद पर मुख़्तलिफ़ मुआमलात में इम्तियाज़ बरतना ❁ हुक़ूक़ुल इबाद पामाल करना। येह ज़ुल्म इन्सान की इज़्ज़ते नफ़्स को मजरूह करता है और मुआशरे में नफ़रत को जन्म देता है।

4 डिजीटल दौर का ज़ुल्म सोशल मीडिया ने जहां सहूलत दी है, वहीं ज़ुल्म की नई राहें भी खोली हैं जैसे साइबर बुलिंग ❁ ओनलाइन हिरासां करना बिल ख़ुसूस ख़वातीन को ! ❁ झूटी ख़बरें फैला कर सोसाइटी में तश्वीश फैलाना ❁ ज़ाती मालूमात का ग़लत इस्तिमाल कर के लोगों को बदनाम करना वग़ैरा।

5 भिकारियों के ज़ुल्म फ़ी ज़माना भीक मंगवाने वाले एक माफ़िया की शक्ल इख़्तियार कर चुके हैं। चुनान्चे भिकारियों के ज़ुल्म की मुख़्तलिफ़ सूरतें राइज हैं।

कमसिन बच्चों को अग़वा कर के दूर दराज़ अलाक़ों में ले जाया जाता है जहां इन बच्चों को कोई पहचान न सके। दूसरी जानिब बच्चों के मां बाप सदमे से निढ़ाल तलाश कर रहे होते हैं। भिकारी उन बच्चों के हाथ पाउं वग़ैरा तोड़ कर भीक मांगने के लिये इस्तिमाल करते हैं। एक वक़्त आता है कि वोह बच्चे इतने बड़े हो जाते हैं कि वालिदैन भी उन को नहीं पहचान सकते। अब सोशल मीडिया यूज़र्ज़ जहां दुनिया जहान की अच्छी बुरी चीज़ें देखते हैं अगर येह मुस्बत काम कर दें कि ऐसे गुमशुदा बच्चे जहां नज़र आएं उन की पोस्ट बना कर टिक टोक, फ़ेसबुक और वोटसएप ग्रूपों में शेर कर दी तो दुखी वालिदैन को उन का बच्चा जल्दी मिल जाएगा। इस तरह की कई मिसालें भी मौजूद हैं कि गुमशुदा बच्चे अपने वालिदैन से मिल गए। येह सोशल मीडिया यूज़र्ज़ اِنْ شَآءَاللّٰه सवाब के हक़दार होंगे। ऐसे भिकारी भी अपने ज़ुल्म और दीगर गुनाहों से सच्ची तौबा कर लें तो क़ियामत के अन्धेरे से बच सकते हैं।

6 दवासाज़ कम्पनियों / लेब वालों के ज़ुल्म दवासाज़ कम्पनियां ग़रीब मरीज़ों पर ज़ुल्म के नए नए तरीक़े इख़्तियार करती हैं जिन में लालची डॉक्टर्ज़ बराबर के हिस्सेदार हैं। ग़ैर ज़रूरी और महंगी दवाएं लिखना, महंगे महंगे लेब टेस्ट करवाना और मरीज़ों से रक़म उड़ाने के लिये दीगर तरीक़े इस्तिमाल करना। हां ! ख़ौफ़े ख़ुदा रखने वाले डॉक्टरों की भी कमी नहीं, अल्लाह ऐसों की कसरत करे।

7 वकीलों के ज़ुल्म वुकला भी ज़ुल्म करने में किसी से पीछे नहीं। क़ानूनी पेचीदगियां बयान कर के ख़्वाह मख़्वाह केस लम्बा करना और तगड़ी फ़ीसें खरी करना, झूटी गवाहियां दिलवा कर फ़रीक़ मुख़ालिफ़ को परेशान करना। बहरहाल अच्छे वकीलों की भी कमी नहीं है लेकिन आटे में नमक के बराबर !

8 हक़ीक़ी मुस्तहिक़ीन का हक़ मारने वाले ज़ालिम ज़कात का झूटा मुस्तहिक़ बन कर अस्ल हक़दारों का हक़ मारना।

9 जानवरों पर ज़ुल्म क़ुरबानी के दिनों में बेज़बान जानवरों को तक्लीफ़ देने के कई मनाज़िर भी देखने में आते हैं मसलन (1) छोटी गाड़ी में बड़ा जानवर, या कम जगह में कई कई जानवर यूं धकेल दिये जाते हैं कि वोह थक जाने की सूरत में बैठ भी नहीं सकते। मन्डी में पहुंचने वाले जानवरों को गाड़ी से उतारने या चढ़ाने के लिये मुनासिब जगह का इन्तिज़ाम नहीं होता तो अपनी आसानी के लिये गाड़ी से छलांग लगवा दी जाती है जिस से कई जानवर ज़ख़्मी हो जाते हैं और क़ुरबानी के क़ाबिल भी नहीं रहते। (2) मन्डी में ख़र्चा बचाने के लिये भी बेज़बान जानवरों को भूका रखा जाता है, एक मरतबा किसी ने ऊंट ख़रीदा तो बेचने वाले ने उस के कान में कहा कि

येह कई दिन से भूका है इसे चारह खिला देना। (3) जब जानवर मन्डी से ख़रीद कर घर लाया जाता है तो उतारते वक़्त बच्चे और बड़े शोरो ग़ोग़ा कर के जानवर को परेशान करते और उस के उछलने कूदने से लुत्फ़ उठाते हैं। जिस से बाज़ औक़ात तो जानवर डर कर भाग जाता है, किसी को ज़ख़्मी कर देता है या गढ़े वग़ैरा में गिर कर अपनी टांग तुड़वा बैठता है। (4) ज़ब्ह शुदा जानवर के ठन्डा होने से पहले ही पाउं काटना या खाल उतारना शुरूअ़ कर देते हैं या बकरे की गर्दन चटख़ा देते हैं या तड़पते जानवर की गर्दन की खाल उधेड़ कर छुरी घोंप कर दिल की रगें काटते हैं और बिला वज्ह तक्लीफ़ पहुंचाते हैं।

जानवरों पर ज़ुल्म करने वाले सम्भल जाएं कि बरोज़े क़ियामत उस का हिसाब क्यूं कर दे सकेंगे ? बे ज़बान जानवरों को बिला वज्ह तक्लीफ़ देने वालों को डर जाना चाहिये कहीं मरने के बाद अ़ज़ाब के लिये येही जानवर मुसल्लत न कर दिया जाए। इमाम अह़मद बिन हजर मक्की शाफ़ेई رَحْمَةُ اللّٰهِ عَلَيْه फ़रमाते हैं : इन्सान ने नाहक़ किसी चौपाए को मारा या उसे भूका प्यासा रखा या उस से त़ाक़त से ज़ियादा काम लिया तो क़ियामत के दिन उस से उसी की मिस्ल बदला लिया जाएगा जो उस ने जानवर पर ज़ुल्म किया या उसे भूका रखा। इस पर दर्जे ज़ैल ह़दीसे पाक दलालत करती है। चुनान्चे रह़मते आ़लम, नूरे मुजस्सम صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने जहन्नम में एक औ़रत को इस हाल में देखा कि वोह लटकी हुई है और एक बिल्ली उस के चेहरे और सीने को नोच रही है और उसे वैसे ही अ़ज़ाब दे रही है जैसे उस (औ़रत) ने दुनिया में क़ैद कर के और भूका रख कर उसे तक्लीफ़ दी थी। इस रिवायत का हुक्म तमाम जानवरों के ह़क़ में आ़म है।[6]

अल्लाह पाक हमें इन्सानों और जानवरों दोनों पर ज़ुल्म करने से बचाए। اٰمِیْن بِجَاہِ خَاتَمِ النَّبِیّٖن صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم

---

(1)بخاری، 2/127، حدیث:2447(2)دیکھئے: نزہۃ القاری، 3/668 (3)دیکھئے: کشف المشکل، 2/560(4)التعریفات للجرجانی، ص102(5)مراٰۃ المناجیح، 6/669 (6)الزواجر عن اقتراف الکبائر، 2/174۔

क़ुरबानी के फ़ज़ाइल व मसाइल और दीगर मुफ़ीद मालूमात के लिये रिसाला “अब्लक़ घोड़े सुवार” का मुतालआ़ मुफ़ीद है।

ज़ुल्म के अन्जाम और मज़म्मत के ह़वाले से आयात, अह़ादीस और ह़िकायात पढ़ने के लिये रिसाला “ज़ुल्म का अन्जाम” डाउनलोड कीजिये।

(दूसरी और आख़िरी क़िस्त)

आख़िरी नबी मुहम्मदे अ़रबी صَلَّی اللہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم का अन्दाज़े तबस्सुम

3 तअ़ज्जुब व हैरत के वक़्त मुस्कुराहट बारगाहे रिसालत में अज़्वाजे मुतहहरात में से क़ुरैशी औ़रतें बैठी हुई थीं जो आप से महवे गुफ़्तगू थीं, ज़ियादा बख़्शिश का मुतालबा कर रही थीं और उन की आवाज़ें बुलन्द हो रही थीं। जब फ़ारूक़े आज़म رَضِیَ اللہُ عَنْہ ने इजाज़त मांगी तो वोह जल्दी से उठ कर पर्दे में चली गईं। रह़मते आ़लम صَلَّی اللہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने उन्हें अन्दर आने की इजाज़त दी, जब येह अन्दर दाख़िल हुए तो रसूले करीम صَلَّی اللہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم तबस्सुम फ़रमा रहे थे। येह अ़र्ज़ गुज़ार हुए : اَضْحَكَ اللّٰهُ سِنَّكَ يَا رَسُوْلَ اللّٰهِ यानी या रसूलल्लाह ! अल्लाह आप को मुस्कुराता रखे (क्या बात है ?) आप ने फ़रमाया : मुझे इन औ़रतों पर तअ़ज्जुब है जो मेरे पास ह़ाज़िर थीं कि उन्हों ने जब तुम्हारी आवाज़ सुनी तो जल्दी से उठ कर पर्दे में चली गईं। अ़र्ज़ गुज़ार हुए : या रसूलल्लाह ! आप इस के ज़ियादा ह़क़दार हैं कि वोह आप से डरतीं। फिर फ़ारूक़े आज़म رَضِیَ اللہُ عَنْہ ने उन की जानिब मुतवज्जेह हो कर कहा : तुम मुझ से डरती हो लेकिन रसूलुल्लाह صَلَّی اللہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم से नहीं डरतीं ? उन्हों ने कहा : हां, आप रसूलुल्लाह صَلَّی اللہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की त़रह नहीं बल्कि ग़ुस्से वाले और सख़्त गीर हैं। हुज़ूरे पाक صَلَّی اللہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : क़सम है उस ज़ात की जिस के क़ब्ज़ए क़ुदरत में मेरी जान है, शैतान तुम्हें किसी रास्ते पर चलता हुवा देखता है तो वोह तुम्हारे रास्ते को छोड़ कर दूसरा रास्ता इख़्तियार कर लेता है।[(1)]

4 ह़ाज़िर जवाबी पर मुस्कुराहट 1 अल्लाह के आख़िरी नबी صَلَّی اللہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने एक दिन देहाती की मौजूदगी में येह गुफ़्तगू फ़रमाई : एक जन्नती अपने रब से खेती बाड़ी की इजाज़त मांगेगा तो अल्लाह पाक फ़रमाएगा : क्या तुझे वोह नहीं मिला जो तू ने चाहा (यानी जो नेमतें तुझे मिली हैं क्या तू उन से राज़ी नहीं ?) वोह अ़र्ज़ करेगा : हां बिल्कुल हूं मगर मैं खेती करना चाहता हूं। (उस की ख़्वाहिश पर उसे बीज दिये जाएंगे) चुनान्चे वोह बीज बोएगा तो उस का उगना, सीधा होना और कटाई के क़ाबिल होना पलक झपकने से पहले हो जाएगा और वोह मिक़्दार में पहाड़ों के बराबर होगा। तब अल्लाह पाक फ़रमाएगा : ऐ इब्ने आदम ! कोई चीज़ तेरा पेट नहीं भरती। येह सुन कर वोह देहाती बोल पड़ा : रब की क़सम ! ऐसा आदमी आप क़ुरैशी या अन्सारी ही को पाएंगे कि वोह लोग खेती बाड़ी वाले हैं, रहे हम (देहाती), हम तो खेती वाले हैं ही नहीं (बल्कि हम उ़मूमन जानवर पाल कर अपना गुज़र बसर करते हैं) रसूलुल्लाह صَلَّی اللہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم उस की ह़ाज़िर जवाबी पर मुस्कुरा दिये।[(2)]

2 ह़ज़रते सुहैब रूमी رَضِیَ اللہُ عَنْہ की आंख दुख रही थी और

वोह खजूर खा रहे थे, रसूले अकरम صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : तुम्हारी आंख दुख रही है और तुम खजूर खा रहे हो ? अ़र्ज़ की : मैं दूसरी त़रफ़ से खा रहा हूं । येह सुन कर आख़िरी नबी صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم मुस्कुरा दिये।[3]

5 फ़ैसला तब्दील करने पर मुस्कुराहट जब रसूलुल्लाह صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने त़ाइफ़ का मुहासरा किया और फ़ायदा कुछ हासिल न हुवा तो फ़रमाया : اِنْ شَآءَ اللّٰهُ تَعَالٰی हम कल वापस लौट जाएंगे। लोगों पर येह बात शाक़ गुज़री और कहने लगे : फ़त्ह किये बग़ैर हम चले जाएंगे ? कभी कहते : हम नाकाम लौट जाएंगे। फ़रमाया कल हम फिर लड़ेंगे। चुनान्चे अगले रोज़ उन्हों ने जिहाद किया और बहुत से अफ़राद ज़ख़्मी हो गए। आप ने फिर फ़रमाया : कल اِنْ شَآءَ اللّٰهُ تَعَالٰی हम यहां से वापस लौट जाएंगे। अब इन लोगों को येह बात बहुत भली मालूम हुई तो नबिय्ये करीम صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم मुस्कुरा दिये।[4]

6 मुश्किल को आसान करने के लिये मुस्कुराहट

अल्लाह के आख़िरी नबी صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की बारगाह में एक शख़्स ह़ाज़िर हुवा और अ़र्ज़ की : या रसूलल्लाह ! मैं ने इस त़रह का ख़्वाब देखा कि मेरा सर काट दिया गया है। तो इस की बात सुन कर सय्यिदे आ़लम صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم मुस्कुरा दिये और फ़रमाया : जब तुम में से किसी के ख़्वाब में शैत़ान आ कर खेल करे तो वोह लोगों को मत बताए।[5]

अपने बन्दों की मदद फ़रमाइये
प्यारे हामी मुस्कुराते आइये[6]

7 अल्लाह की क़ुदरत के इक़रार पर मुस्कुराहट

रसूले अकरम صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने एक मौक़अ़ पर क़ियामत के दिन जन्नतियों की मेहमान नवाज़ी के लिये ज़मीन की रोटी बन जाने का ज़िक्र फ़रमाया तो इस मौक़अ़ पर एक यहूदी आ़लिम ने अ़र्ज़ की : ऐ अबुल क़ासिम ! रह़मान आप पर बरकत नाज़िल करे, क्या मैं आप को बरोज़े क़ियामत जन्नतियों की मेहमान नवाज़ी के बारे में बताऊं ? फ़रमाया : हां। फिर उस ने बात की तस्दीक़ करते हुए अ़र्ज़ की : ज़मीन एक रोटी जैसी हो जाएगी जैसे नबी صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया। येह सुन कर आप मुस्कुरा दिये। वोह फिर बोला : क्या मैं आप को उन के सालन के बारे में बताऊं ? बालाम और मछली। सह़ाबए किराम ने कहा : वोह क्या चीज़ है ? यहूदी आ़लिम ने जवाब दिया : बैल और मछली कि इन दोनों की कलेजी के टुकड़े से सत्तर हज़ार खाएंगे।[7]

8 ताईदी मुस्कुराहट ह़ज़रते अ़ब्दुल्लाह बिन मग़फ़ल رَضِیَ اللّٰهُ عَنْه फ़रमाते हैं : ख़ैबर के दिन मुझे चर्बी का एक थैला मिला तो मैं उस से लिपट गया मैं ने कहा : आज मैं इस में से किसी को कुछ न दूंगा । फिर मैं ने इधर उधर देखा तो अल्लाह के रसूल صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم (मुझे देख कर) मुस्कुरा रहे थे।[8] यानी ह़ुज़ूरे अन्वर ने मुझे इस इरादे से और उस क़ब्ज़े से रोका नहीं बल्कि तबस्सुम फ़रमाया जिस से इजाज़त मालूम हुई क्यूंकि किसी अ़मल को देख कर मना न फ़रमाना इजाज़त की अ़लामत है।[9]

इक बार मुस्कुरा के मुझे देख लीजिये
दम तोड़ दूंगा क़दमों में वारफ़्तगी के साथ[10]

9 तक्लीफ़ देह रवय्ये के बावुजूद मुस्कुराहट एक मरतबा रसूले अकरम صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के ऊपर एक नजरानी चादर थी जिस के किनारे मोटे थे, एक देहाती ने बत़ौरे इम्दाद माल मांगने के लिये चादर मुबारक पकड़ कर बड़े ज़ोर से खींची यहां तक कि मुबारक कन्धे पर रगड़ का निशान बन गया। साथ ही आराबी ने बड़े सख़्त जुम्ले भी बोले। रह़मते आ़लम صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने जवाबन सिर्फ़ इतना फ़रमाया : माल तो अल्लाह पाक का ही है और मैं तो उस का बन्दा हूं। फिर इरशाद फ़रमाया : ऐ आराबी ! क्या तुम से इस सुलूक का बदला लिया जाए जो तुम ने मेरे साथ किया है ? उस ने कहा : नहीं। फ़रमाया : क्यूं नहीं ? आराबी ने जवाब दिया : क्यूंकि आप की येह आ़दते करीमा ही नहीं कि आप बुराई का बदला बुराई से दें। उस की येह बात सुन कर रसूले अकरम صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم मुस्कुरा दिये और इरशाद फ़रमाया : इस के एक ऊंट को जौ से और दूसरे को खजूर

से भर दो।[11]

ख़ज़ां का सख़्त पहरा है ग़मों का घुप अन्धेरा है
ज़रा सा मुस्कुरा दोगे तो दिल में रौशनी होगी[12]

10 इल्म का इश्तियाक़ पैदा करने के लिये मुस्कुराहट

रसूले अकरम صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने एक मौक़अ पर तबस्सुम फ़रमाते हुए इरशाद फ़रमाया : "क्या तुम जानते हो कि मैं किस वज्ह से मुस्कुराया ? अ़र्ज़ की गई : अल्लाह और उस का रसूल صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ही बेहतर जानते हैं। तो आप ने फ़रमाया : बन्दे के अपने परवरदिगार से कलाम करने की वज्ह से मुस्कुरा रहा हूं कि वोह कहेगा : "ऐ मेरे परवरदिगार ! क्या तू ने मुझे ज़ुल्म से पनाह नहीं दी।" अल्लाह इरशाद फ़रमाएगा : "क्यूं नहीं।" वोह अ़र्ज़ करेगा : "आज के दिन में अपने ख़िलाफ़ अपने सिवा किसी और की गवाही क़बूल नहीं करूंगा।" तो अल्लाह इरशाद फ़रमाएगा : "आज तू ख़ुद और किरामन कातिबीन तेरे ख़िलाफ़ बतौरे गवाह काफ़ी हैं।" आप फ़रमाते हैं : फिर उस के मुंह पर मोहर लगा दी जाएगी और उस के आज़ा से कहा जाएगा : "बोलो।" तो उस के आज़ा उस के आमाल के मुतअ़ल्लिक़ बोलने लग जाएंगे, फिर अल्लाह उस के और उस के कलाम के दरमियान तन्हाई पैदा करेगा तो वोह अपने आज़ा से कहेगा : दूर हो जाओ, दफ़ा हो जाओ, मैं तुम्हारा ही तो दिफ़ाअ़ कर रहा था।"[13]

अल्लाह करीम अपने प्यारे महबूब صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के सदक़े मुस्कुराहट लबों पर सजाए रखने की तौफ़ीक़ अ़ता फ़रमाए।

اٰمِیْن بِجَاہِ خَاتَمِ النَّبِیّٖن صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم

---

(1)بخاری،2/403،حدیث:3294 (2)بخاری،2/93،حدیث:2348 (3)ابن ماجہ،4/91،حدیث:3443 (4)بخاری،3/115،حدیث:4325 (5)مسلم،ص959،حدیث:5927 (6)ذوقِ نعت،ص295 (7)بخاری،4/252،حدیث:6520 (8)بخاری،2/360،حدیث:3153، مسلم،ص755،حدیث:4605 واللفظ لہ (9)مراٰۃ المناجیح،5/580 (10)وسائل بخشش،ص211 (11)بخاری،4/53،حدیث:5809،الشفاء،1/108 (12)وسائل بخشش،ص391 (13)مسلم،ص1214،حدیث:7439۔

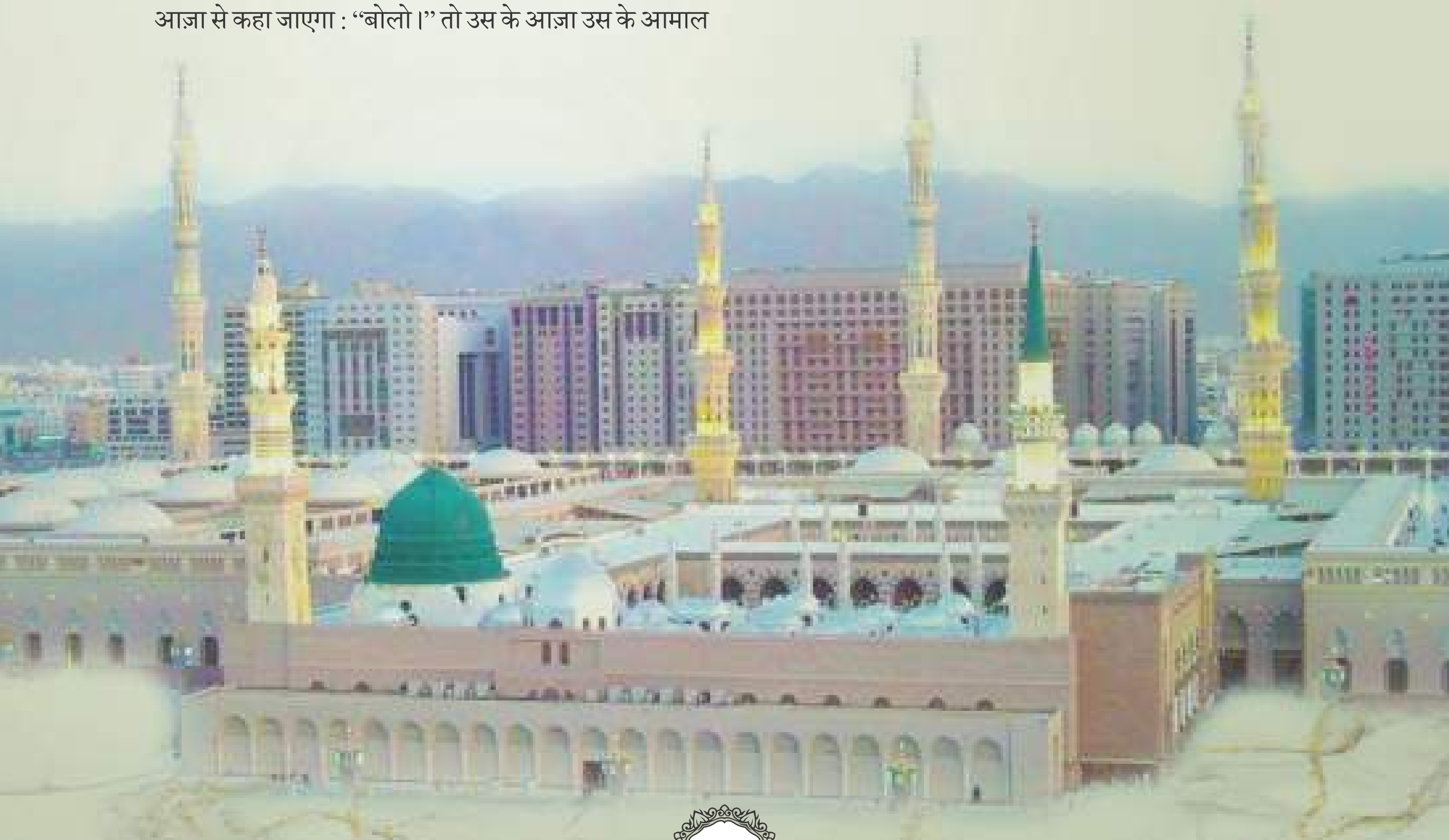

मदनी मुज़ाकरे के सुवाल जवाब

शैख़े त़रीक़त, अमीरे अहले सुन्नत, ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना अबू बिलाल मुह़म्मद इल्यास अ़त्तार क़ादिरी रज़वी دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه मदनी मुज़ाकरों में अ़क़ाइद, इ़बादात और मुआ़मलात के मुतअ़ल्लिक़ किये जाने वाले सुवालात के जवाबात अ़ता फ़रमाते हैं, उन में से 9 सुवालात व जवाबात काफ़ी तरमीम के साथ यहां दर्ज किये जा रहे हैं।

1 क्या फ़रिश्ते सोते हैं ?

सुवाल : क्या फ़रिश्तों को भी हमारी त़रह़ नींद आती है ?

जवाब : जी नहीं, फ़रिश्तों को न ऊंघ आती है न नींद और न वोह कुछ खाते पीते हैं। (मदनी मुज़ाकरा, 16 रमज़ानुल मुबारक 1441 हि.)

2 "ह़त़ीम" ख़ानए काबा में दाख़िल है

सुवाल : क्या ह़त़ीम(1) काबा शरीफ़ में दाख़िल है ?

जवाब : जी हां ! ह़त़ीमे काबा भी काबा शरीफ़ में दाख़िल है। दौराने त़वाफ़ उस में से नहीं गुज़र सकते।

(देखिये : मदनी मुज़ाकरा, 15 शव्वालुल मुकर्रम 1441 हि.)

3 हालते एह़राम में नारियल का तेल लगाना कैसा ?

सुवाल : क्या एह़राम की ह़ालत में सर या चेहरे पर नारियल का तेल लगा सकते हैं ?

जवाब : लगा सकते हैं। अलबत्ता तिल और ज़ैतून का तेल ख़ुश्बू के हुक्म में है अगर्चे उन में ख़ुश्बू न हो, येह जिस्म पर नहीं लगा सकते। हां ! उन के खाने, नाक में चढ़ाने, ज़ख़्म पर लगाने या कान में टपकाने में कफ़्फ़ारा लाज़िम नहीं। लिहाज़ा ह़ालते एह़राम में नारियल का तेल लगाना जाइज़ है मगर तिल और ज़ैतून का तेल सर में नहीं डाल सकते। (मदनी मुज़ाकरा, 26 शव्वालुल मुकर्रम 1440 हि.)

4 मुर्ग़ी पानी में चोंच डाल दे तो...

सुवाल : अगर मुर्ग़ी पतीली में रखे पानी में चोंच डाल दे तो क्या पानी नापाक हो जाएगा ?

जवाब : जी नहीं ! अलबत्ता अगर मुर्ग़ी ने नजासत में चोंच डाली और नजासत उस की चोंच पर लग गई, फिर उस ने चोंच पतीली में रखे पानी में डाली तो अब पानी नापाक हो जाएगा।

(मदनी मुज़ाकरा, 8 मुह़र्रमुल ह़राम शरीफ़ 1441 हि.)

5 शावर के ज़रीए ग़ुस्ल करना

सुवाल : शावर या बरसती बारिश के ज़रीए ग़ुस्ल करना कैसा है ?

जवाब : शावर के ज़रीए ग़ुस्ल करना जाइज़ है येह बहते पानी के हुक्म में है। इस में ग़ुस्ल करने वाला शावर के नीचे इतनी देर खड़ा रहे जितनी देर में बदन पर तीन बार पानी बह जाता है इस त़रह़ तीन बार की सुन्नत अदा हो जाएगी। इस के इ़लावा जो फ़राइज़ हैं मसलन कुल्ली करना और नाक में पानी चढ़ाना उन को भी पूरा करना होगा। अगर कोई शख़्स बारिश में खड़ा हो गया तो फ़राइज़ मुकम्मल होने की सूरत में ग़ुस्ल हो जाएगा।

(मदनी मुज़ाकरा, 6 मुह़र्रमुल ह़राम 1442 हि.)

(1) ह़त़ीम : काबए मुअ़ज़्ज़मा की शुमाली दीवार के पास निस्फ़ (यानी आधे) दायरे की शक्ल में फ़सील (यानी बाउंड्री) के अन्दर का ह़िस्सा। उस में दाख़िल होना ऐ़न काबतुल्लाह शरीफ़ में दाख़िल होना है। (रफ़ीक़ुल ह़रमैन, स. 61)

6 मुर्ग़ी का मग़्ज़ खाना

सुवाल : क्या मुर्ग़ी का मग़्ज़ खाने से औलाद नहीं होती ?

जवाब : येह महज़ अफ़वाह है। मैं ने बारहा मुर्ग़ी का मग़्ज़ खाया है और اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ الْكَرِيْم "परनाना" बन गया हूं ! उ़मूमन लोग मुर्ग़ी का सर वग़ैरा फेंक देते हैं, लेकिन हम लोग चूंकि ग़रीब थे, लिहाज़ा मैं ख़ुद मुर्ग़ी के सर और गर्दन वग़ैरा ख़रीद कर लाता था। मुर्ग़ी के दीगर गोश्त के मुक़ाबले में गर्दन का गोश्त ज़ियादा लज़ीज़ होता है, मैं ने येह चीज़ें बहुत खाई हैं, अब भी आए तो खा लेता हूं। पहले देसी मुर्ग़ियां ही होती थीं, फ़ारमी मुर्ग़ी का तसव्वुर भी नहीं था, नीज़ पहले मुर्ग़ी की ज़ाइद चीज़ें मसलन सर, गर्दन, कलेजी वग़ैरा होटलों में भी नहीं बिकती थीं, न उन्हें कोई पूछता था, मगर अब तो सुपर मार्केटों में उन चीज़ों के अलग अलग पैकेट बना कर सजाए होते हैं, पांव यानी लेग पीस का अलग पैकेट, गर्दनों, कलेजी का अलग, जिस को जो पसन्द हो वोह ख़रीद ले। (मदनी मुज़ाकरा, 4 मुहर्रमुल हराम शरीफ़ 1442 हि.)

7 घर वग़ैरा में मर्हूमीन की तसावीर लगाना कैसा ?

सुवाल : कुछ लोग अपनी दुकान, ओफ़िस और घर में मर्हूम वालिदैन की तसावीर लगाते हैं क्या उन का ऐसा करना दुरुस्त है ?

जवाब : जानदार बल्कि मां बाप वग़ैरा की तस्वीर भी दीवार वग़ैरा पर आवेज़ां करना गुनाह है ऐसी तसवीर घर में लगाने से रह़मत के फ़रिश्ते नहीं आते। (دیکھئے: بخاری، 3/19، حدیث: 4002) अलबत्ता स्क्रीन पर नज़र आने वाली तसवीर जिसे Digital photo कहते हैं येह तसवीर शुआ़ई होती है इस में कोई ह़रज नहीं है। हां इस का प्रिंट आउट करना जाइज़ नहीं। (मदनी मुज़ाकरा, यकुम रबीउ़ल आख़िर 1442 हि.)

8 "अल्लाह पाक की दुआ़ से येह काम हो गया" कहना कैसा ?

सुवाल : "अल्लाह पाक की दुआ़ से येह काम हो गया" कहना कैसा है ?

जवाब : "अल्लाह पाक की दुआ़ से सब ठीक है" वग़ैरा जुमले लोग इ़ल्म की कमी की वज्ह से बोल रहे होते हैं, इस त़रह नहीं कहना चाहिये। हम अल्लाह पाक की बारगाह में दुआ़ करते हैं अल्लाह पाक किसी से दुआ़ नहीं करता, अल्लाह पाक की ज़ात सब से बड़ी है और सब को वोही देने वाला है। लोग आपस में एक दूसरे को भी कहते हैं कि आप की दुआ़ से सब ठीक है, आप की दुआ़ से फ़ुलां काम हो गया येह जुम्ले तो कह सकते हैं लेकिन येह कहना दुरुस्त नहीं कि "अल्लाह पाक की दुआ़ से येह काम हो गया"।

(मदनी मुज़ाकरा, 4 रबीउ़ल अव्वल शरीफ़ 1442 हि.)

9 शौहर का बुर्क़अ़ पहनने से मना करना कैसा ?

सुवाल : शौहर अगर बुर्क़अ़ पहनने से मना करे तो क्या किया जाए ?

जवाब : इस्लामी पर्दा करने के लिये बुर्क़अ़ शर्त़ नहीं, चादर वग़ैरा से भी पर्दा हो सकता है, अगर शौहर चादर से मना नहीं करता तो चादर से पर्दा करे। अलबत्ता ! मर्दों को चाहिये कि पर्दा करने से मना न करें, बल्कि अगर औ़रतें पर्दा नहीं करतीं तो उन्हें ग़ैर मर्दों से पर्दा करने के बारे में समझाएं और बेपर्दा घर से निकलने से रोकें, वोह मर्द गुनहगार है जो अपनी बीवी को बेपर्दा गलियों बाज़ारों में घूमने फिरने की छूट देता है। अकबर इलाहाबादी ने दिल जली बात कही :

बे पर्दा कल जो आईं नज़र चन्द बीबियां
अकबर ज़मीं में ग़ैरते क़ौमी से गड़ गया
पूछा जो उन से आप के पर्दे का क्या हुवा
कहने लगीं वोह अ़क़्ल पे मर्दों की पड़ गया

यानी मर्द की अ़क़्ल पर पर्दा पड़ गया है कि उस ने पर्दा करने पर पाबन्दी लगा दी, जिन मर्दों की अ़क़्ल पर पर्दा नहीं वोह अपनी बीवी को इसरार कर के पर्दा करवाते हैं, लिहाज़ा क़ुरआने करीम के अह़काम नाफ़िज़ करने वाला बनना चाहिये न कि उसे रोकने वाला, मुसलमान का काम क़ुरआनो ह़दीस पर अ़मल करना और दूसरों को अ़मल की तल्क़ीन करना है, न कि किसी को उस पर अ़मल करने से रोकना। (मदनी मुज़ाकरा, 11 रबीउ़ल अव्वल शरीफ़ 1442 हि.)

दारुल इफ़्ता अहले सुन्नत

दारुल इफ़्ता अहले सुन्नत (दावते इस्लामी) मुसलमानों की शरई़ राहनुमाई में मसरूफ़े अ़मल है, तह़रीरी, ज़बानी, फ़ोन और दीगर ज़राएअ़ से मुल्क से हज़ारहा मुसलमान शरई़ मसाइल दरयाफ़्त करते हैं, जिन में से चार मुन्तख़ब फ़तावा ज़ैल में दर्ज किये जा रहे हैं।

1 इन्आ़मी स्कीम और जूए की शरई़ ह़ैसिय्यत

सुवाल : क्या फ़रमाते हैं उ़लमाए किराम इस मस्अले के बारे में कि ज़ैद की मोबाइल की दुकान है वोह हर महीने एक क़ीमती टच मोबाइल की क़ुरआ़ अन्दाज़ी करता है जिस का त़रीक़ए कार येह है कि ज़ैद ने सौ रुपिये एन्ट्री फ़ीस रखी हुई है जो शख़्स उस को सौ रुपिये देता जाता है उस का नाम क़ुरआ़ अन्दाज़ी की लिस्ट में शामिल कर देता है इस त़रह सैंकड़ों के ह़िसाब से अफ़राद उस के पास आते हैं फिर जिन का नाम क़ुरआ़ अन्दाज़ी की लिस्ट में शामिल होता है महीने के आख़िर में उन के नाम की परचियां बना कर उस से पर्ची उठाता है जिस का नाम क़ुरआ़ अन्दाज़ी में निकलता है उस को टच मोबाइल दे देता है और बक़िय्या की रक़म अपने पास रख लेता है। रहनुमाई फ़रमाएं कि क्या येह क़ुरआ़ अन्दाज़ी शरअ़न दुरुस्त है ?

بِسْمِ اللّٰہِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِیْمِ

اَلْجَوَابُ بِعَوْنِ الْمَلِکِ الْوَھَّابِ اَللّٰھُمَّ ھِدَایَۃَ الْحَقِّ وَالصَّوَابِ

पूछी गई सूरत में ज़ैद का मज़कूरा त़रीक़े के साथ मोबाइल की क़ुरआ़ अन्दाज़ी करना नाजाइज़ व ह़राम और जहन्नम में ले जाने वाला काम है, क्यूंकि मज़कूरा इन्आ़मी त़रीक़ए कार जुआ है और जूए की मज़म्मत क़ुरआनो ह़दीस में बयान की गई है, क़ुरआने करीम में उसे शैत़ानी अ़मल क़रार दिया गया है।

उस के जुआ होने की तफ़्सील यूं है कि जिस का नाम निकला उस को तो मोबाइल फ़ोन मिलेगा, और जिन का नाम नहीं निकलेगा उन के सौ रुपिये ज़ाएअ़ हो जाएंगे। तो येह अपना माल ख़त़रे पर पेश करना है कि या तो ज़ियादा माल मिलेगा या अपना माल भी चला जाएगा, और येही जुआ है। लिहाज़ा इस नाजाइज़ व ह़राम काम में शामिल तमाम अफ़राद पर येह काम छोड़ने के साथ साथ अपने इस फ़ेल से सच्ची तौबा करना और आइन्दा इस बुरे काम से बाज़ रहना भी ज़रूरी है। नीज़ इस त़रीक़े से ह़ासिल शुदा मोबाइल और पैसों वग़ैरा का हुक्म येह है कि वोह इन के मालिकान को वापस किये जाएं या जैसे बने उन से मुआ़फ़ करवा लिये जाएं, वोह न हों तो उन के वारिसों को वापस किये जाएं। और जिन लोगों का पता किसी त़रह न चले न उन का न उन के वुरसा का तो उन लोगों का माल उन की त़रफ़ से ख़ैरात कर दे।

وَاللّٰہُ اَعْلَمُ عَزَّوَجَلَّ وَ رَسُوْلُہٗ اَعْلَم صلَّی اللہ علیہ واٰلہٖ وسلَّم

2 जमाअ़त फ़ौत होने के अन्देशे में सुन्नतों की तक्मील का मस्अला

सुवाल : क्या फ़रमाते हैं उ़लमाए किराम इस मस्अले के बारे में कि सुन्नते मोअक्कदा की एक रक्अ़त पढ़ी और ख़दशा है कि अगर दूसरी रक्अ़त मिलाएंगे तो इमाम सलाम फेर देगा, अब क्या हुक्म है ?

بِسْمِ اللّٰہِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِیْمِ

اَلْجَوَابُ بِعَوْنِ الْمَلِکِ الْوَھَّابِ اَللّٰھُمَّ ھِدَایَۃَ الْحَقِّ وَالصَّوَابِ

अगर कोई शख़्स नफ़्ल, सुन्नते मोअक्कदा या सुन्नते ग़ैर मुअक्कदा शुरूअ़ कर चुका था, तो उस के लिये ज़रूरी है कि दो रक्अ़त मुकम्मल किये बग़ैर सलाम न फेरे, एक रक्अ़त पर सलाम फेर देना जाइज़ नहीं, अगर्चे जमाअ़त में इमाम के सलाम फेर देने का

ख़ौफ़ हो, कि येह तक्मील के लिये नहीं बल्कि इब्ताल के लिये नमाज़ तोड़ना होगा जो कि नाजाइज़ है, अलबत्ता अगर चार रक्अ़त वाली सुन्नते मोअक्कदा जैसे ज़ोहर की सुन्नते क़ब्लिया शुरूअ़ कर चुका था, और फ़र्ज़ों की जमाअ़त खड़ी हो गई, तो अब दो रक्अ़त पढ़ कर सलाम फेर दे या चार मुकम्मल करे ? इस में इख़्तिलाफ़ है। एक क़ौल येह है कि दो रक्अ़त पर सलाम फेर दे।

दूसरा क़ौल येह है कि चार रक्अ़त पूरी करे क्यूंकि इन सुन्नतों की तमाम रक्अ़तें नमाज़े वाहिद की त़रह हैं । मज़कूरा बाला दोनों अक़्वाल में से हर त़रफ़ निहायत क़ुव्वत और तसह़ीह़ मौजूद है, दोनों अक़्वाल में से जिस पर इन्सान अ़मल करे, तो कोई एतिराज़ नहीं है, लेकिन राजेह़, दूसरा क़ौल ही है और सय्यिदी आला ह़ज़रत عَلَيْهِ الرَّحْمَة ने भी इसी त़रफ़ मैलान ज़ाहिर फ़रमाया।

وَاللّٰهُ اَعْلَمُ عَزَّوَجَلَّ وَرَسُوْلُهٗ اَعْلَم صلَّی اللہ علیہ واٰلہٖ وسلَّم

3 मुतअ़द्दिद कपड़ों पर नजासते ग़लीज़ा का मजमूई हुक्म

सुवाल : क्या फ़रमाते हैं उ़लमाए किराम इस मस्अले के बारे में कि येह मस्अला शरइय्या है कि "कपड़े पर चन्द जगह नजासते ग़लीज़ा लगी और किसी जगह दिरहम के बराबर नहीं मगर मजमूआ़ दिरहम के बराबर है, तो दिरहम के बराबर समझी जाएगी और ज़ाइद है तो ज़ाइद" । अब इस में येह पूछना है कि अगर नजासत एक से ज़ाइद कपड़ों में लगी हो मसलन कुछ क़मीस पर लगी हो और थोड़ी सी शल्वार पर, और दोनों जगह दिरहम से कम हो लेकिन मजमूआ़ दिरहम से ज़ाइद हो तो क्या येह भी मानेए नमाज़ होगी यानी क़मीस व शल्वार दोनों की नजासत मजमूअ़न मानेअ़ कहलाएगी या अलग अलग कपड़े का एतिबार किया जाएगा ?

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

اَلْجَوَابُ بِعَوْنِ الْمَلِكِ الْوَهَّابِ اَللّٰهُمَّ هِدَايَةَ الْحَقِّ وَالصَّوَابِ

क़वानीने शरइय्या की रू से नमाज़ी के बदन पर मौजूद एक से ज़ाइद कपड़ों पर मुतफ़र्रिक़ नजासत लगी हो तो मानेअ़ मिक़्दार शुमार करने में मुस्तक़िल त़ौर पर अलग अलग कपड़े का एतिबार नहीं होगा बल्कि तमाम कपड़ों की मजमूई नजासत का एतिबार होगा, लिहाज़ा अगर क़मीस और शल्वार पर थोड़ी थोड़ी नजासते ग़लीज़ा लगी हो और दोनों में एक दिरहम के बराबर न हो लेकिन जमा करने की सूरत में दिरहम से ज़ाइद हो जाए तो मजमूअ़न दिरहम से ज़ाइद ही समझी जाएगी और जवाज़े नमाज़ से मानेअ़ होगी, यूंही नजासते ख़फ़ीफ़ा का मुआ़मला है।

وَاللّٰهُ اَعْلَمُ عَزَّوَجَلَّ وَرَسُوْلُهٗ اَعْلَم صلَّی اللہ علیہ واٰلہٖ وسلَّم

4 तल्बिया छोड़ने की सूरत में उ़मरा का शरई हुक्म

सुवाल : क्या फ़रमाते हैं उ़लमाए किराम इस मस्अले के बारे में कि मैं पहले उ़मरा करने के बाद मक्का में ही कुछ दिन ठहर गया फिर मैं ने दूसरा उ़मरा करने के लिये मस्जिदे आ़इशा से जा कर एह़राम बांधा और वहीं दो रक्अ़त नफ़्ल अदा कर के येह निय्यत की "ऐ अल्लाह ! मैं उ़मरे की निय्यत करता हूं, मेरे लिये इसे आसान बना और क़बूल फ़रमा" । लेकिन चूंकि टैक्सी ड्राईवर बार बार मुझे जल्दी करने का कह रहा था जिस की वज्ह से मैं तल्बिया पढ़ना भूल गया जब हम ह़रम में वापस पहुंच गए तो मुझे याद आया कि मैं ने तल्बिया नहीं पढ़ी थी लिहाज़ा मैं ने वहीं तल्बिया पढ़ कर उ़मरा कर लिया, क्या इस सूरत में मुझ पर कोई कफ़्फ़ारा लाज़िम होगा ?

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

اَلْجَوَابُ بِعَوْنِ الْمَلِكِ الْوَهَّابِ اَللّٰهُمَّ هِدَايَةَ الْحَقِّ وَالصَّوَابِ

जब आप ने एक उ़मरा कर लिया तो अब आप मक्की के हुक्म में हो गए और मक्की उ़मरा करना चाहे तो उस पर लाज़िम है कि वोह ह़रम से बाहर जा कर उ़मरा का एह़राम बांध कर आए और उ़मरा के एह़राम के लिये उ़मरे की निय्यत और उस के साथ तल्बिया या इस के क़ाइम मक़ाम अल्फ़ाज़ कहना ज़रूरी हैं बग़ैर इस के एह़राम में दाख़िल नहीं होगा लिहाज़ा दरयाफ़्त कर्दा सूरत में अगर आप ने ह़ुदूदे ह़रम में आने से पहले तल्बिया के क़ाइम मक़ाम कोई लफ़्ज़ जैसे "سُبْحٰنَ اللّٰه. اَلْحَمْدُ لِلّٰه या لَا اِلٰهَ اِلَّا اللّٰه" वग़ैरा कह लिये थे तो आप ह़ालते एह़राम में दाख़िल हो गए और उ़मरा दुरुस्त हो गया लेकिन अगर बैरूने ह़रम तल्बिया भी नहीं कहा और इस के क़ाइम मक़ाम अल्फ़ाज़ भी नहीं कहे और ह़रम में आ कर इस निय्यत से तल्बिया या क़ाइम मक़ाम ज़िक्र किया तो इस सूरत में ह़रम के अन्दर एह़राम बांधना पाया गया जिस की वज्ह से आप पर दम लाज़िम हो गया ऐसी सूरत में हुक्म येह होता है कि बैरूने ह़रम जा कर वहां से दोबारा तल्बिया पढ़ कर आए तो उस पर जो दम लाज़िम हो चुका वोह साक़ित हो जाएगा और अगर बैरूने ह़रम जाने से पहले उ़मरा शुरूअ़ कर ले तो अब मोअक्कद व मुतअ़य्यन हो जाता है लिहाज़ा जब आप ने ह़रम के अन्दर ही तल्बिया पढ़ कर उ़मरा कर लिया तो आप पर एक दम और उस गुनाह से तौबा करना भी लाज़िम होगी।

وَاللّٰهُ اَعْلَمُ عَزَّوَجَلَّ وَرَسُوْلُهٗ اَعْلَم صلَّی اللہ علیہ واٰلہٖ وسلَّم

अस्लाफ़ के क़लम से

बे दीनी की अय्यारियां

पर्दा शरीअ़ते इस्लामिया का बहुत बड़ा एह़सान है। शरीअ़त का मक़्सद येह है कि दुनिया में नेक चलनी और पाक बाज़ी को रिवाज दिया जाए और नफ़्स को बहमी व शैत़ानी ख़साइल से बचाया जाए। पाकीज़ा अख़्लाक़ और पसन्दीदा जज़्बात से उस को ज़ीनत दी जाए। उस के लिये ज़रूरी है कि बदियों और गुनाहों का क़ुव्वत के साथ सद्दे बाब किया जाए और वोह अस्बाब जो गुनाहों के बाइ़स होते हैं और नफ़्स को हैजान में लाते हैं, उस का इस्तीसाल कर दिया जाए। दर ह़क़ीक़त जब कोई शख़्स किसी चीज़ को रोकना चाहे तो उस पर लाज़िम है कि उस के दवाई़ और मोह़र्रिकात को क़त़्अ़ कर दे। मौसमी अमराज़ और वबाओं से बचने के लिये पहले से सफ़ाई का एहतिमाम और ह़िफ़्ज़ मातक़द्दुम की तदाबीर इसी उसूल के मातह़त की जाती हैं जिन से नुक़्स अम्न या फ़साद का अन्देशा हो। ऐसे मजामेअ़ को ख़िलाफ़े क़ानून इसी लिये क़रार दिया जाता है। मोर्चों पर ह़र्बी सामान हर वक़्त इसी मक़्सद के लिये तय्यार रखा जाता है। अहम मक़ामात पर छाउनियां इसी ग़रज़ से डाली जाती हैं। हर मकान में इह़ात़ा की दीवार और बन्द होने वाले मज़बूत़ दरवाज़े इसी लिये बनाए जाते हैं। ख़ज़ानों का मुक़फ़्फ़ल करना, उन पर पहरे मुक़र्रर करना, वुरूदे आ़म को वहां मम्नूअ़ क़रार दे देना, येह सब दौलत की ह़िफ़ाज़त ही के लिये है। मुज़िर चीज़ों से परहेज़ इसी लिये किया जाता है।

ग़रज़ येह कि दुनिया में जिस चीज़ की ह़िफ़ाज़त मन्ज़ूर होती है उस को हर ऐसी चीज़ से बचाया जाता है जिस से किसी को नुक़्सान पहुंचने का अन्देशा या ख़त़रा हो। क्या वज्ह है कि इन्सानी अख़्लाक़ और बेहतरीन सिफ़ात की ह़िफ़ाज़त के लिये शहवत अंगेज़ी के अस्बाब और गुनाहों के मोह़र्रिकात को मम्नूअ़ क़रार न दिया जाए। औ़रत मर्द बाहम एक दूसरे के लिये त़बअ़न मरग़ूब हैं। ह़ुस्नो अदा और ख़ूबी लिबास मुशव्विक़ है। निगाह से निगाह मिल कर इशारों में वोह गुफ़्तगूएं हो जाया करती हैं जिस को इ़बारत में अदा किया जाए तो सफ़ह़े के सफ़ह़े भर जाएं जब औ़रतों को बे ह़िजाब कर दिया जाए और मर्दों से इख़्तिलात़ में उन्हें कोई रुकावट बाक़ी न रहे तो क्या वज्ह है कि इस इख़्तिलात़ से फ़साद पैदा ही न हो। शहवत परस्त इन्सान जिस की निगाहें ख़ियानत की आ़दी हो गई हों, और जिस का दिल नाजाइज़ ख़्वाहिशात से लबरेज़ रहता हो, वोह तो पर्दे के ह़ुक्म और इख़्तिलात़ की मुमानअ़त को अपनी तमन्नाओं का ख़ून समझेगा और दुश्मन हो जाएगा लेकिन वोह हादी जो इन्सानी बदकार को ऐ़ब से बचाना चाहता है वोह यक़ीनन फ़साद की राहों को रोकेगा जिस चीज़ और जिस ख़बर में मज़नए फ़साद हो उस को मम्नूअ़

फ़रमाएगा।

इसी हिक्मत के लिये शरीअ़ते इस्लामिया ने पर्दे का हुक्म दिया ताकि दुनिया से बदकारी और बद निय्यती का इस्तीसाल किया जाए और ख़ल्क़े ख़ुदा शहवात के समुन्दरों में ग़ोता खाने से महफ़ूज़ रहे जब तक येह इन्तिज़ाम न हो तो इन्सान ख़ुदा परस्ती के लिये फ़राग़त नहीं पा सकता। शरीअ़ते इस्लामिया के इस क़ानून का येह नतीजा हुवा कि इन्सानों में परहेज़गारी आ गई और क़ुवा अपने महल पर सर्फ़ होने लगे। बद निय्यतों से जो फ़साद व ख़ून रेज़ियां होती थीं उन से अम्न हो गया। इन्सान अपने अहलो अ़याल के हुक़ूक़ अदा करने की त़रफ़ माइल हो गए। ख़ुदा परस्ती और परहेज़गारी के साथ साथ मुआ़शरत बेहतर हो गई और नस्लें क़वी पैदा होने लगीं। इस क़ानून की बदौलत मुसलमानों के औक़ात ज़रूरिय्यात में सर्फ़ होने लगे। सुब्ह शाम सैर गाहों में औ़रतों मर्दों के हुजूम का इस क़ानून के अ़हद में नामो निशान नहीं मिलता। न औ़रतें बे पर्दा फिरती हैं न किसी के दिल में शौक़े दीदार के वल्वले पैदा होते हैं न नाच घर आबाद होते हैं, न पुर फ़साद मजामेअ़ देखे जाते हैं। इन्सान एक सादा ज़िन्दगी के मेयार पर ले आया गया है। रात अपने घर में अपने अहल के साथ इन्सानी मतानत के साथ गुज़ारता है। सुब्ह क़ुरआन पाक ले कर बैठ जाता है। औ़रतें और मर्द सब तिलावत में मश्ग़ूल होते हैं। यादे इलाही के जज़्बे और ज़िक्रे इलाही का शौक़ क़ल्ब को मुनव्वर करता है। इस से फ़ारिग़ हो कर मआ़श के कामों में दिन गुज़ारता है। दिन के आख़िरी हिस्से में जब अपने कामों से फ़ारिग़ हो जाता है तो मस्जिद में बादे अ़स्र ब निय्यते एतिकाफ़ बैठता है या अपने शब की ज़रूरिय्यात बहम पहुचाने में मश्ग़ूल हुवा है। इस त़रह उस के रात दिन निहायत पाकीज़गी के साथ गुज़रते हैं। औ़रतें मकानों में पर्दा नशीन हैं। उन के ख़यालात मुन्तशिर नहीं हैं। वोह ख़ानादारी और तरबियते औलाद के काम में मसरूफ़ हैं। इ़बादतों के औक़ात यादे इलाही में गुज़ारती हैं। त़हारत का लिहाज़ रखती हैं। उन की मेहनतों का मर्कज़ एक शौहर है और इस वज्ह से इन को बड़ी नफ़ीस मुआ़शरत और ऐशे ग़ैर मुकद्दर ह़ासिल होता है। इस सिफ़त में मुसलमान दुनिया की तमाम क़ौमों में फ़र्द थे। उन की ख़वातीन का आंचल किसी आंख ने न देखा था। उन के ज़ेवर की झंकार किसी कान ने नहीं सुनी थी। उन के नाम से नामह़रम वाक़िफ़ नहीं हो सकता था। मरने के बाद क़ब्र में भी पर्दे के एहतिमाम से उतारी जाती थीं। उन की बांदियां भी पर्दा करती थीं। बाहर की फिरने वाली औ़रतों तक का घर में आना उन्हें नागवार था और दुनिया की वोह क़ौमें जिन के यहां पर्दा नहीं है, मुसलमानों से शरमाती थीं और समझती थीं कि ह़मिय्यत व ग़ैरत मुसलमानों का ह़िस्सा है, इस में कोई उन की हमसरी नहीं कर सकता। अपनी ह़ालतों पर उन को शर्म आती थी। इस लिये उन्हों ने पर्दे की मुख़ालफ़त शुरूअ़ की और त़रह़ त़रह़ के प्रोपेगन्डे शुरूअ़ किये ताकि मुसलमान की येह इ़ज़्ज़त व इम्तियाज़ जिस के सामने अक्वामे आ़लम को शर्मिन्दा व रुस्वा होना पड़ता है, मादूम कर दी जाए। अग़यार तो इस कोशिश में थे ही उन के ह़सद व इ़नाद का इस अम्र को मुक़्तज़ा होना चन्दां बई़द भी न था।

कूज़ा पुश्त (कुबड़ा) भी चाहता है कि दुनिया के सरो क़ामत नौजवान इसी त़रह़ ख़मीदा हो जाएं लेकिन क़ाबिले रंज बात येह है कि हमारे नौ तालीम याफ़्ता, मग़रिबियत परस्त, दुश्मनों की इस तमन्ना को पूरा करने के लिये आलाकार बन गए और वोह मुसलमानों को ग़लत़ राह पर ले जाने की सई़ में सर गर्म हैं। उन सादा लौह़ों को दुश्मनों का रटाया हुवा कलिमए नाह़क़ तो याद है, मगर वोह जज़्बए ख़ुश एतिक़ादी में दुश्मन की चाल बाज़ी व अ़य्यारी से बिल्कुल बे ख़बर और ग़ाफ़िल हैं। शहवानी, ग़ैरत सोज़, उमंगें उन के साथ हैं और वोह अपनी बीबियों को बे पर्दा और बे ह़िजाब बाज़ारों में और सैर गाहों में रेल्वे स्टेशनों के प्लेट फ़ॉर्मों पर, बल्कि थेटरों और सिनेमाओं तक में साथ लिये फिरते हैं। ग़ैर मर्दों से उन के हाथ मिलवाते हैं। इस पर त़ुर्रह येह कि लिबास वोह पहनाते हैं जिस को लिबासे उ़र्यानी या लिबासे बे ह़याई कहना बिल्कुल सह़ीह़ है। हैं तो बेगम साहिबा मगर सर खुला है, बाल कटे हैं, आस्तीनें नदारद हैं, कलाइयां और बाज़ू नज़र आ रहे हैं, गिरेबान तिरछा तरशा हुवा है जिस में सीना और कुछ ह़िस्सा ज़नाना जिस्म तक के नुमूदार हैं। घुटनों तक पांव भी खुले हैं, जिन पर जिस्म के हम रंग रेशमी मोज़े हैं। एक मोहतरम ख़ातून की बे इ़ज़्ज़ती के लिये वोह सब कुछ कर लिया गया है जिस का तसव्वुर करने से मर जाना उस से बदरजहा ज़ियादा प्यारा मालूम होता था। इस में शरीअ़ते मुत़ह्हरा की सरीह़

मुख़ालफ़त है और ग़ैरत का तो नामो निशान भी बाक़ी न रहा कि आदमी अपनी बीबी को मन्ज़रे आम पर लिये फिरता है और दुनिया के बद से बद शख़्स को उस पर नज़र डालने के मौक़े देता है। ऐसे ही मन्हूस को दय्यूस कहते हैं। बाज़ ग़ैरत मन्द जानवर तक इस त़रह़ की बेह़याई गवारा नहीं करते। इस बे ग़ैरतीको रवाज देने के लिये तक़रीरें की जाती हैं, मज़मून लिखे जाते हैं, और पर्दा तोड़ कर बाहर निकल आने वली ह़यादार औ़रतें पर्दे की मुख़ालफ़त में बहुत ग़ोग़ा करती हैं। ज़नाना मद्रसों में तालीम देने वाली औ़रतें पर्दे की बुराइयां लड़कियों के ज़ेहन नशीन कर के ह़या की चादर उतार डालने की कोशिश करती हैं।

जो मर्द अपनी शर्मो ह़या बालाए त़ाक़ रख कर औ़रतों को पर्दे से बाहर निकाल लाए और उन को बे ह़िजाबी का शिकार भी बना चुके, वोह चाहते हैं कि दूसरों को भी इसी में मुब्तला करें। आज कल एक छोटा रिसाला म्युनसिपलटी मुरादाबाद में तक़्सीम किया गया कि येह रिसाला छोटी तक़्त़ीअ़ के 4 सफ़्ह़े पर है। लोहे के ह़र्फ़ों से छापा हुवा है। हेल्थ की जानिब से छापा गया है। उस में अकबर व जमीला की एक कहानी लिखी है और येह दिखाया है कि जमीला पर्दे की पाबन्दी की वज्ह से तपे दिक़ में मुब्तला हो कर मर गई और अपनी लड़कियों को पर्दा न करने की वसिय्यत कर गई। अव्वल तो येह बात बेजा है कि कोई पब्लिक मह़कमा किसी क़ौम के मज़हबी जज़्बात के ख़िलाफ़ प्रोपेगन्डा करे और अगर ऐसे रिसालों की इशाअ़त पर पब्लिक ही का रुपिया भी सर्फ़ हो तो येह और ज़ियादा क़ाबिले मुवाख़ज़ा है। मुसलमानों को चाहिये कि आंख खोलें और पब्लिक का रुपिया अपने मज़हब की मुख़ालफ़त में न सर्फ़ होने दें।

दूसरी बात येह है कि पर्दा शिक्नी जैसे ग़ैरत सोज़ व दुश्मने ह़या मक़्सद के लिये तमाम अदिल्लए अ़क़्लिया व शरइय्या के जवाब में सिर्फ़ कहानियां... हो सकती हैं और तालीमे जदीद का उसूले बुरहान येह कहानियां रह गई हैं और वोह भी बात़िल मह़कमा हेल्थ, यानी सेह़त की त़रफ़ से उस का शाएअ़ होना और ज़ियादा तअ़ज्जुब ख़ेज़ है क्यूंकि माहिरीने इल्मे सेह़त को अभी तक येह मालूम नहीं कि सदियों के तजरिबे अफ़सानों और कहानियों से रद नहीं होते। तेरह सौ बरस से मुसलमान पर्दे के निहायत एह़तिमाम के साथ पाबन्द हैं। अगर पर्दे से तपे दिक़ पैदा होती तो ज़रूरी था कि मुसलमानों की तमाम औ़रतें तपे दिक़ ही में मरतीं और मुसलमानों की नस्ल रोज़ बरोज़ घटती जाती लेकिन ऐसा नहीं हुवा तो किसी औ़रत की तपे दिक़ का सबब पर्दे को क़रार देना एक ग़लत़ तख़य्युल और बात़िल वहम है। मुसलमानों की औ़रतें तो इब्तिदा ही से पर्दे की ख़ूगर और आ़दी होती हैं उन्हें पर्दे से वह़शत और घबराहट नहीं होती बल्कि पर्दा जान से ज़ियादा अ़ज़ीज़ होता है और बे पर्दगी उन्हें मौत से ज़ियादा शाक़ व नागवार मालूम होती है।

उन्हें पर्दे से क्या तपे दिक़ होगी जो मर्द हैं और इब्तिदाए उ़म्र से आज़ाद फिरने के आ़दी हैं जब उन्हें लम्बी लम्बी क़ैदें हो जाती हैं और जेल ख़ानों में वोह न सिर्फ़ दुनिया के सैर व तफ़रीह़ से रोके जाते हैं बल्कि अ़ज़ीज़ व अक़ारिब अहलो औलाद को देखने को तरस जाते हैं, बदनामी व रुस्वाई कारोबार की ख़राबी घर की वीरानी अहलो अ़याल की परेशानी के सबब से ग़म उन के साथ होते हैं। फिर उस पर मशक़्क़तें, जेल की सुऊ़बतें, वह़शत अंगेज़ लिबास, ज़मीन पर बैठना सोना, ग़िज़ाओं की पाबन्दियां येह सब चीज़ें मिल कर भी तपे दिक़ का सबब नहीं होतीं तो औ़रतों के लिये पर्दा जिस को वोह अपनी इ़ज़्ज़तो हुर्मत जानती हैं और जिस के साथ अ़ज़ीज़ो अक़ारिब से मिलने रिश्तेदारों के यहां जाने शादी ग़मी में शिर्कत करने की कोई मुमानअ़त नहीं होती। ह़स्बे ह़ैसिय्यत आसाइश के सामान मुहय्या हैं, वोह किस त़रह़ तपे दिक़ का सबब हो सकता है और अगर माहिरीने ह़िफ़्ज़ाने सेह़त के नज़दीक इतनी सी पाबन्दी भी तपे दिक़ का सबब है तो पहले उन्हें येह चाहिये कि गवर्मेंट से क़ैद की सज़ा को मुख़ालिफ़ सेह़त व सबबे हलाक साबित कर के मौक़ूफ़ कराएं क्यूंकि क़ैद की सज़ा देने से जान का हलाक करना मन्ज़ूर नहीं होता। अगर वोह जान के लिये ख़त़रनाक है तो ज़रूर मौक़ूफ़ होनी चाहिये।

बहुत अफ़सोस है कि मुसलमानों के अख़्लाक़ बिगाड़ने के लिये ऐसी रकीक कहानियों से काम लिया जाए, और उस मक़्सद के लिये इन कहानियों का पेश करना अहले नज़र के लिये उस की दलील है कि बे पर्दगी के ह़ामियों के पास उन के त़रीक़े अ़मल की कोई दलील मौजूद नहीं है। ह़क़ीक़त येह है कि दीनी तालीम और दीनदारों की सोह़बत से बे पर्दा हो कर इन्सान क़वाए शहवानिया से इतना मग़लूब हो जाता है कि ग़ैरत व ह़मिय्यत तक उस में बाक़ी नहीं रहती, और येह ह़ालत उस को बेहतरीन जज़्बात की पासदारी से मोअ़त्त़ल कर देती है। इस के इ़लावा हमारे नौ जवानों को मुसलमानों की पुख़्तगिये एतिक़ाद का भी कुछ अन्दाज़ा करना चाहिये कि वोह पाबन्दिये शरीअ़त को हर चीज़ से ज़ियादा क़ीमती और अ़ज़ीज़ समझते हैं। वोह ऐसे वहमियात की त़रफ़ क्या इल्तिफ़ात करेंगे।

(السواد الاعظم، شوال، ذیقعدہ ۱۳۵۰، ص2تا12)

इस्लाम का तरबियती निज़ाम

तरबियत इन्सानी शख़्सिय्यत को निखारने, संवारने और वक़ार बख़्शने का वोह लाज़िमी अ़मल है जो इन्सान की सोच में वुस्अ़त, अ़मल में पुख़्तगी और अख़्लाक़ में ख़ूबसूरती पैदा करता है। येही वोह बुनियाद है जिस पर फ़र्द की ज़ाती और इज्तिमाई ज़िन्दगी की इमारत उस्तुवार होती है। अगर तरबियत का दामन ख़ाली हो तो मह़ज़ किताबी इ़ल्म भी बे माना हो जाता है, लेकिन अगर तरबियत सच्ची, इख़्लास के साथ और सह़ीह़ सम्त में हो तो एक अनपढ़ इन्सान भी आला किरदार का ह़ामिल हो कर दूसरों की हिदायत व रहनुमाई के लिये रौशनी का चराग़ बन सकता है। इस्लाम जो एक कामिल दीन है, उस ने इन्सान को इ़बादात की अदाएगी और अ़क़ाइद की दुरुस्ती के साथ साथ पूरी ज़िन्दगी संवारने और फ़लाह़ की राह दिखाने वाला एक मुकम्मल निज़ामे ह़यात दिया है। इस का तरबियती निज़ाम न सिर्फ़ फ़र्द के अख़्लाक़ व किरदार को बेहतर बनाता है, बल्कि इसे दूसरों की इस्लाह़ और तरबियत का ज़रीआ़ भी बनाता है, ताकि एक नेक फ़र्द के ज़रीए एक अच्छा मुआ़शरा तश्कील पा सके। क़ुरआने करीम और सुन्नते नबवी में ऐसे उसूल वाज़ेह़ किये गए हैं जो इन्सान को नेकी, अ़द्ल, दियानत, सब्र, ह़या और तक़्वा जैसी आला सिफ़ात से आरास्ता करते हैं, अगर हम मुआ़शरे को बेहतर बनाना चाहते हैं तो सब से पहले हर फ़र्द को अपना आप दुरुस्त करना होगा, और येही तरबियत का ह़क़ीक़ी मफ़्हूम है।

इस्लामी तरबियत इन्सान की शख़्सिय्यत के रूह़ानी, अख़्लाक़ी, फ़िक्री और अ़मली पहलूओं में निखार पैदा करती है। रूह़ानी तरबियत इन्सान के दिल को अल्लाह पाक की मह़ब्बत, उस की रिज़ा और इख़्लास से लबरेज़ करती है, जैसा कि क़ुरआने पाक में इरशाद होता है : ﴿قَدْ اَفْلَحَ مَنْ تَزَكّٰى﴾ तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : बेशक मुराद को पहुंचा जो सुथरा हुवा।[1] अख़्लाक़ी तरबियत इन्सान के किरदार को सच्चाई, अ़द्ल, सब्र, ह़या और हुस्ने सुलूक जैसे पाकीज़ा औसाफ़ से मुज़य्यन करती है, नबिय्ये करीम صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : "मोमिनों में ज़ियादा कामिल ईमान वाला वोह है जो अख़्लाक़ के एतिबार से उन में सब से अच्छा है।[2] फ़िक्री तरबियत इन्सान में अ़क़्लो शुऊ़र बेदार करती है, और उसे ग़ौरो फ़िक्र, इ़ल्मो ह़िक्मत और बसीरत की दौलत अ़ता करती है, क़ुरआने करीम हमें येही दावत देते हुए मुख़्तलिफ़ मक़ामात पर तफ़क्कुर, तदब्बुर और तअ़क़्क़ुल की दावत देता है। अ़मली तरबियत ज़िन्दगी के हर मैदान में हुस्ने अ़मल, नज़्मो ज़ब्त़ और सुन्नते नबवी की पैरवी को फ़रोग़ देती है ताकि फ़र्द सिर्फ़ नज़रियाती त़ौर पर नहीं बल्कि अ़मली सत़ह़ पर भी एक मुफ़ीद, मुस्बत और बा किरदार इन्सान बने। येही जामेअ़ तरबियत इस्लामी मुआ़शरे की बुनियाद है, जो फ़र्द की इस्लाह़ से क़ौम की फ़लाह़ तक का सफ़र तै करती है।"

इस्लामी तरबियत का मक़्सद

इस्लामी तरबियत दर अस्ल एक ऐसा मुकम्मल निज़ाम है जो इन्सान को उस की अस्ल फ़ित़रत, ज़िन्दगी के मक़्सद और उस के ह़क़ीक़ी मक़ाम से रूशनास करती है। इस्लाम के नज़दीक इन्सान सिर्फ़ एक जानदार नहीं बल्कि अल्लाह का बन्दा और उस की दी गई ज़िम्मेदारियों का निगेहबान है। इस लिये इस्लामी तरबियत की पहली बुनियाद येही है कि इन्सान के दिल में अल्लाह की बन्दगी और उस की फ़रमां बरदारी का शुऊर पैदा हो, ताकि वोह अपनी ज़िन्दगी को अल्लाह पाक के अह़काम के मुत़ाबिक़ गुज़ारे। इस्लामी तरबियत जहां इन्सान को अपने ख़ालिक़ का फ़रमां बरदार बनाती और नमाज़, रोज़े समेत दीगर इ़बादात का पाबन्द करती है वहीं इन्सान की अख़्लाक़ी, मुआ़शरती और फ़िक्री शख़्सिय्यत को भी संवारती है। इसी लिये इस्लाम सच्चाई, इन्साफ़, सब्र, ह़या और अमानत दारी जैसे औसाफ़ अपनाने की तालीम देता है, जो एक अच्छे और बा किरदार इन्सान की पहचान होते हैं। इसी त़रह़ इस्लामी तरबियत इन्सान की अ़क़्ल को जमूद से निकाल कर इ़ल्म, ग़ौरो फ़िक्र और शुऊर की त़रफ़ ले जाती है, ताकि वोह ह़क़ और बात़िल में फ़र्क़ कर सके। रूह़ानी त़ौर पर येह तरबियत इन्सान के दिल की बीमारियों जैसे ह़सद, ग़ुरूर, तकब्बुर और बद गुमानी से नजात दिलाती है और उसे अल्लाह के क़रीब करती है। येह तरबियत सिर्फ़ फ़र्द की इस्लाह़ पर नहीं रुकती, बल्कि उसे एक बा अ़मल, नफ़ा बख़्श और ज़िम्मेदार शहरी बनाती है, जो मुआ़शरे में भलाई, अ़द्ल और ख़ैरख़्वाही का पैग़ाम ले कर आता है। आख़िर में, इस्लामी तरबियत का अस्ल मक़्सद येह है कि इन्सान दुनिया में नेकी और तक़्वा के साथ ज़िन्दगी गुज़ारे और आख़िरत में अल्लाह की रिज़ा और जन्नत की कामयाबी ह़ासिल करे।

इन्सान की फ़ित़रत के मुत़ाबिक़ तरबियत

इस्लाम के तरबियती निज़ाम की एक ख़ूबी और ख़ूबसूरती येह भी है कि येह दीन इन्सान की फ़ित़रत के ऐन मुत़ाबिक़ है। क़ुरआने पाक में इरशाद होता है: ﴿فِطْرَتَ اللّٰهِ الَّتِیْ فَطَرَ النَّاسَ عَلَیْهَا ؕ﴾ तर्जमए कन्ज़ुल इ़रफ़ान: (येह) अल्लाह की पैदा की हुई फ़ित़रत (है) जिस पर उस ने लोगों को पैदा किया[3]

हर बच्चा अपनी अस्ल फ़ित़रत यानी फ़ित़रते सलीमा पर पैदा होता है, और उस की त़बीअ़त दीन को क़बूल करने के लिये आमादा होती है। पस अगर उसे इसी फ़ित़रत पर छोड़ दिया जाए तो वोह उस पर क़ाइम रहता है और किसी और त़रफ़ नहीं जाता, क्यूंकि येह दीने इस्लाम अपनी ख़ूबी की वज्ह से इन्सान के नफ़्स में पहले से मौजूद होता है। लेकिन वोह इस से उस वक़्त हटता है जब कोई बशरी आफ़त या ग़लत़ रस्मो रिवाज की तक़्लीद उसे राह से हटा देती है।[4]

मालूम हुवा कि इन्सान नेकी और ख़ैर के रुजहान के साथ पैदा होता है जब कि तरबियत उस को बिगाड़ने, संवारने और अच्छी और बुरी आ़दात व सिफ़ात में ढालने का काम करती है, अच्छी तरबियत अच्छा और बुरी तरबियत बुरा असर पैदा कर देती है।

सीरते नबवी मुकम्मल तरबियती मॉडल

नबिय्ये करीम صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की पूरी ज़िन्दगी इन्सानिय्यत के लिये एक कामिल नमूना और इस्लामी तरबियत का ज़िन्दा व रौशन मॉडल है। आप صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के क़ौलो फ़ेल, अख़्लाक़ व किरदार और मुआ़मलात व तअ़ल्लुक़ात में हमें वोह कामिल रहनुमाई मिलती है जो इन्सान को दुनिया व आख़िरत में कामयाब बना सकती है। आप صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का उस्वए मुबारका हर मुसलमान के लिये एक ऐसा रास्ता है जो दिल को पाकीज़गी, किरदार को बुलन्दी और ज़िन्दगी को मक़्सद अ़त़ा करता है। क़ुरआने करीम में अल्लाह पाक इरशाद फ़रमाता है: ﴿لَقَدْ كَانَ لَكُمْ فِیْ رَسُوْلِ اللّٰهِ اُسْوَةٌ حَسَنَةٌ﴾ तर्जमए कन्ज़ुल ईमान: बेशक तुम्हें रसूलुल्लाह की पैरवी बेहतर है।[5]

नबिय्ये पाक صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने क़ौल और फ़ेल दोनों ही अन्दाज़ से तरबियत फ़रमाई, आप صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का त़रीक़ए तरबियत: इ़ल्मो ह़िक्मत, मह़ब्बत व शफ़्क़त, सब्रो तह़म्मुल और आला अख़्लाक़ का ह़सीन इम्तिज़ाज था। आप की सीरते मुबारका में हमें अ़मली तरबियत के ऐसे ऐसे रौशन पहलू मिलते हैं जो आज के तरक़्क़ी याफ़्ता और तालीम याफ़्ता कहलाने वाले मुआ़शरे के माहिरीन दरयाफ़्त करते फिरते हैं।

ज़ैल में इस की चन्द एक झल्कियां पेश की गई हैं, मुलाह़ज़ा कीजिये!

1 ग़लत़ी पर नर्मी से इस्लाह़ : इस्लामी तरबियत का एक अहम त़रीक़ा है कि इन्सान को नर्मी, बरदाश्त और ह़ुस्ने अख़्लाक़ के साथ दुरुस्त राह दिखाई जाए। इस्लाम में इस्लाह़ का मक़्सद किसी को शर्मिन्दा करना या सख़्ती करना नहीं, बल्कि मह़ब्बत व ह़िक्मत के ज़रीए दिलों को बदलना है। नबिय्ये करीम صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के अ़मल से भी येही अन्दाज़ देखने को मिलता है कि आप के सामने

अगर कोई ग़लती करता तो आप उसे डांटने के बजाए नर्मी से समझाते, चुनान्चे एक मरतबा एक देहाती मस्जिद में दाख़िल हुवा और पेशाब करने लगा, सहाबए किराम उसे रोकने लगे तो हुज़ूर ने फ़रमाया : उसे न रोको, छोड़ दो ! जब उस ने पेशाब कर लिया तो बुला कर इरशाद फ़रमाया : येह मस्जिदें पेशाब और गन्दगी के लिये नहीं, येह तो ज़िक्रे इलाही, नमाज़ और तिलावते क़ुरआन के लिये हैं।[6] बाद में वोह आराबी जब दीनी मुआमलात को समझ गए तो उन्हों ने कहा : "नबिय्ये करीम صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم मेरी तरफ़ तशरीफ़ लाए, मेरे मां बाप उन पर क़ुरबान ! उन्हों ने न तो मुझे डांटा और न ही बुरा भला कहा।"[7]

2 मर्हलावार तरबियत : इस्लामी तरबियत का एक नुमायां उसूल येह है कि इन्सान की इस्लाह और तरबियत में तदरीजी अन्दाज़ यानी मरहलावार अन्दाज़ इख़्तियार किया जाए। इस्लाम ने इन्सान की फ़ितरत, आदात और नफ़्सियात को मल्हूज़ रखते हुए तरबियत का वोह तरीक़ा अपनाया जो मुस्तक़िल और पायेदार तब्दीली पैदा करे। अचानक सख़्ती या एक दम मुकम्मल तब्दीली का मुतालबा करने के बजाए, लोगों को आहिस्ता आहिस्ता भलाई की तरफ़ लाया गया ताकि वोह दीन के अहकाम को आसानी से अपना सकें। नबिय्ये करीम صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم सहाबए किराम की तरबियत में जल्दबाज़ी को इख़्तियार नहीं फ़रमाते बल्कि उन की इस्तिताअत और तबीअत और हालात को देखते हुए उन की मर्हलावार तरबियत फ़रमाते थे, जैसा कि शराब की हुर्मत एक दम नहीं, बल्कि तीन मर्हलों में नाज़िल हुई। पहले उसे नुक़्सान देह कहा, फिर नशे की हालत में नमाज़ से मना किया, और आख़िर में मुकम्मल तौर पर हराम क़रार दिया । येह तदरीजी अन्दाज़ (Gradual approach) इन्सानी नफ़्सियात को मद्दे नज़र रख कर इख़्तियार किया गया। इस बारे में हज़रते सय्यिदुना इमाम फ़ख़रुद्दीन राज़ी رَحْمَۃُ اللّٰہِ عَلَیْہ नक़्ल फ़रमाते हैं कि शराब को मर्हलावार हराम क़रार देने में हिक्मत येह थी कि अल्लाह पाक जानता था कि येह लोग शराब नोशी के बहुत दिलदादा हैं और इन्हें इस से बहुत ज़ियादा नफ़ा भी हासिल होता है, अगर इन्हें एक ही हुक्म से मना किया गया तो येह उन पर गिरां गुज़रेगा, लिहाज़ा उन पर शफ़क़त फ़रमाते हुए दर्जा बदर्जा (Gradually) हुर्मत नाज़िल फ़रमाई।[8]

3 सुवालात के ज़रीए तरबियत का हकीमाना अन्दाज़ : इस्लामी तरबियत का एक निहायत मुअस्सर और हकीमाना तरीक़ा सुवाल व जवाब के ज़रीए तालीम देना है। येह अन्दाज़ इन्सान की तवज्जोह को मर्कज़ करता, उस की सोच को बेदार करता और बात को ज़ेहन नशीन कर देता है। नबिय्ये करीम صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने तरबियते सहाबा में इसी हकीमाना उस्लूब को इख़्तियार फ़रमाया। आप सुवाल के ज़रीए न सिर्फ़ उन की दिलचस्पी पैदा फ़रमाते बल्कि उन के फ़हमो शुऊर को भी जिला बख़्शते, जैसा कि

एक मरतबा नबिय्ये पाक صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इस्तिफ़सार फ़रमाया : क्या तुम जानते हो कि मुफ़्लिस कौन है ? लोगों ने अर्ज़ की : हम में तो मुफ़्लिस वोह है जिस के पास दिरहमो दीनार और सामान न हो। आप صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : मेरी उम्मत में मुफ़्लिस वोह है जो क़ियामत के दिन नमाज़, रोज़ा और ज़कात लाएगा मगर साथ ही किसी को गाली दी हो, किसी पर ज़िना की तोहमत लगाई हो, किसी का माल खाया हो, किसी का ख़ून बहाया हो और किसी को मारा हो पस हर एक को उस की नेकियों से दिया जाएगा अब अगर उस की नेकियां ख़त्म हो गईं और हक़दार बाक़ी बच गए तो उन के हक़ के बराबर उन के गुनाहों में से ले कर उस पर डाल दिया जाएगा और फिर उसे जहन्नम में फेंक दिया जाएगा।[9]

4 इज्तिमाई तरबियत : इस्लामी तरबियत का एक निहायत अहम पहलू इज्तिमाई तरबियत है। इस्लाम सिर्फ़ फ़र्द की इस्लाह पर इक्तिफ़ा नहीं करता बल्कि पूरे मुआशरे की फ़लाह व बहबूद को मक़्सद बनाता है। नबिय्ये करीम صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने अपने अमल से येह वाज़ेह फ़रमाया कि एक सालेह मुआशरा तभी वुजूद में आ सकता है जब अफ़राद के साथ साथ इज्तिमाई सत्ह पर भी अद्ल, मसावात, उख़ुव्वत और ख़ैरख़्वाही के उसूल राइज किये जाएं। आप ने उम्मत को येह सबक़ दिया कि मुसलमान सिर्फ़ अपनी ज़ात के नहीं बल्कि पूरी जमाअत के ख़ैरख़्वाह हों। आप صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने सहाबा की इज्तिमाई तरबियत करते हुए सहाबए किराम عَلَیْہِمُ الرِّضْوَان के दरमियान दो मरतबा मुवाख़ात यानी भाई चारा क़ाइम फ़रमाया। पहली बार ख़ास तौर पर मुहाजिरीन के दरमियान हिजरत से क़ब्ल हुवा येह एक दूसरे की मदद और दीन के हुक़ूक़ क़ाइम करने पर था। और दूसरी मरतबा जब आप صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم हिजरत फ़रमा कर मदीनए मुनव्वरा तशरीफ़ लाए तो आप ने मुहाजिरीन और अन्सार के दरमियान भाई चारा क़ाइम फ़रमाया।[10]

---

(1)پ30، الاعلیٰ:14(2)ابو داؤد، 4/290، حدیث:4682(3)پ21، الروم:30
(4)روح البیان، پ21، الروم:30، 7/31(5)پ21، الاحزاب: 21 (6) مسلم، ص133، حدیث:661 ملتقطاً(7)ابن ماجہ، 1/300 ، حدیث: 529 (8) تفسیر کبیر، 2/396، پ2، البقرۃ، تحت الآیۃ:219(9)مسلم، ص1069، حدیث:6579
(10)عمدۃ القاری، 8/182، تحت الحدیث:1968 ملتقطا۔

बरकत का ज़वाल
अस्बाब और हमारी ज़िम्मेदारियां

आज कल बाज़ लोग येह कहते सुनाई देते हैं कि बरकत नहीं रही, पैसे में बरकत नहीं, वक़्त बे बरकत हो गया है, ह़त्ता कि ज़िन्दगी के किसी भी मुआमले में बरकत और कुशादगी बाक़ी नहीं रही। ह़ालांकि ह़क़ीक़त येह है कि बरकत किसी से मुकम्मल त़ौर पर छिन नहीं जाती, बल्कि किसी को ज़ियादा, किसी को कम और किसी को ह़ालात की बिना पर यूं मह़सूस होने लगता है कि बरकत ख़त्म हो रही है। अस्ल ज़रूरत इस बात की है कि हम अपने त़र्ज़े ज़िन्दगी और अख़राजात पर संजीदगी से ग़ौर करें।

माज़ी में बिजली का इस्तिमाल निहायत मह़दूद था। जब हम बचपन में थे तो हमारे घर में एक आध बल्ब जलता था, न ट्यूब लाइट थी, न पंखे। गर्मी में गत्ते के टुकड़े से हवा झल ली जाती थी, खटमल भी काटते थे, मकान भी पुराना और सादा सा था, मगर उस के बावुजूद ज़िन्दगी का पहिया चल ही जाता था। उस वक़्त इस्तिमाल कम होने की वज्ह से बिजली का बिल कम आता था।

आज सूरते ह़ाल इस के बरअ़क्स (यानी उलट) है। एक स्विच ऑन करने से कई कई बल्ब एक साथ रौशन हो जाते हैं, ह़ालांकि ज़रूरत सिर्फ़ एक बल्ब की होती है, मगर बनावट ऐसी होती है कि जब तक सब न जलें, एक बल्ब भी नहीं जलता। बिला ज़रूरत और फ़ुज़ूल इस्तिमाल हमारी आ़दत बन चुका है। इसी त़रह़ एसी को ही देख लीजिये, पहले हम ने एसी का नाम तक नहीं सुना था, और आज हर कमरे में एसी मौजूद है, बाज़ घरों में तो किचन तक में एसी लगा होता है। ज़ाहिर है, इस सबब से बिजली के अख़राजात में भी इज़ाफ़ा हो जाता है।

खाने पीने का मुआ़मला भी कुछ मुख़्तलिफ़ नहीं। पहले खाना सादा और कम ख़र्च होता था, और अब नित नए मुरग़्ग़न पकवानों का रिवाज आ़म हो चुका है। टेक्नॉलोजी और सोशल मीडिया ने खानों के बे शुमार अन्दाज़ मुतआ़रिफ़ करवा दिये हैं एक क्लिक पर खानों की एक फ़ेहरिस्त सामने आ जाती है। जो चीज़ पहले चन्द रूपों में तय्यार हो जाती थी, अब वोही सैंकड़ों या हज़ारों में पड़ती है, तो यूं ख़र्च बढ़ना ही है। नीज़ पहले खाना भी बक़द्रे ज़रूरत पकाया जाता था। अगर कुछ बच जाता तो न फ्रीज होते थे और न ज़ख़ीरा करने का रिवाज, या तो उसे छीके में रख दिया जाता या मुस्तह़िक़्क़ीन को दे दिया जाता। अब ज़ियादा पकाया जाता है, फ़्रिज में रखा जाता है, फिर बसा औक़ात न बच्चे खाते हैं न बड़े, और आख़िरेकार वोही खाना कूड़ेदान की नज़्र हो जाता है। इस त़रह़ नेमतों का ज़ियाअ़ (यानी ज़ाएअ़ होना) बढ़ गया है और ज़ाएअ़ करना बे बरकती का

सबब बनता है।

लिबास के मुआ़मले में भी येही ह़ाल है। पहले लोगों के सादा कपड़े होते थे, पैवंद लगे कपड़े भी पहन लिये जाते थे। मैं ने ख़ुद भी कई मरतबा पैवंद लगे कपड़े पहने हैं। आज कपड़ा चन्द बार धुल जाए तो फ़ौरन नया लिबास ख़रीद लिया जाता है।

औ़रतों के अख़राजात में भी ग़ैर मामूली इज़ाफ़ा हो गया है। फ़ैशन की दौड़, शादियों में कई कई जोड़े, और शादी के लिये इन्तिहाई क़ीमती लिबास, येह सब ऐसे रुजह़ानात हैं जो शायद पहले कम थे।

अगर किफ़ायत शिआ़री इख़्तियार की जाए तो बरकत ही बरकत है, यहां तक कि पड़ोसी भी इस से फ़ायदा उठा सकते हैं।

घरों का मुआ़मला भी क़ाबिले ग़ौर है। पहले छोटे छोटे कमरे होते थे। प्यारे आक़ा صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم का हुजरा मुबारक भी निहायत सादा और बज़ाहिर मुख़्तसर (मगर अ़ज़मत में वसीअ़ तरीन) था, मगर आज मकानात और प्लाज़े दिन बदिन बड़े होते जा रहे हैं। जितना बड़ा मकान होगा, उतने ही ज़ियादा रंगो रौग़न, बिजली, पानी, गैस, सफ़ाई और अ़मले के अख़राजात होंगे। ह़ालांकि सादा ज़िन्दगी में भी इ़ज़्ज़त और सुकून के साथ गुज़ारा मुम्किन है।

क़ुरआने करीम हमें साफ़ अल्फ़ाज़ में बताता है :

﴿لَىِٕنْ شَكَرْتُمْ لَاَزِیْدَنَّكُمْ﴾

आसान तर्जमए क़ुरआन कन्ज़ुल इरफ़ान : अगर तुम मेरा शुक्र अदा करोगे तो मैं तुम्हें और ज़ियादा अ़ता करूंगा। (پ13، ابراہیم:7)

इसी त़रह़ कारोबारी मुआ़मलात में झूट, धोका और बिला ज़रूरत क़समें खाना भी बरकत को ख़त्म कर देता है। ह़दीसे पाक में है : "ख़रीदो फ़रोख़्त में ज़ियादा क़समें खाने से बचो ! क्यूंकि ज़ियादा क़समें खाना सामान बिकवा देता है, लेकिन बरकत मिटा देता है"। (مسلم، ص668، حدیث:4126) फ़ुज़ूल ख़र्ची, इसराफ़, गुनाहों में माल ख़र्च करना, नेमतों को ज़ाएअ़ करना येह सब बे बरकती के अस्बाब हैं।

बिला ज़रूरत लाइट्स जलाना और किचन, बाथरूम और दीगर जगहों की बत्तियां रौशन रखना इसराफ़ है। अगर वाक़ेई़ ज़रूरत हो तो 100 बल्ब रौशन करना भी दुरुस्त वरना बे ज़रूरत एक भी क्यूं ? बेशक येही पैसा बचा कर किसी मुस्तह़िक़ की मदद भी की जा सकती है।

अगर्चे महंगाई अब एक आ़लमी मस्अला बन चुकी है, मगर इस के बावुजूद हमें अपनी इस्लाह़ करना होगी, क्यूंकि बहुत सी मुश्किलात हमारे अपने आमाल का नतीजा हैं।

अल्लाह पाक हम सब को समझ अ़त़ा फ़रमाए और नेमतों की क़द्र करने की तौफ़ीक़ दे। اٰمِیْن بِجَاہِ خَاتَمِ النَّبِیّٖن صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم

जो कुछ हैं वोह सब अपने ही हाथों के हैं करतूत
शिक्वा है ज़माने का न क़िस्मत का गिला है

बुज़ुर्गाने दीन के मुबारक फ़रामीन

The Blessed quotes of the pious predecessors

बातों से ख़ुश्बू आए

अक़्ल और ख़ुदशनासी का रिश्ता

अक़्लमन्द से उस की अपनी ख़ामियां पोशीदा नहीं रहतीं क्यूंकि जिस से अपनी ख़ामियां छुपी रहती हैं इस से दूसरों की ख़ूबियां भी पोशीदा रहती हैं। (इरशादे अबू हातिम رَحْمَةُ اللّٰهِ عَلَيْه)(روضۃ العقلاء، ص22)

ज़बान के बेजा इस्तिमाल से गुरेज़ कीजिये

बे फ़ायदा गुफ़्तगू मत करो क्यूंकि येह फ़ुज़ूल है और तुम्हारे गुनाहगार होने का भी अन्देशा है और मुफ़ीद बात भी बे मौक़अ़ न करो क्यूंकि मुफ़ीद बात करने वाले बहुत से लोग बे मौक़अ़ मुफ़ीद बात करते और ख़ुद को मशक़्क़त में डालते हैं।

(इरशादे ह़ज़रते इब्ने अ़ब्बास رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہُمَا) (इह़याउल उ़लूम, 3/140)

जैसा अपने लिये चाहते हो वैसा करो

अपने मुसलमान भाई से ऐसा बरताव किया करो जैसा तुम चाहते हो कि वोह तुम्हारे साथ करे।

(इरशादे ह़ज़रते इब्ने अ़ब्बास رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہُمَا) (इह़याउल उ़लूम, 3/140)

अह़मद रज़ा का ताज़ा गुलिस्तां है आज भी

फ़राइज़ के बग़ैर नवाफ़िल पढ़ना

बे अदा फ़राइज़ के नवाफ़िल अदा करने वाले नमाज़ी की मिसाल यूं है जैसे कोई ताजिर बग़ैर सरमाए के नफ़ा ह़ासिल करना चाहे। (फ़तावा रज़विय्या, 10/340)

रौज़ए अन्वर की शबीह भी क़ाबिले ताज़ीम है

रौज़ए मुनव्वरा हुज़ूरे पुरनूर सय्यिदे आ़लम صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की नक़्ले सह़ीह़ बिला शुबा मुअ़ज़्ज़माते दीनिय्या से है उस की ताज़ीमो तकरीम बर वज्हे शरई़ हर मुसलमान सह़ीहुल ईमान का मुक़्तज़ाए ईमान है। (फ़तावा रज़विय्या, 21/420)

उम्मत पर रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم का ह़क़

तमाम उम्मत पर रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم का ह़क़ है कि जब हुज़ूरे पुरनूर صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के आसारे शरीफ़ा से कोई चीज़ देखें या वोह शै देखें जो हुज़ूर के आसारे शरीफ़ा से किसी चीज़ पर दलालत करती हो तो उस वक़्त कमाले अदब व ताज़ीम के साथ हुज़ूरे पुरनूर सय्यिदे आ़लम صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم का तसव्वुर लाएं और दुरूदो सलाम की कसरत करें। (फ़तावा रज़विय्या, 21/422)

अ़त्तार का चमन कितना प्यारा चमन

एक के इन्तिज़ार में दूसरे को इन्तिज़ार मत करवाइये

किसी के इन्तिज़ार में दूसरे को इन्तिज़ार की आग में नहीं झोंकना चाहिये। (मदनी मुज़ाकरा, 3 जुमादल उख़रा, 1445)

मस्जिद में शाह व गदा सब बराबर

कोई कितना ही वी.आई.पी क्यूं न हो अल्लाह के घर में काहे का वी.आई.पी ! जिस को जहां जगह मिली वोह खड़ा हो जाए।

(मदनी मुज़ाकरा, 3 जुमादल उख़रा, 1445)

दूसरों को क़नाअ़त पर मजबूर न किया जाए

बन्दा ख़ुद अगर कम रोज़ी में गुज़ारा करता है या फ़ाक़ा कर लेता है या भूका रहता है तो उस का मतलब येह नहीं कि येह अपने मातह़त जितने हैं सब को उस के लिये मजबूर कर दे।

(मदनी मुज़ाकरा, 3 जुमादल उख़रा, 1445)

इस्लाम ही क्यूं ?

इस्लाम कमज़ोरों का मुहाफ़िज़

इस्लाम ऐसा कामिल व अक्मल दीन है जो ताक़तवर को कमज़ोरों की ज़िम्मेदारी सोंपता और कमज़ोर को महफ़ूज़ बनाता है। क़ुरआनो सुन्नत बार बार इस बात पर ज़ोर देते हैं कि मुआशरे के ताक़तवर लोग कमज़ोर तबक़ों का ख़याल रखें। इस्लाम की तालीमात में अल्लाह पाक ने वोह एतिदाल तनासुब और तवाज़ुन रखा है कि कोई मुसलमान दूसरे मुसलमान, या किसी भी मख़्लूक़े ख़ुदा पर ज़ुल्मो ज़ियादती नहीं कर सकता, इस्लामी तालीमात में ऐसा हरगिज़ नहीं है कि ताक़तवर अपनी ताक़त, क़ुव्वत, ओहदे, मन्सब, रुपिये पैसे और बैंक बैलेन्स के नशे में बदमस्त दनदनाता फिरे, जिसे चाहे क़त्ल कर दे, जिस से चाहे उस की जमा पूंजी छीन ले, जिस को चाहे ज़दो कोब करे, जिस की चाहे इज़्ज़त तार तार करे येह सब और ऐसा बहुत कुछ ज़मानए जाहिलिय्यत में तो ज़रूर होता था लेकिन इस्लाम ने इस तरह की हर अख़्लाक़ बाख़्ता हरकत पर न सिर्फ़ पाबन्दी आइद की बल्कि ऐसे लोगों की दुन्यवी हुदूद व ताज़ीर और उख़रवी सज़ा को भी बयान फ़रमाया। इस्लाम में कमज़ोरों के हुक़ूक़ को बहुत अहमिय्यत दी गई है। आम तौर पर मुआशरे के पिसे हुए अफ़राद जिन में मुलाज़िम व ख़ादिम, ज़ईफ़ व नातुवां, पसमांदा, ख़वातीन, माज़ूर व यतीम, मिस्कीन, बीमार, ग़रीब और दीगर कमज़ोर तबक़ात के लोग शामिल हैं न सिर्फ़ इन्हें नज़र अन्दाज़ किया जाता है बल्कि बुन्यादी इन्सानी हुक़ूक़ से भी महरूम कर दिया जाता है। इस्लाम में ऐसा बाक़ाइदा निज़ाम मौजूद है जो कमज़ोरों की हिफ़ाज़त करता, उन की इज़्ज़त बढ़ाता, उन की मदद करने की तरग़ीब दिलाता और उन के साथ हुस्ने सुलूक को ईमान का हिस्सा क़रार देता है। अल्लाह करीम और उस के प्यारे हबीब صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने बार बार कमज़ोरों के हुक़ूक़ की ताकीद फ़रमाई है और उन के साथ ज़ुल्म को सख़्त गुनाह क़रार दिया है। एक सरसरी निगाह इस्लाम से पहले के ज़माने पर डालें तो पता चलता है कि वोह दौर कमज़ोरों के साथ ज़ुल्म, ज़ियादती और माद्दी ताक़त की बालादस्ती का दौर था। ग़ुलामों पर ज़ुल्मो सितम की वोह दासतानें मिलती हैं जिन्हें पढ़ सुन कर रोंगटे खड़े हो जाते हैं। कमज़ोर व बेबस और माज़ूर अफ़राद को बोझ समझा जाता था। इस्लाम ने मुआशरे के ऐसे तमाम पिसे हुए अफ़राद को तहफ़्फ़ुज़ फ़राहम किया, उन की ख़िदमत को इबादत, उन के साथ हुस्ने सुलूक को सवाब और उन के काम आने को रिज़्क़ और फ़त्ह मिलने का ज़रीआ और सबब क़रार दिया ताकि कोई उन्हें बोझ न समझे बल्कि अपनी दुनिया व आख़िरत की ख़ैरख़्वाही और भलाई जान कर उन की ख़िदमत करे जैसा कि हमारे प्यारे नबी صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : هَلْ تُنْصَرُونَ وَتُرْزَقُونَ اِلَّا بِضُعَفَائِكُمْ यानी तुम्हारे कमज़ोर लोगों की वजह से ही तुम्हारी मदद की जाती और तुम्हें रिज़्क़ दिया जाता है।[1] हज़रते अ़ल्लामा अ़ली बिन सुल्तान क़ारी رَحْمَةُ اللّٰهِ عَلَيْه हदीसे पाक की वज़ाहत में लिखते हैं : हदीसे पाक का हासिल येह है कि ऐ लोगो ! दुश्मनों के मुक़ाबले में तुम्हारी जो मदद की जाती है और माले ग़नीमत वग़ैरा की सूरत में तुम्हें जो रिज़्क़ दिया जाता है वोह उन ग़रीबों और फ़क़ीरों की बरकत से दिया जाता है जो तुम्हारे दरमियान मौजूद हैं, लिहाज़ा तुम इन की ताज़ीम किया करो और उन पर फ़ख़्र व बड़ाई का इज़हार न किया करो।[2] इस्लाम की बे मिसाल तालीमात पर हमारी जान क़ुरबान ! कैसे प्यारे अन्दाज़ से कमज़ोरों की मदद करने की तरग़ीब इरशाद फ़रमाई जा रही है ताकि कमज़ोर व बे आसरा लोगों की मदद बोझ समझ कर नहीं बल्कि अपनी आख़िरत की भलाई और दुनिया की तरक़्क़ी समझ कर की जाए। इस्लाम कमज़ोरों का कैसा मुहाफ़िज़ है इस बात का अन्दाज़ा इस हदीसे पाक से भी लगाया जा सकता है : हज़रते सअ़द बिन अबी वक़्क़ास رَضِیَ اللّٰهُ عَنْه से रिवायत है कि रसूलुल्लाह صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने

फ़रमाया : اِنَّمَا یَنْصُرُ اللّٰہُ ھٰذِہِ الْاُمَّۃَ بِضَعِیفِھَا بِدَعْوَتِھِمْ وَصَلَاتِھِمْ وَاِخْلَاصِھِمْ यानी अल्लाह करीम इस उम्मत के कमज़ोर और बेबस लोगों की दुआ, इन की नमाज़ और इन के इख़्लास की वज्ह से इस उम्मत की मदद फ़रमाता है।[3] येह रिवायत भी कमज़ोरों की ख़ैरख़्वाही का दर्स दे रही है, कमज़ोर लोगों की दुआ उन की नमाज़, उन की इबादत की इस लिये अहमिय्यत है कि उन की इबादत और दुआ में बहुत ज़ियादा इख़्लास और ख़ुशूअ होता है, इस लिये कि उन के दिल दुनिया की चमक दमक और ज़ीनत से ख़ाली होते हैं, और उन के बातिन हर उस चीज़ से पाक होते हैं जो उन्हें अल्लाह करीम से दूर करती है। यूं उन्हों ने अपना एक ही मक़्सद बनाया होता है (यानी सिर्फ़ अल्लाह की रिज़ा)। चुनान्चे उन के आमाल पाकीज़ा और उन की दुआएं क़बूल हो गईं।[4] इस्लाम अपने मानने वालों को कमज़ोरों की हिफ़ाज़त, उन की ख़िदमत की कैसी तरग़ीब देता है इस वाक़िए से ख़ूब समझा जा सकता है जैसा कि हज़रते अनस رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہ से रिवायत है कि हमारे प्यारे नबी صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के मुबारक ज़माने में दो भाई थे, एक रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की बारगाह में हाज़िर रहता और दूसरा काम काज करता था। काम करने वाले ने नबिय्ये अकरम नूरे मुजस्सम صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم से अपने भाई (के काम न करने) की शिकायत की तो आप صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : لَعَلَّکَ تُرْزَقُ بِہٖ यानी शायद तुझे उस की बरकत से ही रिज़्क़ दिया जा रहा हो।[5] ख़याल रहे ! हुज़ूरे अन्वर صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم का "لَعَلَّ यानी शायद" फ़रमाना "शक" के लिये नहीं। करीमों की "शायद" भी यक़ीनी बल्कि حَقُّ الْیَقِیْن होती है।[6] हज़रते अ़ल्लामा अ़ली बिन सुल्तान क़ारी رَحْمَۃُ اللّٰہِ عَلَیْہ हदीसे पाक की वज़ाहत में लिखते हैं : उन दो भाइयों में से एक रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के पास इल्मो हिक्मत की बातें सीखने आता और दूसरा काम काज करता था और उन का खाना पीना एक साथ था। काम करने वाले ने रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की बारगाह में अपने भाई की शिकायत की, कि न येह ख़ुद कमाता है, न मेरे साथ काम करता है। आप ने फ़रमाया : मेरा गुमान है कि तेरी कमाई से उसे रिज़्क़ नहीं मिल रहा बल्कि तुझे उस की वज्ह से रिज़्क़ मिल रहा है। लिहाज़ा तू इस पर अपनी कमाई का एहसान मत जता।[7] हज़रते अ़ल्लामा मुहम्मद बिन अ़ल्लान शाफ़ेई رَحْمَۃُ اللّٰہِ عَلَیْہ लिखते हैं : रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने उस के भाई के तलबे मआश न करने और उस के अकेले कमाने पर उसे तसल्ली देते हुए इरशाद फ़रमाया कि हो सकता है कि अपने भाई की वज्ह से तुम्हारा तलबे मआश के लिये निकलना तुम्हारे रिज़्क़ की आसानी का सबब हो क्यूंकि जब तक बन्दा अपने भाई की मदद करता रहता है अल्लाह पाक उस की मदद फ़रमाता रहता है।[8] शैख़ अ़ब्दुल हक़ मोहद्दिस देहलवी رَحْمَۃُ اللّٰہِ عَلَیْہ लिखते हैं : येह हदीस इस बात पर वाज़ेह दलील है कि फ़ुक़रा बिल ख़ुसूस अपने क़रीबी रिश्तेदारों की कफ़ालत करना रिज़्क़ में बरकत का बेहतरीन ज़रीआ है।[9] हज़रते अबू दर्दा उ़वैमिर رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہ से रिवायत है, रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : तुम मुझे कमज़ोर और बेकस लोगों में तलाश करो क्यूंकि तुम्हारे कमज़ोर लोगों की वज्ह से तुम्हें रोज़ी दी जाती और तुम्हारी मदद की जाती है।[10] इस हदीसे पाक का मतलब येह है कि ऐ लोगो ! तुम फ़ुक़रा के साथ एहसान और मज़लूमों की दादरसी कर के मेरी रिज़ा तलाश करो क्यूंकि तुम में कमज़ोर लोगों के मौजूद होने की बरकत से तुम्हें हिस्सी और मानवी रिज़्क़ दिया जाता है और तुम्हारे ज़ाहिरी व बातिनी दुश्मनों के ख़िलाफ़ तुम्हारी मदद की जाती है।[11] अल ग़रज़ इस्लाम वोह दीने कामिल है कि जो ताक़त को ज़ुल्म का ज़रीआ नहीं बल्कि उसे ख़ुदाई अमानत बनाता है। इस्लाम कमज़ोरी को हक़ारत नहीं बल्कि हिफ़ाज़त का मुस्तहिक़ क़रार देता है। आज अगर हम इज्तिमाई तौर पर इस्लामी तालीमात की रूह को तरो ताज़ा करना चाहते हैं तो हमें कमज़ोरों की ढाल, यतीमों का सहारा, मोहताजों की उम्मीद और मज़लूमों का दादरस बनना होगा। याद रखिये ! जिस मुआशरे में कमज़ोर महफ़ूज़ हों, वोह मुआशरा अल्लाह पाक की नुसरत, बरकत और रहमत का मुस्तहिक़ बनता है। आइये ! अ़हद करें कि अपनी ताक़त, ओ़हदा, मन्सब, वसाइल और असरो रुसूख़ को कमज़ोरों की मदद, उन के हुक़ूक़ के तहफ़्फ़ुज़ और उन की इज़्ज़ते नफ़्स की बहाली के लिये इस्तिमाल करेंगे। इस लिये कि मुआशरे का अम्न कमज़ोरों का मुहाफ़िज़ बनने में पोशीदा है।

---

(1)بخاری،2/280،حدیث:2896(2)مر قاۃ المفاتیح، 9/84،تحت الحدیث:5232
(3)نسائی،ص518،حدیث:3175(4)عمدۃ القاری،14/179 (5)ترمذی، 4/154، حدیث: 2352(6)مراٰۃ المناجیح،7/123(7)مر قاۃالمفاتیح،9/170،تحت الحدیث: 5308
(8)دلیل الفالحین،1/287،تحت الحدیث:84(9)اشعۃ اللمعات، 4/262 (10)ابو داؤد، 3/46،حدیث:2594 (11)مر قاۃالمفاتیح،9/99، تحت الحدیث:5246۔

अह़कामे तिजारत

1 क़र्ज़ कह कर ज़कात दी तो क्या हुक्म है ?

सुवाल : क्या फ़रमाते हैं उ़लमाए किराम इस मस्अले के बारे में कि ज़ैद ने मुस्तह़िक़्क़े ज़कात शख़्स बक्र को क़र्ज़ कह कर ज़कात की रक़म दी जब कि देते वक़्त उस के दिल में ज़कात की अदाएगी की निय्यत थी तो क्या ज़ैद की ज़कात अदा हो गई ? नीज़ अगर कुछ अ़र्से बाद बक्र क़र्ज़ की वापसी के इरादे से ज़ैद की दी हुई रक़म ज़ैद को लौटाना चाहे और ज़ैद को इस वक़्त पैसों की ह़ाजत भी हो तो क्या ज़ैद का इस रक़म को लेना जाइज़ है ? क्यूंकि बक्र ने तो रक़म क़र्ज़ समझ कर ही ली थी।

اَلْجَوَابُ بِعَوْنِ الْمَلِكِ الْوَهَّابِ اَللّٰهُمَّ هِدَايَةَ الْحَقِّ وَالصَّوَابِ

जवाब : पूछी गई सूरत में ज़ैद की ज़कात अदा हो गई, लेकिन ज़ैद का वोही रक़म बाद में बक्र से वापस वुसूल कर लेना शरअ़न जाइज़ नहीं।

इस मस्अले की तफ़्सील येह है कि ज़कात देते वक़्त या ज़कात के लिये रक़म अ़लाह़दा करते वक़्त अगर दिल में ज़कात की निय्यत मौजूद हो तो मुस्तह़िक़्क़े ज़कात शख़्स को येह बताना ज़रूरी नहीं कि येह ज़कात की रक़म है बल्कि इस सूरत में क़र्ज़ कह कर भी ज़कात दी जाए तो ज़कात अदा हो जाएगी कि शरअ़न देने वाले की निय्यत का एतिबार होता है, अब लेने वाला किस निय्यत से ले रहा है शरअ़न इस का एतिबार नहीं। हां इतना ज़रूर है कि शरई फ़क़ीर क़र्ज़ समझ कर बाद में वोह रक़म लौटाने आए तो अब ज़कात में दी गई रक़म का वापस लेना जाइज़ नहीं होगा कि ज़कात से मुराद मह़ज़ अल्लाह पाक की रिज़ा के लिये शरीअ़त की जानिब से मुक़र्रर कर्दा माल को अपना हर क़िस्म का नफ़ा ख़त्म कर के मुस्तह़िक़्क़े ज़कात को उस माल का मालिक बना देना है, वाज़ेह़ हुवा कि सूरते मस्ऊला में ज़ैद का बक्र से वोही रक़म वापस वसूल कर लेना शरअ़न जाइज़ नहीं।

सय्यिदी आला ह़ज़रत इमामे अहले सुन्नत इमाम अह़मद रज़ा ख़ान رَحْمَةُ اللّٰهِ عَلَيْه फ़रमाते हैं : "इस (ज़कात) में एतिबार सिर्फ़ निय्यत का है अगर्चे ज़बान से कुछ और इज़्हार करे, मसलन दिल में ज़कात का इरादा किया और ज़बान से हिबा या क़र्ज़ कह कर दिया सह़ीह़ मज़हब पर ज़कात अदा हो जाएगी।" (फ़तावा रज़विय्या, 10/67)

फ़तावा अमजदिया में सुवाल हुवा कि एक शख़्स ने किसी मिस्कीन को ज़कात की निय्यत से क़र्ज़ कह कर माल दिया मुद्दत दराज़ के बाद वोह शख़्स क़र्ज़ समझ कर वापस देने आया और अब येह शख़्स भी मुफ़्लिस है तो क्या येह शख़्स उस माल को ले सकता है ? तो सदरुश्शरीआ رَحْمَةُ اللّٰهِ عَلَيْه ने जवाबन इरशाद फ़रमाया : "जब कि उस ने ब निय्यते ज़कात येह रक़म दी थी तो उसे वापस लेना जाइज़ नहीं ह़दीसे मुबारका में फ़रमाया ولا تعد فی صدقتك उस पर लाज़िम है कि येह रक़म वापस कर दे अब अगर येह शख़्स ज़कात लेने का मुस्तह़िक़ है तो दूसरे की ज़कात ले सकता है न येह कि जो ज़कात ख़ुद दे चुका उस को वापस ले।" (फ़तावा अमजदिया, 1/389)

وَاللّٰهُ اَعْلَمُ عَزَّوَجَلَّ وَ رَسُوْلُهٗ اَعْلَم صلَّی اللہ علیہ واٰلہٖ وسلَّم

2 किरायेदार पर मुतअय्यन अफ़राद की रिहाइश की शर्त लगाना

सुवाल : क्या फ़रमाते हैं उलमाए किराम इस मस्अले के बारे में कि ज़ैद ने तीन कमरों और एक लौंज पर मुश्तमिल मकान किराये पर लिया, और किराये पर लेते वक़्त मालिके मकान ने येह शर्त रखी कि येह मकान सिर्फ़ चार अफ़राद की रिहाइश के लिये दिया जा रहा है, उस से ज़ाइद अफ़राद उस में नहीं रह सकते ताकि घर का रंगो रौग़न ज़ियादा अर्से तक चल सके। अब अगर ज़ैद चार से ज़ाइद अफ़राद को उस घर में ठहराता है जब कि उन के रहने के लिये घर में जगह भी मौजूद हो, नीज़ बिजली व गैस के बिल भी ज़ैद ख़ुद अदा करता हो, तो क्या ऐसी सूरत में ज़ैद मालिके मकान की ख़िलाफ़ वर्ज़ी करने के सबब गुनाहगार होगा, और क्या चार से ज़ाइद अफ़राद ठहराने के सबब ज़ैद पर इज़ाफ़ी किराया देना भी लाज़िम होगा ?

اَلْجَوَابُ بِعَوْنِ الْمَلِكِ الْوَهَّابِ اَللّٰهُمَّ هِدَایَۃَ الْحَقِّ وَالصَّوَابِ

जवाब : फ़ुक़हाए किराम कि तसरीहात के मुताबिक़ किराये पार कोई चीज़ हासिल करने वाला इस की मन्फ़अत को मारूफ़ तरीक़े से इस्तिमाल करने में आज़ाद होता है और उसे एक आरज़ी मिल्किय्यत हासिल होती है। येही वज्ह है कि ऐसी चीज़ें जो मुख़्तलिफ़ अफ़राद के इस्तिमाल से कोई मुख़्तलिफ़ कैफ़िय्यत इख़्तियार नहीं करतीं, उन में येह शर्त लगाना कि इतने लोग इस्तिमाल करें इस से ज़ियादा लोग इस को इस्तिमाल न करें, मोतबर नहीं होता बल्कि येह शर्त बातिल शुमार होती है। लिहाज़ा पूछी गई सूरत में ज़ैद अगर मालिके मकान की मुक़र्रर कर्दा तादाद से ज़ाइद अफ़राद को अपने साथ वहां ठहराता है तो उस पर कोई इज़ाफ़ी किराया लाज़िम नहीं होगा, क्यूंकि येह शर्त ही शरअन ग़ैर मोतबर है। अलबत्ता येह ज़रूर है कि उर्फ़ से तजावुज़ न करे, मसलन रिहाइशी घर को कोई मुसाफ़िर ख़ाना बना दे जिस में रोज़ नए नए लोग वहां ठहरते रहें। ऐसे उमूर में मालिक को एतिराज़ करने का हक़ हासिल है। क्यूंकि आम घर और मुसाफ़िर ख़ाने के इस्तिमाल में बहुत फ़र्क़ है।

मुफ़्ती अमजद अली आज़मी رَحْمَۃُ اللّٰہِ عَلَیْہ बहारे शरीअत में तहरीर फ़रमाते हैं : "जिन चीज़ों के इस्तिमाल में इख़्तिलाफ़ न हो उन में येह क़ैद लगाना कि फ़ुलां शख़्स इस्तिमाल करे बेकार है जिस को मुतअय्यन कर दिया है वोह भी इस्तिमाल कर सकता है और दूसरा भी इस्तिमाल कर सकता है मसलन मकान में येह शर्त लगाना कि उस में तुम ख़ुद रहना दूसरे को न रहने देना या तुम तन्हा रहना ये शर्तें बातिल हैं।" (बहारे शरीअत, 3/129)

इसी तरह दूसरे मक़ाम पर तहरीर फ़रमाते हैं : "सुकूनत ऐसी चीज़ है कि साकिन के इख़्तिलाफ़ से मुख़्तलिफ़ नहीं होती। दुकान या मकान को किराये पर लिया उस में ख़ुद भी रह सकता है दूसरे को भी रख सकता है मुफ़्त भी दूसरे को रख सकता है किराये पर भी अगर्चे मालिके मकान या दुकान ने कह दिया हो कि तुम इस में तन्हा रहना।" (बहारे शरीअत, 3/122)

وَاللّٰہُ اَعْلَمُ عَزَّوَجَلَّ وَ رَسُوْلُہٗ اَعْلَم صلَّی اللہ علیہ واٰلہٖ وسلَّم

3 शराकत दारी के इख़्तिताम पर शरीक से उस का हिस्सा ख़रीदना

सुवाल : क्या फ़रमाते हैं उलमाए दीन व मुफ़्तियाने शरए मतीन इस मस्अले में कि मैं ने एक शख़्स के साथ कंफ़ेक्शनरी का कारोबार शिराकतदारी में किया। मैं ने उन्नीस लाख रुपिये सर्माया लगाया और शरीक ने भी इतनी ही रक़म लगाई। नफ़ा व नुक़्सान में भी दोनों का आधा आधा हिस्सा था, अलबत्ता काम में करता था दूसरा शरीक काम नहीं करता था। कुछ अर्से बाद हमारे दरमियान कुछ इख़्तिलाफ़ हुवा जिस की वज्ह से मेरा शरीक शिराकत दारी का मुआहदा ख़त्म करना चाहता है। और जो शिर्कत का सामान है वोह बाहमी रिज़ामन्दी से मैं ख़रीदना चाहता हूं, सामान की कुल मालिय्यत पच्चीस लाख रुपिये बनी है। क्या येह शरअन जाइज़ है ? इस में शरअन कोई क़बाहत तो नहीं है ?

اَلْجَوَابُ بِعَوْنِ الْمَلِكِ الْوَهَّابِ اَللّٰهُمَّ هِدَایَۃَ الْحَقِّ وَالصَّوَابِ

जवाब : अगर शिर्कत का सर्माया सामान की सूरत में मौजूद हो और फ़रीक़ैन इसी हालत में शिर्कत ख़त्म करना चाहें तो ऐसा करना दुरुस्त है। शिराकत दारी का मुआहदा ख़त्म करने के लिये येह ज़रूरी नहीं है कि माले शिर्कत नक़्द की सूरत में तब्दील हो चुका हो। लिहाज़ा पूछी गई सूरत में शिराकत दारी का मुआहदा ख़त्म करने के बाद बाहमी रिज़ामन्दी से एक शरीक दूसरे शरीक का हिस्सा ख़रीदना चाहता है तो दूसरे शरीक को उस के हिस्से के पैसे दे कर ख़रीद सकता है इस में शरअन कोई हरज नहीं। और शिर्कत में नुक़्सान से मुतअल्लिक़ उसूल येह है कि येह दोनों फ़रीक़ैन के माल के तनासुब के एतिबार से होगा। अगर शिर्कत में दोनों फ़रीक़ैन का माल बराबर हो जैसा कि सुवाल में ज़िक्र कर्दा सूरत में है और नुक़्सान हो जाए तो फ़रीक़ैन में बराबर तक़्सीम होगा।

وَاللّٰہُ اَعْلَمُ عَزَّوَجَلَّ وَ رَسُوْلُہٗ اَعْلَم صلَّی اللہ علیہ واٰلہٖ وسلَّم

मज़ार ह़ज़रते याक़ूब عَلَيْهِ السَّلَام

मज़ार ह़ज़रते यूसुफ़ عَلَيْهِ السَّلَام

ह़ज़रते सय्यिदुना यूसुफ़ عَلَيْهِ السَّلَام के भाइयों की तौबा

(सातवीं और आख़िरी क़िस्त)

भाइयों की शर्मिन्दगी और तौबा ह़ज़रते यूसुफ़ عَلَيْهِ السَّلَام के भाई एक जगह जमा हुए और एक दूसरे से सरगोशी करते हुए कहने लगे : अगर वालिद साहिब और भाई यूसुफ़ ने तुम्हें मुआ़फ़ कर दिया तो रब्बे करीम भी तुम्हें मुआ़फ़ कर देगा, उस वक़्त ह़ज़रते यूसुफ़ ह़ज़रते याक़ूब عَلَيْهِ السَّلَام के पहलू में बैठे हुए थे फिर येह सब भाई ह़ज़रते याक़ूब عَلَيْهِ السَّلَام के पास आए और अ़र्ज़ करने लगे : हम पर बड़ी आज़माइश उतरी है और उस जैसी परेशानी पहले कभी न थी अम्बियाए किराम मख़्लूक़ में सब से ज़ियादा रह़म व शफ़्क़त करने वाले होते हैं, ह़ज़रते याक़ूब عَلَيْهِ السَّلَام ने फ़रमाया : ऐ मेरे बच्चो ! क्या मुआ़मला है ? बेटों ने अ़र्ज़ की : हम ने आप के साथ और अपने भाई ह़ज़रते यूसुफ़ के साथ जो कुछ किया वोह आप सब जानते हैं, आप दोनों ने हमें मुआ़फ़ नहीं किया, येह सुन कर ह़ज़रते याक़ूब عَلَيْهِ السَّلَام और ह़ज़रते यूसुफ़ عَلَيْهِ السَّلَام दोनों ने फ़रमाया : कैसे नहीं मुआ़फ़ किया मुआ़फ़ तो कर दिया है, बेटों ने कहा : जब अल्लाह करीम ही मुआ़फ़ न करे तो आप दोनों की मुआ़फ़ी से क्या फ़ायदा होगा, ह़ज़रते याक़ूब عَلَيْهِ السَّلَام ने फ़रमाया : ऐ मेरे बच्चो ! तुम क्या चाहते हो ? बेटों ने अ़र्ज़ की : हम चाहते हैं कि आप अल्लाह से हमारे लिये दुआ़ करें जब वह़ी आए तो अल्लाह से पूछिये कि उस ने हमें मुआ़फ़ कर दिया है या नहीं ? जब उस की त़रफ़ से मुआ़फ़ी का जवाब आएगा तब हमारी आंखें ठन्डी होंगी और हमारे दिल पुरसुकून होंगे वरना हमारी आंखों को दुनिया में कभी भी ठन्डक न पहुंचेगी।

भाइयों की तौबा क़बूल हो गई चुनान्चे ह़ज़रते याक़ूब عَلَيْهِ السَّلَام खड़े हुए और नमाज़ शुरूअ़ कर दी ह़ज़रते यूसुफ़ और दूसरे भाई भी ह़ज़रते याक़ूब عَلَيْهِ السَّلَام के पीछे निहायत ख़ुशूओ ख़ुज़ूअ़ के साथ नमाज़ पढ़ने लगे फिर नमाज़ के बाद ह़ज़रते याक़ूब عَلَيْهِ السَّلَام ने दुआ़ की और ह़ज़रते यूसुफ़ ने आमीन कही, बीस साल का त़वील अ़र्सा गुज़र गया जवाब न आया, फिर ह़ज़रते जिब्राईल عَلَيْهِ السَّلَام वह़ी ले कर ह़ज़रते याक़ूब عَلَيْهِ السَّلَام की बारगाह में ह़ाज़िर हुए और अ़र्ज़ की : अल्लाह करीम ने मुझे आप के पास भेजा है और इरशाद फ़रमाया है कि आप को ख़ुश ख़बरी दूं कि उस ने आप के बेटों के ह़क़ में आप की दुआ़ क़बूल कर ली है और जो कुछ उन्हों ने किया था वोह सब मुआ़फ़ कर दिया है।[1]

गुस्ताख़ की ज़बान बन्द हो गई एक मरतबा एक बादशाह रय्यान बिन वलीद ने ह़ज़रते यूसुफ़ عَلَيْهِ السَّلَام से दरख़्वास्त की : मैं आप के वालिदे मोहतरम ह़ज़रते याक़ूब عَلَيْهِ السَّلَام से मिलना चाहता हूं, ह़ज़रते यूसुफ़ عَلَيْهِ السَّلَام ने वालिदे मोहतरम ह़ज़रते याक़ूब عَلَيْهِ السَّلَام से अ़र्ज़ की तो आप ने फ़रमाया : मैं दरख़्वास्त क़बूल करता हूं, जब ह़ज़रते याक़ूब عَلَيْهِ السَّلَام बादशाह के पास पहुंचे तो बादशाह निहायत इ़ज़्ज़तो एह़तिराम से पेश आया और आप को अपने पहलू में तख़्त पर बिठाया और सुवाल किया : आप

की उम्र क्या होगी ? आप عَلَيْهِ السَّلَام ने जवाब दिया : 140 साल, इस पर बादशाह का एक दरबारी कहने लगा : ऐ शैख़ ! आप ने झूट कहा है, हज़रते याक़ूब عَلَيْهِ السَّلَام ने उस शख़्स के ख़िलाफ़ दुआ की तो वोह उसी वक़्त नीचे गिरा और उस की ज़बान बन्द हो गई अब वोह किसी से कोई भी बात नहीं कर सकता था बादशाह येह देख कर निहायत ग़मगीन हो गया और हज़रते यूसुफ़ عَلَيْهِ السَّلَام से अ़र्ज़ गुज़ार हुवा कि आप वालिदे मोह़तरम हज़रते याक़ूब عَلَيْهِ السَّلَام से कहिये कि वोह उस की ज़बान खोल दें, हज़रते याक़ूब عَلَيْهِ السَّلَام ने उस के लिये दोबारा दुआ की तो उस की ज़बान सह़ीह़ हो गई।[2]

मौत के क़ासिद मन्क़ूल है कि हज़रते याक़ूब عَلَيْهِ السَّلَام और हज़रते इ़ज़राईल मलकुल मौत عَلَيْهِ السَّلَام में दोस्ती थी। एक बार जब हज़रते मलकुल मौत عَلَيْهِ السَّلَام आए तो हज़रते याक़ूब عَلَيْهِ السَّلَام ने इस्तिफ़सार फ़रमाया : आप मुलाक़ात के लिये तशरीफ़ लाए हैं या मेरी रूह़ क़ब्ज़ करने के लिये ? कहा : मुलाक़ात के लिये। फ़रमाया : मुझे वफ़ात देने से क़ब्ल मेरे पास अपने क़ासिद भेज देना। मलकुल मौत عَلَيْهِ السَّلَام ने कहा : मैं आप की त़रफ़ दो या तीन क़ासिद भेज दूंगा। चुनान्चे जब रूह़ क़ब्ज़ करने के लिये मलकुल मौत عَلَيْهِ السَّلَام आए तो आप عَلَيْهِ السَّلَام ने इरशाद फ़रमाया : आप ने मेरी वफ़ात से क़ब्ल क़ासिद भेजने थे वोह क्या हुए ? हज़रते मलकुल मौत عَلَيْهِ السَّلَام ने कहा : सियाह यानी काले बालों के बाद सफ़ेद बाल, जिस्मानी त़ाक़त के बाद कमज़ोरी और सीधी कमर के बाद कमर का झुकाव, ऐ याक़ूब (عَلَيْهِ السَّلَام) ! मौत से पहले इन्सान की त़रफ़ मेरे क़ासिद ही तो हैं।[3]

याक़ूब عَلَيْهِ السَّلَام की वसिय्यत तारीख़ बयान करने वाले उ़लमा फ़रमाते हैं : हज़रते याक़ूब عَلَيْهِ السَّلَام अपने फ़रज़न्द हज़रते यूसुफ़ عَلَيْهِ السَّلَام के पास मिस्र में चौबीस साल बेहतरीन ऐ़शो आराम में और ख़ुशह़ाली के साथ रहे।[4] जब वफ़ात का वक़्त क़रीब आया तो आप عَلَيْهِ السَّلَام ने हज़रते यूसुफ़ عَلَيْهِ السَّلَام को वसिय्यत की, कि आप का जनाज़ा मुल्के शाम में ले जा कर अरज़े मुक़द्दसा में (बैतुल मुक़द्दस उन दिनों मुल्के शाम के तह़त था) आप के वालिद हज़रते इस्ह़ाक़ عَلَيْهِ السَّلَام की क़ब्र शरीफ़ के पास दफ़्न किया जाए।[5] बवक़्ते वफ़ात हज़रते याक़ूब عَلَيْهِ السَّلَام ने अपने बेटों से फ़रमाया : मेरे बाद किस की पूजा करोगे ? बोले : हम पूजेंगे उसे जो ख़ुदा है आप का और आप के आबाओ अज्दाद इब्राहीम व इस्माईल व इस्ह़ाक़ का एक ख़ुदा और हम उस के ह़ुज़ूर गर्दन रखे हैं।[6] फ़रमाया : ऐ मेरे बेटो ! बेशक अल्लाह ने येह दीन तुम्हारे लिये चुन लिया है तो तुम हरगिज़ न मरना मगर इस ह़ाल में कि तुम मुसलमान हो।[7]

कन्आ़न की जानिब वापसी एक क़ौल के मुत़ाबिक़ हज़रते याक़ूब عَلَيْهِ السَّلَام चालीस साल तक मिस्र में मुक़ीम रहे फिर एक दिन अल्लाह पाक की त़रफ़ से वह़ी आई : अब आप की वफ़ात का वक़्त क़रीब आ चुका है यहां से कूच कर के अपने आबाओ अज्दाद की क़ब्रों की त़रफ़ जाइये वहां आप की वफ़ात होगी। इस के बाद हज़रते याक़ूब عَلَيْهِ السَّلَام अपने घर वालों के साथ कन्आ़न के शहरों की त़रफ़ तशरीफ़ ले आए।

मज़ारात पर ह़ाज़िरी जब हज़रते इब्राहीम ख़लीलुल्लाह और हज़रते इस्ह़ाक़ عَلَيْهِمَا السَّلَام के मज़ारात पर पहुंचे तो देखा कि फ़रिश्ते वहां मौजूद हैं और एक खुदी हुई क़ब्र भी देखी, फ़रिश्तों से पूछा येह किस की क़ब्र है ? उन्हों ने अ़र्ज़ की : रब्बे करीम के एक मेहरबान बन्दे के लिये है, आप عَلَيْهِ السَّلَام ने क़ब्र में झांका तो देखा कि क़ब्र में बुलन्द मिम्बर रखे हुए हैं जिन पर ख़ूबसूरत चेहरे वाले लोग बैठे हुए हैं, आप ने पूछा : मिम्बरों पर येह कौन लोग हैं ? अ़र्ज़ की गई : इब्राहीम ख़लीलुल्लाह عَلَيْهِ السَّلَام की औलाद है, हज़रते याक़ूब عَلَيْهِ السَّلَام ने चाहा कि उन के पास जा कर उन को सलाम करें तो फ़रिश्तों ने अ़र्ज़ की : जब तक आप इस पियाले में से कुछ नोश न फ़रमाएंगे तब तक अन्दर दाख़िल नहीं हो सकते, फिर मलकुल मौत عَلَيْهِ السَّلَام ने एक पियाला पेश किया आप عَلَيْهِ السَّلَام ने जूंही उसे नोश फ़रमाया (तो आप की रूह़ क़ब्ज़ कर ली गई और) आप नीचे तशरीफ़ ले आए, फ़रिश्तों ने आप को ग़ुस्ल दिया और जन्नती कफ़न ज़ेबे तन किया जब कि लोगों ने आप की नमाज़े जनाज़ा अदा की और आप عَلَيْهِ السَّلَام की तदफ़ीन कर दी।[8]

मज़ार मुबारक हज़रते इस्ह़ाक़ عَلَيْهِ السَّلَام की क़ब्रे मुबारक बैतुल क़ुदस की इ़मारत के इह़ाते़ में मिम्बर के पास वाले सुतून की जानिब है[9] इसी मक़ाम पर हज़रते याक़ूब عَلَيْهِ السَّلَام की क़ब्र मुबार भी है।[10]

---

(1) تاریخ الانبیاء للخطیب البغدادی، ص139 (2) قصص الانبیاء للکسائی، ص:176، 177 (3) مُکاشَفۃُ الْقُلُوب، ص1 ، بحوالہ غفلت، ص8 بتغیر (4) صراط الجنان، 5/63 (5) صراط الجنان، 5/63 (6) ترجمہ کنز الایمان، پ1، البقرۃ: 133 (7) ترجمہ کنز العرفان، پ1، البقرۃ: 132 (8) قصص الانبیاء للکسائی، ص:177، 178 (9) الانس الجلیل بتاریخ القدس والخلیل، 1/146 (10) کتاب الکلیات لابی البقاء، ص:987۔

रौशन सितारे

हज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुर्रहमान बिन औ़फ़ رَضِیَ اللہُ عَنْہ

रसूलुल्लाह صَلَّی اللہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के एक जलीलुल क़द्र सहाबी एक दिन काला रंगा हुवा सूती इ़मामा बांधे हुए थे। सरकारे नामदार صَلَّی اللہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने उन्हें बुलाया, उन का इ़मामा खोला और फिर अपने मुबारक हाथों से उन के सर पर इस त़रह इ़मामा सजाया कि चार उंगलियों जितना या इस के क़रीब क़रीब शिम्ला लटकाया, इस के बाद इरशाद फ़रमाया : इस त़रह इ़मामा बांधों क्यूंकि येह ज़ियादा ख़ूबसूरत और हसीन अन्दाज़ है।[1] इस के बाद से उन सहाबिये रसूल का मामूल था कि जब कोई अहम फ़ैसला करना होता या कोई बड़ा मुआ़मला दरपेश होता तो उस इ़मामा शरीफ़ को ज़ेबे सर फ़रमाते, चुनान्चे जब वोही सहाबी ह़ज़रते सय्यिदुना उ़स्माने ग़नी رَضِیَ اللہُ عَنْہ की ख़िलाफ़त के एलान के लिये ख़ुत्बा इरशाद फ़रमा रहे थे तो उस वक़्त वोही इ़मामा शरीफ़ बांध रखा था जो सरकारे मदीना صَلَّی اللہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने अपने मुबारक हाथों से उन के सर पर सजाया था।[2]

रसूलुल्लाह صَلَّی اللہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के मुबारक हाथों से इ़मामा शरीफ़ का ताज सर पर सजाने वाले येह जलीलुल क़द्र सहाबी ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुर्रहमान बिन औ़फ़ رَضِیَ اللہُ عَنْہ थे।

आप उन दस ख़ुश नसीब सहाबए किराम में से एक हैं जिन्हें रह़मते आ़लम صَلَّی اللہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने एक ही मजलिस में जन्नत की बिशारत अ़त़ा फ़रमाई। एक साथ जन्नत की ख़ुश ख़बरी पाने वाले उन ख़ुश नसीब सहाबए किराम عَلَیْہِمُ الرِّضْوَان को **"अ़शरए मुबश्शरा"** कहा जाता है।

नसब नामा आप رَضِیَ اللہُ عَنْہ का पूरा नाम अ़ब्दुर्रह़मान बिन औ़फ़ बिन अ़ब्दे औ़फ़ बिन अ़ब्दे बिन ह़ारिस बिन ज़ोहरा बिन किलाब बिन मुर्रह क़ुरशी ज़ुहरी जब कि आप की कुन्यत अबू मुहम्मद है। क़ुरैश के ख़ानदान बनू ज़ोहरा से तअ़ल्लुक़ रखते थे।

पैदाइश आप رَضِیَ اللہُ عَنْہ उ़म्र में मोहसिने काइनात, फ़ख़्रे मौजूदात صَلَّی اللہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم से तक़रीबन दस साल छोटे थे। आप رَضِیَ اللہُ عَنْہ आमुल फ़ील के दस साल बाद मक्का में पैदा हुए जब कि मक्की मदनी सरकार صَلَّی اللہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم वाक़िअ़ए फ़ील के साल दुनिया में तशरीफ़ लाए।

नाम तब्दील फ़रमा दिया ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुर्रह़मान बिन औ़फ़ رَضِیَ اللہُ عَنْہ ख़ुद फ़रमाते हैं कि पहले मेरा नाम अ़ब्दे अ़म्र था मगर जब इस्लाम की दौलत नसीब हुई तो नबिय्ये करीम صَلَّی اللہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने मेरा नाम तब्दील फ़रमा दिया।[3]

औलाद व अज़्वाज आप رَضِیَ اللہُ عَنْہ ने यके बाद दीगरे मजमूई त़ौर पर कमो बेश 15 निकाह़ फ़रमाए जिन से आप के यहां 20 बेटों और 8 बेटियों की विलादत हुई।[4]

हुलिया मुबारका आप رَضِیَ اللہُ عَنْہ का जिस्मानी हुलिया कुछ यूं था : रंगत सुर्ख़ी माइल सफ़ेद, चेहरा चांद जैसा ह़सीन, गाल गुलाब की त़रह नर्म व मुलाइम, आंखें कुशादा और लम्बी पल्कों वाली, नाक लम्बी और ख़ुशनुमा, हथेलियां और उंगलियां मोटी मोटी थीं, नीज़ दाढ़ी शरीफ़ और सर के बाल आख़िर उ़म्र तक सियाह ही रहे।[5]

ह़याते मुबारका की चन्द झल्कियां ह़ज़रते सय्यिदुना इमाम अबू नुऐ़म رَحْمَۃُ اللہِ عَلَیْہ (वफ़ात : 430 हि.) ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुर्रह़मान बिन औ़फ़ رَضِیَ اللہُ عَنْہ की मुबारक ह़यात की कुछ झल्कियां यूं बयान करते हैं : ❁ ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुर्रह़मान बिन औ़फ़ رَضِیَ اللہُ عَنْہ फ़राख़दस्ती व मालदारी में सादा ज़िन्दगी बसर करते ❁ अपना मालो दौलत अल्लाह पाक की राह में ख़र्च कर देते ❁ माल की वज्ह से आने वाली आज़माइश व सरकशी से अल्लाह की पनाह त़लब करते ❁ ख़ुशी हो या ग़म हर ह़ाल में अल्लाह पाक से ही लौ लगाए रखते ❁ ग़रीबों और मिस्कीनों पर अपना मालो दौलत लुटाते ❁ फ़क़ीरों और नादारों पर ख़र्च करने में मालदारों के लिये एक नमूना की ह़ैसिय्यत रखते थे।[6] ❁ आप ज़मानए

जाहिलिय्यत में भी शराब को ह़राम जानते थे।[7]

सख़ावत की चन्द झल्कियां ◉ हुज़ूर صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की ह़यात शरीफ़ में आप ने एक बार चार हज़ार दीनार ख़ैरात किये ◉ एक बार चालीस हज़ार दीनार राहे ख़ुदा में दिये ◉ एक बार पांच सौ घोड़े मुजाहिदों को दिये ◉ एक बार डेढ़ हज़ार ऊंट राहे ख़ुदा में दिये ◉ वफ़ात के वक़्त पचास हज़ार दीनार ख़ैरात करने की वसिय्यत की ◉ एक बार आप رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہ बीमार हुए तो अपना तिहाई माल ख़ैरात करने की वसिय्यत की मगर बाद में आराम हो गया तो वोह माल ख़ुद ही ख़ैरात कर दिया ◉ एक बार सह़ाबा से कहा कि जो अहले बद्र से हो उसे फ़ी कस चार सौ दीनार मैं दूंगा ◉ एक बार एक दिन में डेढ़ लाख दीनार ख़ैरात किये, रात को ह़िसाब लगाया। फिर बोले कि मेरा सारा माल मुहाजिरीन व अन्सार पर सदक़ा है ह़त्ता कि फ़रमाया : मेरी क़मीस फ़ुलां को और मेरा इ़मामा फ़ुलां को। ह़ज़रते जिब्रीले अमीन عَلَیْہِ السَّلَام ह़ाज़िर हुए। अ़र्ज़ किया : या रसूलल्लाह ! अ़ब्दुर्रह़मान के सदक़ात क़बूल, उन्हें बे ह़िसाब जन्नती होने की ख़बर दीजिये ◉ आप رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہ ने तीस हज़ार ग़ुलाम आज़ाद किये ◉ उम्महातुल मोमिनीन की ख़िदमत में एक बाग़ पेश किया (जो चार लाख दिरहम में फ़रोख़्त हुवा)।[8]

अ़ज़ीम सआ़दत ह़ज़रते मुग़ीरा बिन शुअ़बा رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہ से मरवी है कि ग़ज़्वए तबूक से वापसी पर एक जगह शहंशाहे मदीना, क़रारे क़ल्बो सीना صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم तशरीफ़ लाए तो सह़ाबए किराम عَلَیْہِمُ الرِّضْوَان ह़ज़रते अ़ब्दुर्रह़मान बिन औ़फ़ رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہ की इक़्तिदा में नमाज़े फ़ज्र अदा फ़रमा रहे थे, एक रकअ़त मुकम्मल हो चुकी थी, जब ह़ज़रते अ़ब्दुर्रह़मान बिन औ़फ़ رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہ ने सरकार صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की मौजूदगी को मह़सूस किया तो पीछे हटने लगे लेकिन आप ने इशारे से मना फ़रमा दिया, ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुर्रह़मान बिन औ़फ़ رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہ ने नमाज़ जारी रखी और दूसरी रकअ़त मुकम्मल कर के सलाम फेर दिया, सरकार صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم खड़े हो गए और अपनी नमाज़ को मुकम्मल फ़रमाया।[9]

ओ़हदा मिलने की ख़बर पर बेक़रारी अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़स्माने ग़नी رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہ को जब नक्सीर का आ़रिज़ा लाह़िक़ हुवा और शिद्दत इख़्तियार कर गया तो आप ने अपने कातिब ह़ज़रते ह़मरान رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہ को बुला कर फ़रमाया : मेरे बाद मस्नदे ख़िलाफ़त के लिये अ़ब्दुर्रह़मान बिन औ़फ़ का नाम लिखो। ह़ज़रते ह़मरान رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہ इस हुक्म पर अ़मल करने के बाद ह़ज़रते अ़ब्दुर्रह़मान बिन औ़फ़ رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہ के पास गए और उन्हें कहा : मेरे पास आप के लिये एक ख़ुशख़बरी है। आप ने पूछा : वोह क्या ? उन्हों ने जवाब दिया : अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़स्माने ग़नी رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہ ने अपने बाद ख़िलाफ़त के लिये आप का नाम मुन्तख़ब फ़रमाया है। येह सुन कर आप رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہ एक दम बेक़रार हो गए और मस्जिदे नबवी में रौज़ए अनवर और मिम्बर मुबारक के दरमियान खड़े हो कर यूं दुआ़ की : ऐ मेरे मौला ! अगर वाक़ेई़ अमीरुल मोमिनीन ने अपने बाद मुझे ख़िलाफ़त के लिये मुन्तख़ब फ़रमाया है तो मुझे उन से पहले ही मौत अ़ता फ़रमा। आप की येह दुआ़ क़बूल हुई और छे माह के अन्दर अन्दर ह़ज़रते उ़स्माने ग़नी رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہ से पहले ही आप का इन्तिक़ाल हो गया।[10]

विसाले पुर मलाल ह़ज़रते अ़ब्दुर्रह़मान बिन औ़फ़ رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہ का इन्तिक़ाल 31 या 32 हिजरी में अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़स्माने ग़नी رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہ के दौरे ख़िलाफ़त में हुवा, इन्तिक़ाल के वक़्त आप की उ़म्र 75 साल थी। आप رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہ की नमाज़े जनाज़ा अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते उ़स्मान ग़नी رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہ ने पढ़ाई।[11]

मज़ारे पुर अनवार आप رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہ के इन्तिक़ाल के वक़्त उम्मुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदतुना आ़इशा सिद्दीक़ा رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہَا ने आप के पास येह पैग़ाम भेजा कि अगर आप चाहें तो आप की तदफ़ीन रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم और आप के दोनों भाइयों (यानी सिद्दीक़ व फ़ारूक़ رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہُمَا) के पहलू में कर दी जाए ? आप ने जवाबन इरशाद फ़रमाया : मैं आप पर आप के घर को तंग नहीं करना चाहता, मैं ने उ़स्मान बिन मज़ऊ़न से अ़हद किया था कि हम में से जो भी (बाद में) वफ़ात पाएगा वोह अपने दोस्त के पहलू में दफ़्न किया जाएगा।

येही वज्ह है कि ह़ज़रते उ़स्मान बिन मज़ऊ़न और ह़ज़रते अ़ब्दुर्रह़मान बिन औ़फ़ رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہُمَا के मज़ारात जन्नतुल बक़ीअ़ में शहज़ादए रसूल ह़ज़रते सय्यिदुना इब्राहीम رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہ के मुबारक क़ुब्बे में (एक साथ) मौजूद हैं, वहां उन की ज़ियारत करनी चाहिये।[12]

याद रहे कि ख़िलाफ़ते उ़स्मानिया के बाद की हुकूमत ने जन्नतुल बक़ीअ़ और दीगर मक़ामात पर मौजूद मज़ारात को शहीद कर दिया।

---

(1)دیکھیے: شعب الایمان، 5/174، حدیث:6254(2)البدایۃ و النہایۃ، 5/227 (3)معرفۃ الصحابۃ، 1/130، حدیث:455، 456(4)طبقات ابن سعد، 3/94 (5)اسد الغابۃ، 3/500(6)حلیۃ الاولیاء، 1/141 (7)الاصابہ، 4/293 (8)مراٰۃ المناجیح، 8/445(9)طبقاتِ ابن سعد، 3/95، مسلم، ص129، حدیث: 633 (10)تاریخ ابن عساکر، 35/291، 292(11) معجم کبیر، 1/128، حدیث:262 (12)الریاض النضرہ، 2/314۔

ह़ज़रते अ़ब्दुल्लाह رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہُمَا बिन आ़मिर

कम उ़म्री में जिन ख़ुश नसीब बच्चों को अल्लाह पाक के आख़िरी नबी ह़ज़रते मुह़म्मदे मुस्त़फ़ा صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم का सहाबी होने का शरफ़ मिला उन में ह़ज़रते अ़ब्दुल्लाह बिन आ़मिर رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہُمَا भी शामिल हैं, आइये ! उन के बचपन के बारे में पढ़ कर अपने दिलों को महब्बते सहाबए किराम से रौशन करते हैं :

मुख़्तसर तआ़रुफ़ आप ह़ज़रते आ़मिर बिन कुरैज़ और ह़ज़रते दजाजा बिन्ते अस्मा बिन अस्सलत के बेटे और मुसलमानों के तीसरे ख़लीफ़ा ह़ज़रते उ़स्माने ग़नी के मामूं ज़ाद भाई हैं, आप की विलादत 4 हिजरी में मक्कए मुकर्रमा में हुई (رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہُمْ اَجْمَعِیْن)।[1]

हुज़ूर ने दम किया और घुट्टी दी रसूले करीम صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم जब उ़मरए क़ज़ा के लिये सिने 7 हिजरी में मक्कए मुकर्रमा तशरीफ़ लाए, तो ह़ज़रते अ़ब्दुल्लाह को आप صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की बारगाह में पेश किया गया, उस वक़्त ह़ज़रते अ़ब्दुल्लाह बिन आ़मिर 3 साल के थे, हुज़ूरे अकरम صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने आप को घुट्टी दी, आप के मुंह में अपना लुआ़बे दहन डाला, आप पर दम किया और फ़रमाया : येह हमारा बेटा है और तुम सब से ज़ियादा हमारे मुशाबेह है।[2]

रिवायते ह़दीस आप رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہ से ह़दीस शरीफ़ भी मरवी है,[3] चुनान्चे आप رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہ फ़रमाते हैं कि नबिय्ये करीम صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : जो शख़्स अपने माल की वज्ह से मार दिया जाए तो वोह शहीद है।[4]

मशहूर मुफ़स्सिर ह़ज़रते मुफ़्ती अह़मद यार ख़ान رَحْمَۃُ اللّٰہِ عَلَیْہ फ़रमाते हैं : चोर या डाकू या किसी और ज़ालिम ने उस का माल छीनना चाहा उस ने दिफ़ाअ़ के त़ौर पर उस से जंग की और मारा गया तो येह शख़्स शहीद होगा कि ज़ुल्मन क़त्ल हुवा है।[5]

विसाल हुज़ूरे अकरम صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के विसाले ज़ाहिरी के वक़्त आप رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہ तक़रीबन 7 साल के थे। आप رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہ का विसाल ह़ज़रते अमीरे मुआ़विया رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہ के दौरे ख़िलाफ़त में सिन 59 हिजरी में हुवा।[6]

अल्लाह पाक की उन पर रह़मत हो और उन के सदक़े हमारी बे हिसाब मग़्फ़िरत हो। اٰمِیْن بِجَاہِ خَاتَمِ النَّبِیّٖن صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم

---

(1)طبقات ابن سعد، 5/32، 33 (2)دیکھئے: طبقات ابن سعد، 5/33- الاصابۃ فی تمییز الصحابۃ، 5/14 (3)سیر اعلام النبلاء، 4/215 (4)مستدرک للحاکم، 8/304، حدیث:6842 (5)مراٰۃ المناجیح، 5/250 (6)دیکھئے: طبقات ابن سعد، 5/36-اعلام للزرکلی، 4/94۔

अपने बुज़ुर्गों को याद रखिये

मज़ार बाबा रेशी हर्दी हैदर सोहरवर्दी कश्मीरी رَحْمَۃُ اللہِ عَلَیْہ

मज़ार ख़्वाजा मुहम्मद ज़मान कलां सिद्दीक़ी नक़्शबन्दी رَحْمَۃُ اللہِ عَلَیْہ

मज़ार मौलाना ह़ाफ़िज़ मियां मुहम्मद सादिक़ नक़्शबन्दी رَحْمَۃُ اللہِ عَلَیْہ

ज़ुल क़ादतिल ह़राम इस्लामी साल का ग्यारहवां (11) महीना है। इस में जिन औलियाए उ़ज़ाम और उ़लमाए इस्लाम का विसाल या उ़र्स है, उन में से 131 का मुख़्तसर ज़िक्र माहनामा फ़ैज़ाने मदीना ज़ुल क़ादतिल ह़राम 1438 हि. ता 1445 हि. के शुमारों में किया जा चुका है, मज़ीद 12 का तआ़रुफ़ मुलाह़ज़ा फ़रमाइये :

औलियाए किराम رَحِمَهُمُ اللّٰهُ السَّلَام

1 बाबा रेशीमी मोल साहिब ह़ज़रते हर्दी हैदर सोहरवर्दी कश्मीरी رَحْمَۃُ اللہِ عَلَیْہ तारिकुद्दुनिया, साहिबे करामत वलियुल्लाह और महबूबे आ़लम शैख़ ह़म्ज़ा मख़्दूम सोहरवर्दी कश्मीरी के मुरीद व ख़लीफ़ा थे। उन की पैदाइश 29 रजब 909 हि. और विसाल यकुम ज़ुल क़ादा 986 हि. को हुवा। मज़ार कश्मीर में मर्जए ख़लाइक़ है।[1]

2 सुल्ताने औलिया ख़्वाजा मुह़म्मद ज़मान कलां सिद्दीक़ी नक़्शबन्दी लवारी शरीफ़ رَحْمَۃُ اللہِ عَلَیْہ की पैदाइश 21 रमज़ान 1125 हि. और विसाल 4 ज़ुल क़ादा 1188 हि. में हुवा, आ़लीशान मज़ार लवारी शरीफ़ में है। आप ख़्वाजा अबुल मसाकीन मज़हर ठठवी के मुरीदो ख़लीफ़ा, कसीरुल फ़ैज़, साहिबे करामत और मश्हूर वलियुल्लाह थे। आप के मश्हूर ख़लीफ़ा शैख़ अ़ब्दुर्रहीम गरहोड़ी और जानशीन महबूबुस्सम्द ख़्वाजा गुल मुहम्मद नक़्शबन्दी हैं।[2]

3 ह़ज़रते सय्यिद अह़मद शाह मशहदी क़ादिरी رَحْمَۃُ اللہِ عَلَیْہ साहिबे करामत वलियुल्लाह थे, वालिद का नाम सय्यिद नूर शाह मशहदी है, विसाल 28 ज़ुल क़ादा 1329 हि. को फ़रमाया। मज़ार इह़ाता जामेअ़ मस्जिद ख़ज़रा (हरी मस्जिद) में है।[3]

4 आ़लिमे रब्बानी मौलाना ह़ाफ़िज़ मियां मुहम्मद सादिक़ नक़्शबन्दी رَحْمَۃُ اللہِ عَلَیْہ 1366 हि. में पैदा हुए और 17 ज़ुल क़ादा 1436 हि. को विसाल फ़रमाया, मज़ार मुत्तसिल मद्रसा अनवारुल उ़लूम, पंजाब में है। आप ह़ाफ़िज़े क़ुरआन, फ़ाज़िले दारुल उ़लूम मुहम्मदिया नूरिया रज़विया, मुरीद व तल्मीज़ ह़ाफ़िज़ुल ह़दीस अ़ल्लामा जलालुद्दीन मशहदी, ख़लीफ़ा मियां मुहम्मद ह़यात नक़्शबन्दी नन्कानवी, बानिये जामिअ़तुल ह़मीर लिल बनात और साहिबे तक़्वा बुज़ुर्ग थे।[4]

उ़लमाए इस्लाम رَحِمَهُمُ اللّٰهُ السَّلَام

5 ह़ज़रते इमाम अबू मुहम्मद अ़ब्दुल्लाह बिन मुहम्मद त़ाई उन्दुलुसी क़ुर्तुबी رَحْمَۃُ اللہِ عَلَیْہ की विलादत रमज़ान 603 हि. को हुई और विसाल 11 ज़ुल क़ादा 702 हि. को फ़रमाया। आप मुह़द्दिस व मुस्नद, आ़लिम व अदीब, सुदूक़ व ह़ुस्नुल ह़दीस और इ़ल्मो अ़मल के जामेअ़ और फ़क़ीहे मालिकी थे।[5]

6 मुफ़्ती अलगूं ह़ज़रते मौलाना मुफ़्ती अबूत्तमीज़ अ़ब्दुल अ़ज़ीज़ मुजद्दिदी رَحْمَۃُ اللہِ عَلَیْہ फ़ाज़िले दारुल उ़लूम ह़िज़्बुल अहनाफ़, शागिर्द इमामुल मुह़द्दिसीन मुफ़्ती सय्यिद दीदार अ़ली शाह मुह़द्दिसे अल्वरी और बानिये मद्रसा अ़रबिया इह़यालु उ़लूम हैं। आप ने 10 ज़ुल क़ादा 1380 हि. मुत़ाबिक़ 26 अप्रैल 1961 ई. को विसाल फ़रमाया। ख़लीफ़ए क़ुत़्बे मदीना अ़ल्लामा सय्यिद मह़फ़ूज़ अल ह़क़ शाह ज़ियाई आप के मश्हूर शागिर्द हैं।[6]

7 मौलाना ताजुद्दीन अह़मद इरफ़ानी मुजद्दिदी رَحۡمَۃُ اللّٰہِ عَلَیۡہ एक बुलन्द पाया शाइर, बेहतरीन सह़ाफ़ी, मुसन्निफ़ कुतुबो रसाइल और साहिबे दीवान अदीब थे। आप की विलादत जुमादल उख़रा 1301 हि. और विसाल 3 ज़ुल क़ादा 1378 हि. मुत़ाबिक़ 11 मई 1959 ई. को हुवा, तदफ़ीन क़ब्रिस्तान मियानी साहिब में इह़ात़ए अ़ल्लामा त़ाहिर बन्दगी मुजद्दिदी में की गई। आप ने मुतअ़द्दद माहनामे, हफ़्तावार और यौमिया अख़बारात जारी किये, जिन में माहनामा अल मुजद्दिद, रिसाला क़तील नाज़, यौमिया इमाम, हफ़्तावार अनवारुल आज़म, अख़बार निश्तर और अख़बार हन्टर शामिल हैं। तसानीफ़ में आफ़ताबे ताज, बहारे जावेदां, अनवारे सिद्दीक़ी, अनवारे फ़ारूक़ी, और तहज़ीबे क़ादियानी क़ाबिले ज़िक्र हैं।[7]

8 ह़ज़रते मौलाना मुह़म्मद नईमुल्लाह ख़ां छपरवी رَحۡمَۃُ اللّٰہِ عَلَیۡہ नाइबे मोहतमिम दारुल उ़लूम जामिआ़ ह़बीबिया इलाहाबाद, सेक्रेटरी मस्जिदे आज़म दरियाबाद, साहिबे इस्तिक़ामत, मुरीद व शागिर्द मुजाहिदे मिल्लत अ़ल्लामा ह़बीबुर्रह़मान इलाहाबादी, जज़्बए ईमानी से सरशार और कारकुन ऑल इंडिया तब्लीग़ सीरत थे, आप का विसाल 5 ज़ुल क़ादा 1382 हि. को हुवा। तदफ़ीन क़ब्रिस्तान इलाहाबाद (प्रयाग राज) यूपी हिन्द में की गई।[8]

9 सय्यिदुस्सादात ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना सय्यिद फ़ज़्ल हुसैन शाह नक़्शबन्दी क़ादिरी رَحۡمَۃُ اللّٰہِ عَلَیۡہ की विलादत मुईनुद्दीन सय्यिदां, पंजाब में ग़ालिबन 1325 हि. में हुई और यहीं 19 ज़ुल क़ादा 1390 हि. को विसाल फ़रमाया, तदफ़ीन मक़ामी क़ब्रिस्तान में की गई। आप जय्यिद आ़लिमे दीन, फ़ाज़िले दारुल उ़लूम ह़िज़्बुल अह़नाफ़, मुरीद व तल्मीज़ इमामुल मुह़द्दिसीन मुफ़्ती सय्यिद दीदार अ़ली शाह मुह़द्दिसे अल्वरी और माहनामा मुईनुद्दीन के एडीटर थे।[9]

10 ख़त़ीबुल अ़स्र ह़ज़रते मौलाना ह़ाफ़िज़ मुह़म्मद मसऊद अह़मद देहलवी رَحۡمَۃُ اللّٰہِ عَلَیۡہ की पैदाइश 1325 हि. को देहली में हुई। आप ह़सीनो जमील, ज़हीनो फ़त़ीन फ़ाज़िले दारुल उ़लूम नईमिय्या मुरादाबाद, इमामो ख़त़ीब साबिरी मस्जिद और वाइ़ज़े दिलपज़ीर थे। आप का विसाल 22 ज़ुल क़ादा 1406 हि. में हुवा। मश्हूर आ़लिमे दीन मुफ़्ती जमील अह़मद नईमी رَحۡمَۃُ اللّٰہِ عَلَیۡہ आप के दामाद हैं।[10]

11 ह़ज़रते मौलाना ह़ाफ़िज़ मुह़म्मद मन्ज़ूरुल ह़क़ सियालवी رَحۡمَۃُ اللّٰہِ عَلَیۡہ की पैदाइश 1357 हि. में पंजाब के इ़ल्मी घराने में हुई, दारुल उ़लूम अमजदिया से फ़ारिग़ुत्तह़सील हुए, दुबई में दीनी ख़िदमात सर अन्जाम दीं, विसाल 27 ज़ुल क़ादा 1412 हि. को हुवा, मक़ामे पैदाइश में तदफ़ीन की गई।[11]

12 यादगारे अस्लाफ़ ह़ज़रते मौलाना मुह़म्मद बशीर क़ादिरी बरकाती رَحۡمَۃُ اللّٰہِ عَلَیۡہ सय्यिदुल मुह़द्दिसीन ह़ज़रते शाह अबुल बरकात सय्यिद अह़मद क़ादिरी के मुरीदो ख़लीफ़ा, दारुल उ़लूम ह़िज़्बुल अह़नाफ़ के फ़ारिग़ुत्तह़सील, ख़ुद्दार व क़नाअ़त पसन्द, इ़ल्मो तक़्वा के जामेअ़ और इमामो ख़त़ीब जामेअ़ मस्जिद ह़न्फ़िया रज़विय्या थे। आप की पैदाइश मौज़अ़ पड़ी दरवेज़ा पंजाब में 1340 हि. को एक दीनी घराने में हुई और 12 ज़ुल क़ादा 1424 हि. को विसाल फ़रमाया। तसानीफ़ में दो कुतुब रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہُ عَلَیۡہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया और क़ुरआनी दुआएं (मत़्बूआ़ फ़ीरोज़ सन्ज़) यादगार हैं।[12]

---

(1) वाक़िआ़त कश्मीर, तारीख़े कश्मीर आज़मी, स. 216, 217, लौह़ मज़ार (2) तज़्किरए औलियाए किराम नक़्शबन्दिया लवारी शरीफ़, स. 12 ता 33 (3) तज़्किरए औलिया सिंध, 93 (4) ह़याते सादिक़ अज़ मौलाना तसव्वुर मदनी, स. 38, 39, 44, 97, 107 (5) الوافی بالوفیات، 17/316-الدررالکامنہ، 2/303 (6) तज़्किरए अकाबिर अहले सुन्नत, स. 234 (7) तज़्किरए शोराए जमाअ़तिया, स. 70 ता 74 - تاریخ رفتگان، 2/39-معدن التواریخ، ص9 (8) माहनामा पासबान इलाहाबाद, हिन्द, ज़ुल ह़िज्जा 1382 हि. मुत़ाबिक़ मई 1963 ई. स. 4 ता 6 (9) ह़याते मुह़द्दिसे अल्वरी, स. 452 ता 456 (10) रौशन दरीचे, स. 91 ता 104, अनवारे उ़लमाए अहले सुन्नत सिंध, स. 900 ता 902 (11) तज़्किरए उ़लमाए अहले सुन्नत ज़िलअ़ चकवाल, स. 117 (12) ह़याते मुह़द्दिसे अल्वरी, स. 441 ता 444

बकरी का गोश्त

अल्लाह पाक के आख़िरी नबी ह़ज़रते मुह़म्मदे मुस्त़फ़ा صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم को खानों में गोश्त बहुत ज़ियादा पसन्द था।[1] रसूले करीम صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : गोश्त अहले दुनिया और अहले जन्नत के खानों का सरदार है।[2] एक ह़दीसे पाक में इरशाद फ़रमाया : خَيْرُ الْاِدَامِ اللَّحْمُ وَهُوَ سَيِّدُ الْاِدَامِ यानी बेहतरीन खाना गोश्त है और वोह (गोश्त) खानों का सरदार है।[3]

हु़ज़ूरे अकरम صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने बकरी, दुम्बा, भेड़, ऊंट, ख़रगोश, मुर्ग़, बटेर, मछली का गोश्त तनावुल फ़रमाया है।[4] आप صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم को बकरी के गोश्त में बकरी की दस्ती और शाना बहुत मरग़ूब थे, चुनान्चे ह़ज़रते अबू हुरैरा رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہ फ़रमाते हैं कि मैं ने रसूले करीम صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के सामने गोश्त और सरीद का पियाला रखा, नबिय्ये करीम صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने बकरी की एक दस्ती उठाई, बकरी के गोश्त में आप صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم को दस्ती ज़ियादा पसन्द थी, उसे दांतों से नोच नोच कर तनावुल फ़रमाया।[5] ह़ज़रते अ़ब्दुल्लाह बिन अ़ब्बास رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہُمَا फ़रमाते हैं कि हु़ज़ूरे अकरम صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने बकरी के शाने का गोश्त तनावुल फ़रमाया।[6]

बकरी का शाना छुरी से काट कर तनावुल फ़रमाया

ह़ज़रते अ़म्र बिन उमय्या ज़मरी رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہ फ़रमाते हैं : मैं ने रसूले करीम صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم को बकरी का शाना छुरी से काट कर तनावुल फ़रमाते हुए देखा, नमाज़ के लिये बुलाया गया, तो आप صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم छुरी रख कर खड़े हो गए, आप صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने नमाज़ पढ़ी और (ताज़ा) वुज़ू नहीं फ़रमाया।[7]

पूरी दस्ती भुनी हुई थी, हु़ज़ूरे अनवर صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم छुरी से बोटियां काटते और खाते थे या दांत से नोच कर खाते थे।[8]

तवज्जोह रहे कि अगर बवज्हे ज़रूरत छुरी से गोश्त काट कर खाया जाए कि गोश्त इतना गला हुवा नहीं है कि हाथ से तोड़ा जा सके या दांतों से नोचा जा सके या मसलन मुसल्लम रान भुनी हुई है कि दांतों से नोचने में दिक़्क़त होगी तो छुरी से काट कर खाने में ह़रज नहीं। लेकिन उस से आज कल के छुरी कांटे से खाने की दलील लाना सह़ीह़ नहीं।[9]

बकरी की दस्ती त़लब फ़रमा कर तनावुल फ़रमाई

नबिय्ये करीम صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के आज़ाद कर्दा ग़ुलाम ह़ज़रते अबू राफ़ेअ़ अस्लम رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہ फ़रमाते हैं : मेरे पास बकरी हदियतन भेजी गई उसे हंडिया में डाला, फिर हु़ज़ूरे अकरम صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم तशरीफ़ लाए और फ़रमाया : ऐ अबू राफ़ेअ़ ! येह क्या है ? अ़र्ज़ की : या रसूलल्लाह صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ! येह बकरी है जो हमें हदियतन मिली है, हम ने हंडिया में पका लिया। रसूले करीम صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ

وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : ऐ अबू राफ़ेअ ! हम को एक दस्ती दो। मैं ने दस्ती पेश की, फिर फ़रमाया : दूसरी दस्ती भी दो। मैं ने दूसरी दस्ती भी पेश की। फिर फ़रमाया : ऐ अबू राफ़ेअ ! और दस्ती लाओ। मैं ने अ़र्ज़ की : या रसूलल्लाह صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ! बकरी की दो ही दस्तियां होती हैं। तब उन से हुज़ूरे अकरम صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : अगर तुम ख़ामोशी से हम को दस्ती पर दस्ती देते रहते तो जब तक ख़ामोश रहते, हम को दस्ती पर दस्ती मिलती रहती।[10]

हज़रते मुफ़्ती अहमद यार ख़ान رَحْمَةُ اللّٰهِ عَلَيْه फ़रमाते हैं : मालूम हुवा कि अपने ग़ुलामों या दोस्तों से कोई चीज़ बे तकल्लुफ़ी से मांगना नाजाइज़ नहीं। जिस सुवाल से मना किया गया वोह ज़िल्लत का सुवाल है, हुज़ूरे अनवर صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم को दस्ती पसन्द थी क्यूंकि (दस्ती का गोश्त) गलता भी जल्दी है, लज़ीज़ भी होता है, इस में रेशा यानी धागा भी नहीं होता। ग़ालिबन हुज़ूरे अक़्दस صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के साथ सहाबा رَضِىَ اللّٰهُ عَنْهُم की जमाअ़त होगी और सब के साथ येह गोश्त खाया होगा ? यानी हम मुतालबा किए जाते तुम देते रहते, इसी हंडिया में से सैंकड़ों दस्तियां निकल आतीं। इस से दो मस्अले मालूम हुए : एक येह कि हुज़ूरे अकरम صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के इरशाद पर हर क़िस्म की अश्या आ़लमे ग़ैब से मुहय्या हो जाती हैं। हज़रते त़ल्ह़ा के घर तीन चार सेर गोश्त सैंकड़ों को खिला दिया, बोटियां और शोरबे का पानी और मसालहे आ़लमे ग़ैब ही से आ रहा था। दूसरा येह कि बुज़ुर्गों के सामने ऐसे मौक़अ़ पर इन्कार या तरद्दुद नहीं करना चाहिये, बल्कि बे दरेग़ उन के हुक्म पर अ़मल करना चाहिये, बह़स व इन्कार से फ़ैज़ बन्द हो जाता है।[11]

सहाबए किराम رَضِىَ اللّٰهُ عَنْهُم भी हुज़ूरे अकरम صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की अदा को अदा करने का एहतिमाम फ़रमाते जैसा कि हज़रते उ़स्माने ग़नी رَضِىَ اللّٰهُ عَنْه ने बकरी की दस्ती का गोश्त तनावुल फ़रमाया : अमीरुल मोमिनीन हज़रते उ़स्माने ग़नी رَضِىَ اللّٰهُ عَنْه ने एक दिन मस्जिद के दरवाज़े पर बैठ कर बकरी की दस्ती का गोश्त मंगवाया और खाया और बग़ैर ताज़ा वुज़ू किये नमाज़ अदा की। फिर फ़रमाया कि रसूले करीम صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने भी इसी जगह बैठ कर येही खाया था और इसी त़रह किया था।[12]

सहाबए किराम رَضِىَ اللّٰهُ عَنْهُم बकरी के गोश्त से हुज़ूरे अकरम صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की दावत फ़रमाया करते जैसा कि हज़रते जाबिर ने जौ की रोटी और बकरी के गोश्त से रसूले करीम صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की ज़ियाफ़त की। हज़रते जाबिर رَضِىَ اللّٰهُ عَنْه फ़रमाते हैं कि ग़ज़्वए ख़न्दक़ के मौक़अ़ पर मैं ने एक साअ़ जौ और एक बकरी का बच्चा ज़ब्ह़ कर के खाने का एहतिमाम किया, और नबिय्ये करीम صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की बारगाह में ह़ाज़िर हो कर अ़र्ज़ की : या रसूलल्लाह صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ! मैं ने एक साअ़ जौ के आटे की रोटियां और एक बकरी के बच्चे का गोश्त तय्यार करवाया, आप صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم चन्द अश्ख़ास के साथ चल कर तनावुल फ़रमा लीजिये। येह सुन कर हुज़ूरे अनवर صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : ऐ ख़न्दक़ वालो ! जाबिर ने दावते तआ़म दी है, सब लोग उन के घर पर चल कर खाना खा लें, फिर मुझ से फ़रमाया : जब तक मैं न आ जाऊं रोटी मत पकवाना। रसूले करीम صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم तशरीफ़ लाए गूंधे हुए आटे में अपना लुआ़बे दहन डाल कर बरकत की दुआ़ फ़रमाई और गोश्त की हंडिया में भी अपना लुआ़बे दहन डाल दिया। फिर फ़रमाया : किसी रोटी पकाने वाली को बुला लो ताकि वोह तुम्हारे साथ मिल कर रोटियां पकवाए और हंडिया से पियाले में सालन डाल कर देना, हंडिया चूल्हे से न उतारना। हज़रते जाबिर رَضِىَ اللّٰهُ عَنْه फ़रमाते हैं कि हम एक हज़ार थे सब ने खाना खाया यहां तक कि खाना बच गया और वोह वापस चले गए मगर हमारी हंडिया में सालन पहले की त़रह पक रहा था और हमारे गूंधे हुए आटे से इसी त़रह रोटियां पक रही थीं।[13]

हुज़ूरे अकरम और शैख़ैन की बकरी के गोश्त से ज़ियाफ़त

हज़रते अबू हुरैरा رَضِىَ اللّٰهُ عَنْه फ़रमाते हैं : एक दिन रसूले करीम

हुज़ूरे अकरम صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم हज़रते अबू बक्र और हज़रते उमर के साथ एक अन्सारी सहाबी के घर तशरीफ़ ले गए, वोह घर पर मौजूद नहीं थे, लेकिन उन की बीवी ने उन हज़रात को देख कर ख़ुश आमदीद कहा। नबिय्ये करीम صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने उन से सहाबी के बारे में दरयाफ़्त फ़रमाया, उन्हों ने अ़र्ज़ की, कि वोह मीठा पानी लेने गए हुए हैं, इतने में वोह अन्सारी सहाबी आ गए और उन्हों ने हुज़ूरे अकरम صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم और शैख़ैन को देख कर कहा : اَلْحَمْدُ لِلّٰہ आज मुझ से बढ़ कर ख़ुश क़िस्मत कोई नहीं, जिस के घर ऐसे मुअ़ज़्ज़ज़ मेहमान तशरीफ़ लाए हों, फिर वोह खजूर का एक ख़ोशा लाए, जिस में अध पकी और ख़ुश्क खजूरों के साथ कुछ तर खजूरें भी थीं और हज़रात से अ़र्ज़ की : तनावुल फ़रमाइये। और ख़ुद ने (बकरी ज़ब्ह़ करने के लिये) छुरी उठाई, नबिय्ये करीम صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने उन से फ़रमाया : दूध वाली को ज़ब्ह़ नहीं करना। उन्हों ने बकरी ज़ब्ह़ की, उन ह़ज़रात ने बकरी का गोश्त खाया, खजूरें खाईं और पानी पिया।[14]

हुज़ूरे अकरम صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم बज़ाते ख़ुद बकरी ज़ब्ह़ फ़रमा कर उस का गोश्त दूसरों को भी अ़ता फ़रमाते जैसा कि ह़ज़रते आइशा رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہَا फ़रमाती हैं : रसूले करीम صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم जब कोई बकरी ज़ब्ह़ फ़रमाते थे तो कुछ गोश्त ह़ज़रते ख़दीजा رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہَا की सहेलियों के घरों में ज़रूर भेजा करते थे।[15]

बकरी के गोश्त से वलीमा फ़रमाया

ह़ज़रते अनस رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہُ फ़रमाते हैं : हुज़ूरे अकरम صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने ह़ज़रते ज़ैनब رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہَا के निकाह़ पर पूरी एक बकरी से वलीमा किया, ऐसा वलीमा अज़्वाजे मुत़ह्हरात में से किसी का नहीं किया।[16] यानी तमाम वलीमों में येह बहुत बड़ा वलीमा था कि एक पूरी बकरी का गोश्त पका था।[17]

बकरी के गोश्त के त़िब्बी फ़वाइद

ह़कीमों का कहना है कि जानवरों में सब से बेहतर गोश्त बकरी का होता है, बकरी का गोश्त साफ़ ख़ून पैदा करता और गर्म मिज़ाजों के लिये मुफ़ीद है, नीज़ दस्ती का गोश्त हल्का, मुलाइम, लज़ीज़, जल्द गलने, जल्द हज़्म होने वाला और बीमारी से ख़ाली होता है। गर्दन का गोश्त भी उ़म्दा लज़ीज़, जल्द हज़्म होने वाला और हल्का होता है, पुश्त (Back) के गोश्त का रेशा रान से कम मोटा होता है और उस में ख़ून पैदा करने वाले अज्ज़ा मिलते हैं।[18]

---

(1) دیکھیے: اخلاق النبی وآدابہ، ص118، حدیث:597 (2) اِبنِ ماجہ، 4/28، حدیث: 3305 (3) معجم اوسط، 5/322، حدیث:7477 (4) دیکھیے: سیرتِ مصطفٰی، ص586 (5) مسلم، ص106، حدیث:481 (6) بخاری، 1/93، حدیث:207 (7) بخاری، 3/533، حدیث:5422 (8) مراٰۃ المناجیح، 6/19 (9) بہارِ شریعت، 3/368 (10) دیکھیے: مسند امام احمد، 45/172، حدیث:27195 (11) دیکھیے: مراٰۃ المناجیح، 1/312 (12) دیکھیے: مسند امام احمد، 1/495، حدیث:441- کراماتِ عثمانِ غنی، ص8 (13) دیکھیے: بخاری، 3/51، 52، حدیث: 4101، 4102 (14) دیکھیے: مسلم، ص867، حدیث:5313 (15) دیکھیے: بخاری، 2/565، حدیث:3818 (16) بخاری، 3/453، حدیث:5168 (17) بہار شریعت، 3/388 (18) مختلف ویب سائٹ سے ماخوذ۔

नए लिखारी
(New Writers)
नए लिखने वालों के इन्आम याफ़्ता मज़ामीन

तकब्बुर की क़ुरआनी मज़म्मत

शाहिद रज़ा अ़त्तारी
(दर्जए राबिअ़ा जामिअ़तुल मदीना)

क़ुरआने मजीद अल्लाह तआ़ला की नाज़िल कर्दा वोह जामेअ़ किताब है जो इन्सान की इन्फ़िरादी, इज्तिमाई, अख़्लाक़ी और रूहानी ज़िन्दगी की मुकम्मल रहनुमाई करती है। क़ुरआने मजीद इन्सान को अख़्लाक़े ह़सना इख़्तियार करने और बुरे अख़्लाक़ से बचने की वाज़ेह तालीम देता है। इस में जहां आला अख़्लाक़ मसलन तवाज़ोअ़, इख़्लास, सब्र और ह़िल्म की तरग़ीब दी गई है, वहीं उन अख़्लाक़ी बुराइयों से सख़्ती के साथ मना फ़रमाया गया है जो इन्सान को हलाकत की त़रफ़ ले जाती हैं। इन्ही मोहलिक बात़िनी अमराज़ में एक निहायत ख़त़रनाक मरज़ तकब्बुर है।

तकब्बुर से मुराद येह है कि इन्सान अपने आप को दूसरों से बरतर समझे। (مفردات الفاظ القرآن، کبر، ص697)

1 क़ुरआने करीम में मुतकब्बिरीन की सख़्त मज़म्मत की गई और उन्हें अल्लाह पाक की नाराज़ी का मुस्तह़िक़ क़रार दिया गया है। अल्लाह तआ़ला इरशाद फ़रमाता है :

﴿اِنَّهٗ لَا یُحِبُّ الْمُسْتَكْبِرِیْنَ(۲۳)﴾

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : बेशक वोह मग़रूरों को पसन्द नहीं फ़रमाता। (پ14،النحل:23)

2 क़ुरआने मजीद ने वाज़ेह फ़रमाया कि तकब्बुर इन्सान को हिदायत से मह़रूम कर देता है। चुनान्चे इरशादे बारी तआ़ला है :

﴿سَاَصْرِفُ عَنْ اٰیٰتِیَ الَّذِیْنَ یَتَكَبَّرُوْنَ فِی الْاَرْضِ بِغَیْرِ الْحَقِّؕ﴾

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : और मैं अपनी आयतों से उन्हें फेर दूंगा जो ज़मीन में नाह़क़ अपनी बड़ाई चाहते हैं। (پ9،الاعراف:146)

3 तकब्बुर की सब से पहली और इ़ब्रतनाक मिसाल इब्लीस की है, जिस ने मह़ज़ ग़ुरूर और बड़ाई की वज्ह से अल्लाह तआ़ला के ह़ुक्म की नाफ़रमानी की और हमेशा के लिये मर्दूद हो गया। क़ुरआने करीम में इस वाक़िए को यूं बयान किया गया है :

﴿وَ اِذْ قُلْنَا لِلْمَلٰٓىٕكَةِ اسْجُدُوْا لِاٰدَمَ فَسَجَدُوْۤا اِلَّاۤ اِبْلِیْسَؕ-اَبٰى وَ اسْتَكْبَرَ ﱪ وَ كَانَ مِنَ الْكٰفِرِیْنَ(۳۴)﴾

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : और याद करो जब हम ने फ़रिश्तों को ह़ुक्म दिया कि आदम को सज्दा करो तो सब ने सज्दा किया सिवाए इब्लीस के मुन्किर हुवा और ग़ुरूर किया और काफ़िर हो गया। (پ1،البقرۃ:34)

इसी त़रह़ क़ुरआने मजीद में क़ौमे आ़द, क़ौमे समूद और फ़िरऔ़न जैसे सरकश ह़ुक्मरानों का ज़िक्र भी मिलता है जिन्हों ने तकब्बुर और ग़ुरूर की बुन्याद पर अल्लाह के रसूलों की तक्ज़ीब की और बिल आख़िर अ़ज़ाबे इलाही का शिकार हुए।

4 क़ुरआने करीम में येह भी वाज़ेह किया गया है कि मुतकब्बिर लोग क़ियामत के दिन ज़िल्लतो रुस्वाई का सामना

करेंगे। चुनान्चे इरशादे इलाही है :

﴿قِيْلَ ادْخُلُوْۤا اَبْوَابَ جَهَنَّمَ خٰلِدِيْنَ فِيْهَا ۚ فَبِئْسَ مَثْوَى الْمُتَكَبِّرِيْنَ(۷۲)﴾

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : फ़रमाया जाएगा दाख़िल हो जहन्नम के दरवाज़ों में इस में हमेशा रहने तो क्या ही बुरा ठिकाना मुतकब्बिरों का। (پ24، الزمر:72)

5 अल ग़रज़ तकब्बुर एक ऐसा गुनाह है जो इन्सान के ईमान, अख़्लाक़ और अन्जाम सब को तबाह कर देता है। जब कि उस के बर अक्स क़ुरआने मजीद आजिज़ी और तवाज़ोअ़ को महबूब सिफ़त क़रार देता है। अल्लाह पाक ने अपने नेक बन्दों की पहचान बयान करते हुए फ़रमाया :

﴿وَعِبَادُ الرَّحْمٰنِ الَّذِيْنَ يَمْشُوْنَ عَلَى الْاَرْضِ هَوْنًا﴾

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : और रहमान के वोह बन्दे कि ज़मीन पर आहिस्ता चलते हैं। (پ19، الفرقان:63)

लिहाज़ा आदमी तकब्बुर जैसी मोहलिक बीमारी से ख़ुद को बचाए और आजिज़ी व इन्किसारी को अपना शिआर बनाए, क्यूंकि इज़्ज़त, कामयाबी और नजात तकब्बुर में नहीं बल्कि आजिज़ी, तवाज़ोअ़ और तक़्वा में पोशीदा है। लिहाज़ा एक मोमिन के लिये ज़रूरी है कि वोह आजिज़ी व इन्किसारी को अपनाए।

मज़कूरा बाला आयाते करीमा हमारे अज़हान में इस ह़क़ीक़त को वाज़ेह करती हैं कि तकब्बुर इन्सान को हलाकत, गुमराही और अल्लाह तआला की रह़मत से दूरी की तरफ़ ले जाता है।

ख़ल्लाक़े आलम की बारगाह में दुआ गो हूं अल्लाह करीम हमें ज़िन्दगी के बक़िय्या अय्याम तकब्बुर व तमाम बुरे अख़्लाक़ वाले आमाल से बचने की तौफ़ीक़े रफ़ीक़ मर्ह़मत फ़रमाए।

اٰمِيْن بِجَاهِ النَّبِيِّ الْاَمِيْن صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم

ह़िल्म व बुर्दबारी की नबवी तालीमात

अबू सफ़ी मुह़म्मद अ़ली
(दर्जए सादिसा जामिअ़तुल मदीना)

ह़िल्म व बुर्दबारी ऐसा वस्फ़ है जो इन्सान के बातिन की पुख़्तगी और रूह़ की बुलन्दी का पता देता है। रसूले अकरम صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की सीरते तय्यिबा में ह़िल्म व बुर्दबारी इस शान से जल्वागर है कि दुश्मनों के रवय्ये बदल गए, दिल फ़त्ह़ हो गए और सख़्त मिज़ाज लोग भी अख़्लाक़े मुस्तफ़ा صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के सामने झुक गए। अह़ादीसे मुबारका में हम मुसलमानों को भी इन्ही अख़्लाक़ की तालीम दी गई है। आइये ! इसी मुनासबत से 4 फ़रामीने नबवी पढ़िये :

1 **ह़क़ीक़ी त़ाक़त का मेयार :** नबिय्ये करीम صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने त़ाक़त का मेयार बयान करते हुए इरशाद फ़रमाया : لَيْسَ الشَّدِيْدُ بِالصُّرَعَةِ، اِنَّمَا الشَّدِيْدُ الَّذِى يَمْلِكُ نَفْسَهُ عِنْدَ الْغَضَبِ यानी त़ाक़तवर वोह नहीं जो कुश्ती में लोगों को पछाड़ दे, बल्कि त़ाक़तवर वोह है जो ग़ुस्से के वक़्त अपने नफ़्स पर क़ाबू रखे।

(بخاری،4/130،حدیث:6114)

2 **ह़िल्म अल्लाह को मह़बूब है :** ह़िल्म कोई मामूली अख़्लाक़ी वस्फ़ नहीं बल्कि वोह सिफ़त है जो बन्दे को अल्लाह की मह़ब्बत के क़रीब कर देती है। रसूले अकरम صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने अशज अ़ब्दुल क़ैस رَضِىَ اللّٰهُ عَنْه से फ़रमाया : اِنَّ فِيكَ خَصْلَتَيْنِ يُحِبُّهُمَا اللّٰهُ: اَلْحِلْمُ وَالْاَنَاةُ यानी तुम में दो ख़स्लतें ऐसी हैं जिन्हें अल्लाह पसन्द फ़रमाता है : ह़िल्म और बुर्दबारी। (مسلم،ص38،حدیث:117)

3 **ग़ुस्से पर क़ाबू की तल्क़ीन :** एक शख़्स ने अ़र्ज़ किया : या रसूलल्लाह صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ! मुझे कोई वसिय्यत फ़रमाइये। आप صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : لَا تَغْضَبْ यानी ग़ुस्सा न किया करो। उस ने बार बार पूछा, आप صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने हर मरतबा येही इरशाद फ़रमाया : ग़ुस्सा न करो। (بخاری،4/130،حدیث:6116)

येह मुख़्तसर मगर जामेअ़ वसिय्यत दरअस्ल ह़िल्म व बुर्दबारी की असास है, क्यूंकि ग़ुस्सा वोह चिंगारी है जो अ़क़्ल, दीन और तअ़ल्लुक़ात सब को जला देती है।

4 **दर ग़ुज़र और बुलन्दिये दरजात :** नबिय्ये करीम صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इस ग़लत फ़हमी को दूर फ़रमाया कि ह़िल्म व मुआफ और दरगुज़र, इन्सान के लिये ज़िल्लतो कमज़ोरी नहीं बल्कि इज़्ज़त की बुलन्दी है। चुनान्चे इरशाद फ़रमाया : وَمَا زَادَ اللّٰهُ عَبْدًا بِعَفْوٍ، اِلَّا عِزًّا यानी अल्लाह तआला किसी बन्दे

को मुआफ़ करने के सबब ही इ़ज़्ज़त में इज़ाफ़ा फ़रमाता है।

(مسلم،ص1071،حدیث:6592)

ह़िल्म व बुर्दबारी की येह नबवी तालीमात इन्सान के किरदार को निखारती और मुआशरे को अम्नो सुकून अ़ता करती हैं। जो शख़्स हुज़ूर صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के उस्वए ह़सना को अपना लेता है, वोह सख़्तियों, इख़्तिलाफ़ात और ग़लबे में भी आ़जिज़ी व इन्किसारी का मुज़ाहरा करता है। येही वोह अख़्लाक़ी हुस्न है जो दिलों को मुसख़्ख़र करता और दुश्मनों को भी दोस्त बना लेता है। ऐसे किरदार को देख कर ही अहले नज़र रश्क करते हैं, क्यूंकि येह वोह रौशनी है जो बराहेरास्त चराग़े नुबुव्वत صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم से ली गई है।

अल्लाह पाक हमें अह़ादीसे त़य्यिबा पढ़ कर अ़मल की तौफ़ीक़ अ़ता फ़रमाए। اٰمِیْن بِجَاہِ النَّبِیِّ الْاَمِیْن صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم

मुत़ालअ़ए शुरूह़ाते ह़दीस की ज़रूरत व अहमिय्यत

उ़मर फ़ारूक़ अ़त्तारी
(दर्जए सादिसा मर्कज़ी जामिअ़तुल मदीना)

हम सब जानते हैं कि क़ुरआने पाक के बाद हिदायत का दूसरा बड़ा ज़रीआ़ हमारे प्यारे नबी صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की अह़ादीस हैं। लेकिन यहां एक बहुत नाज़ुक मस्अला है जिस की त़रफ़ अक्सर ध्यान नहीं दिया जाता। वोह येह कि क्या ह़दीस के सिर्फ़ अल्फ़ाज़ पढ़ लेना या सादा उर्दू तर्जमा देख लेना काफ़ी है ? अगर हम इन्साफ़ से जाइज़ा लें तो पता चलता है कि दीन की अस्ल समझ बूझ के लिये सिर्फ़ "मतने ह़दीस" काफ़ी नहीं, बल्कि इस की शर्ह़ (Explanation) का मुत़ालआ़ भी बेह़द ज़रूरी है।

इस की मिसाल यूं समझें कि अगर कोई शख़्स मेडीकल की किताब से सिर्फ़ दवाई का नाम पढ़ कर इस्तिमाल कर ले तो नुक़्सान उठा सकता है, उसे डॉक्टर की तशरीह़ व वज़ाह़त की ज़रूरत होती है। बिल्कुल इसी त़रह़, अह़ादीसे मुबारका के अल्फ़ाज़ में मआ़नी का एक समुन्दर छुपा होता है। बाज़ औक़ात ह़दीस का हुक्म किसी ख़ास वक़्त या ख़ास बन्दे के लिये होता है, जिसे "**शाने वुरूद**" कहते हैं। अगर हम शर्ह़ नहीं पढ़ेंगे तो हो सकता है कि हम इस ह़दीस का ग़लत़ मत़लब समझ बैठें।

अल्लाह पाक ने क़ुरआने करीम में भी हमें येही उसूल सिखाया है कि अगर ख़ुद नहीं जानते तो जानने वालों से रुजूअ़ करें। इरशादे बारी तआ़ला है : तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : तो ऐ लोगो इ़ल्म वालों से पूछो अगर तुम्हें इ़ल्म नहीं। (پ14،النحل:43)

शुरूह़ाते ह़दीस दर अस्ल इ़ल्म वालों (मुह़द्दिसीन और फ़ुक़हा) की मेह़नत का निचोड़ हैं। जब हम मिरआतुल मनाजीह़, अशिअ़अतुल लम्आ़त या नुज़्हतुल क़ारी जैसी शुरूह़ाते ह़दीस पढ़ते हैं तो हमें पता चलता है कि सरकार صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के फ़रमान का अस्ल मक़्सद क्या था ? कौन सी ह़दीस नासिख़ है और कौन सी मन्सूख़ ? हमारे अस्लाफ़ ने अपनी ज़िन्दगियां लगा कर येह मोती जमा किये हैं ताकि हम भटक न जाएं।

नबिय्ये करीम صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने भी उस शख़्स के लिये दुआ़ फ़रमाई है जो बात को सुन कर उसे आगे पहुंचाए और साथ ही येह भी फ़रमाया कि बहुत से लोग समझ नहीं रखते। चुनान्चे ह़दीसे पाक में है :

अल्लाह उस बन्दे को तरो ताज़ा रखे जिस ने हम से कोई बात सुनी और फिर उसे याद कर लिया और आगे पहुंचाया जैसा सुना था। क्यूंकि बहुत से लोग जिन तक बात पहुंचाई जाए वोह सुनने वाले से ज़ियादा समझदार होते हैं। (ترمذی،4/298،حدیث:2665)

इस ह़दीस से इशारा मिलता है कि अल्फ़ाज़े ह़दीस याद करने के साथ साथ बात की तह तक पहुंचना चाहिये और बात की तह तक पहुंचने का वाहिद ज़रीआ़ मुस्तनद शुरूह़ात का मुत़ालआ़ है।

ख़ुलासा येह है कि अगर हम चाहते हैं कि हमारी इ़बादात और अ़क़ाइद दुरुस्त रहें और ह़दीस की मुकम्मल और दुरुस्त मालूमात मिलें तो हमें चाहिये कि ह़दीस के मुत़ालए के दौरान उस की मुस्तनद शुरूह़ात को भी अपने मुत़ालए का ह़िस्सा बनाएं।

अल्लाह पाक हमें इ़ल्मे दीन की सह़ीह़ समझ अ़ता फ़रमाए।

اٰمِیْن بِجَاہِ النَّبِیِّ الْاَمِیْن صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم

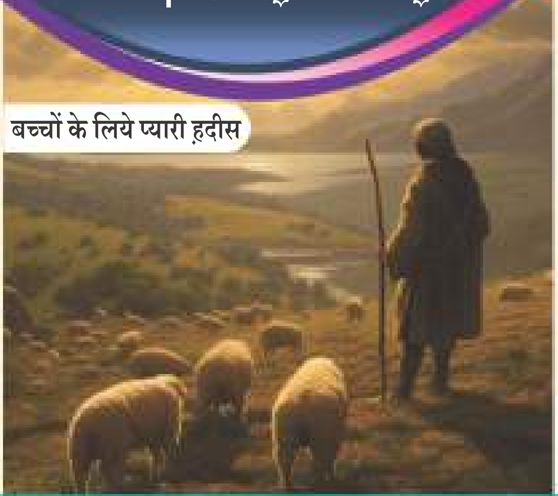

बच्चों के लिये प्यारी ह़दीस

सच की बरकत

अल्लाह पाक के सच्चे नबी ह़ज़रते मुह़म्मद صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : عَلَیْکُمْ بِالصِّدْقِ فَاِنَّ الصِّدْقَ یَھْدِیْ اِلَی الْبِرِّ وَاِنَّ الْبِرَّ یَھْدِیْ اِلَی الْجَنَّۃِ यानी तुम पर सच बोलना लाज़िम है, बेशक सच नेकी की त़रफ़ ले जाता है और नेकी जन्नत तक पहुंचा देती है। (مسلم، ص1078، حدیث:6639)

प्यारे बच्चो ! सच का मत़लब है कि जो बात ह़क़ीक़त में हुई हो, उसी को बयान करना। मसलन अगर ग़लत़ी से कोई चीज़ आप से टूट गई है तो अम्मी या अब्बू के पूछने पर बता दें कि मुझ से ग़लत़ी हो गई, येह चीज़ मुझ से टूट गई। येह सच है। लेकिन अगर आप कहें कि मैं ने नहीं तोड़ी, मुझे नहीं मालूम कैसे टूट गई ? तो येह झूट है।

सच एक नेकी है, सच जन्नत में ले जाने वाला अ़मल है, सच नजात दिलाता है, सच ज़ेहनी सुकून का सबब है, सच इन्सान को बा एतिमाद बनाता है, सच से घर बार में बरकत होती है, सच्चे बच्चे से सब मह़ब्बत करते हैं और उस पर भरोसा करते हैं। सच से कामों में बरकत होती है सच से अल्लाह पाक और उस के रसूल صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم राज़ी होते हैं।

सच्चे चरवाहे का वाक़िआ : एक दिन ह़ज़रते अ़ब्दुल्लाह बिन उ़मर رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہُمَا ने एक ग़ुलाम चरवाहे को देखा जो बकरियां चरा रहा था। उन्हों ने उसे खाने की दावत दी उस ने कहा : मेरा रोज़ा है। आप رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہُ ने उस का इम्तिह़ान लिया और कहा : एक बकरी हमें बेच दो उस की क़ीमत और गोश्त भी आप को देंगे, और मालिक से कह देना कि भेड़िया (Wolf) खा गया। चरवाहे ने फ़ौरन जवाब दिया : तो फिर अल्लाह कहां है ? (यानी अल्लाह तो सब कुछ देख रहा है। उस नौजवान की येह सच्चाई देख कर ह़ज़रते अ़ब्दुल्लाह बिन उ़मर رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہُمَا बहुत ख़ुश हुए और) बाद में आप رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہُ ने उस के मालिक से वोह चरवाहा और सारी बकरियां ख़रीद लीं और चरवाहे को आज़ाद कर दिया और बकरियां उसे तोह़फ़े में दे दीं। (دیکھئے:شعب الایمان،4/329،حدیث:5291)

देखिये ! सच की बरकत से चरवाहे को ग़ुलामी से आज़ादी मिली, और दुन्यावी माल भी ह़ासिल हुवा, अगर हम भी अल्लाह व रसूल के हुक्म पर अ़मल करते हुए सच बोलें तो हमें भी फ़वाइद ह़ासिल होंगे। اِنْ شَآءَ اللّٰہ

अच्छे बच्चो ! आप भी अपनी आ़दत बनाएं कि हमेशा सच बोलें। घर में, स्कूल में, दोस्तों में और खेलते वक़्त हर जगह सच बोलें। अगर होमवर्क नहीं किया तो टीचर को सच बताएं। अगर आप से कोई ग़लत़ी हो जाए तो डरें मत, बल्कि सच सच बता दें। कहते हैं कि "**सांच को आंच नहीं**" यानी सच बोलने वाले को कोई नुक़्सान नहीं पहुंचता वोह हमेशा मह़फ़ूज़ रहता है और सच से दुनिया व आख़िरत के और बहुत सारे फ़वाइद ह़ासिल होते हैं।

अल्लाह पाक हमें हमेशा सच बोलने और झूट से बचने की तौफ़ीक़ अ़ता फ़रमाए। اٰمِیْن بِجَاہِ النَّبِیِّ الْاَمِیْن صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم

आख़िरी नबी का प्यारा मोजिज़ा

चट्टान रेज़ा रेज़ा हो गई

हमारे प्यारे आक़ा صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم का हर मोजिज़ा ईमान में ताज़गी और अ़क़ीदत व महब्बत में इज़ाफ़े का ज़रीआ़ है ख़ुसूसन इन मवाक़ेअ़ के मोजिज़ात जब बज़ाहिर ह़ालात इन्तिहाई दुश्वार हों, वसाइल कम हों और दुश्मन त़ाक़तवर हों, वहां हुज़ूरे अकरम صَلَّی اللّٰہ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم का त़र्ज़े अ़मल हमें सिखाता है कि अल्लाह पाक की मदद के साथ कोई रुकावट, कोई मुश्किल और कोई त़ाक़त ना क़ाबिले शिकस्त नहीं रहती। आइये ! ऐसा ही एक मोजिज़ा मुलाह़ज़ा कीजिये :

यहूदियों ने इस्लाम दुश्मनी की बुनियाद पर ख़ैबर के काफ़िरों के इ़लावा कई दूसरे क़बाइल में जा जा कर इस्लाम के ख़िलाफ़ लश्कर कशी के मुआ़हदे किये और मुख़्तलिफ़ क़बीलों को इस्लाम के मुक़ाबले में अपने साथ मुत्तह़िद कर लिया जब हुज़ूरे अकरम صَلَّی اللّٰہ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم को मालूम हुवा तो आप صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने उन से मुक़ाबले के लिये ख़न्दक़ खोदने का हुक्म दिया इस मौक़अ़ पर जो जंग हुई उसे जंगे ख़न्दक़ कहा जाता है। ह़ज़रते बराअ बिन आ़ज़िब رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہ फ़रमाते हैं : जब रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने ख़न्दक़ खोदने का हुक्म दिया, तो खुदाई के दौरान एक बहुत बड़ी और निहायत सख़्त चट्टान निकल आई जिस पर कुदालें असर नहीं कर रही थीं, हम ने नबिय्ये करीम صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की बारगाह में फ़रियाद की, रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم तशरीफ़ लाए, उस चट्टान को देखा तो अपनी चादर उतार दी, कुदाल ली और बिस्मिल्लाह पढ़ कर ज़र्ब (चोट) लगाई तो चट्टान का एक तिहाई ह़िस्सा टूट गया। आप صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : अल्लाहु अकबर ! मुझे शाम की कुंजियां अ़ता हो गई हैं और अल्लाह की क़सम ! मैं इस वक़्त शाम के सुर्ख़ महल्लात (यानी रूमी सल्त़नत के शाही महल्लात) अपनी आंखों से देख रहा हूं फिर दूसरी ज़र्ब लगाई तो दूसरा तिहाई ह़िस्सा भी टूट गया, फ़रमाया : अल्लाहु अकबर ! मुझे फ़ारस की कुंजियां अ़ता हो गई हैं और अल्लाह की क़सम ! मैं इस वक़्त मदाइन का सफ़ेद मह़ल देख रहा हूं फिर आप صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने बिस्मिल्लाह पढ़ कर तीसरी ज़र्ब लगाई तो चट्टान का बक़िय्या ह़िस्सा भी टूट गया, फ़रमाया : अल्लाहु अकबर ! मुझे यमन की कुंजियां अ़ता हो गईं और अल्लाह की क़सम ! मैं इस वक़्त सन्अ़ा (यानी यमन के दारुल हुकूमत) के दरवाज़े देख रहा हूं।

(देखिये तारीख़े बग़दाद, 1/142)

سُبْحٰنَ اللّٰہ ! अल्लाह पाक ने अपने प्यारे ह़बीब صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم को कैसी त़ाक़त व क़ुव्वत अ़ता फ़रमाई कि जो चट्टान सह़ाबए किराम رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہُم से न टूट सकी आप ने उसे रेज़ा रेज़ा कर दिया, और कैसी बसारत अ़ता फ़रमाई कि आप صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने मदीनए मुनव्वरा से शाम, ईरान और यमन के शाही महल्लात देख कर मुस्तक़्बिल में उन के फ़त्ह़ की ख़ुशख़बरी बयान फ़रमाई जो ह़र्फ़ ब ह़र्फ़ दुरुस्त साबित हुई। येह यक़ीनन आप का अ़ज़ीम मोजिज़ा था।

इस से चन्द बातें सीखने को मिलती हैं :

✲ अल्लाह पाक की राह में पेश आने वाली रुकावटें दर अस्ल बड़ी कामयाबी के दरवाज़े खोलने का ज़रीआ बन जाती हैं।

✲ मुश्किल ह़ालात में क़ाइद का ख़ुद मैदाने अ़मल में आ जाना मा तह़तों की ह़ौसला अफ़्ज़ाई का ज़रीआ बनता है।

✲ जब हम से कोई अपनी मुश्किल की फ़रियाद करे और मदद की तवक़्क़ोअ़ रखे बिल ख़ुसूस छोटे या मा तह़त अफ़राद तो हमें उन की मदद करनी चाहिये और उम्मीद पर पूरा उतरने की कोशिश करनी चाहिये।

✲ नेक व जाइज़ काम से पहले अल्लाह पाक का नाम लेना उस काम में कामयाबी व बरकत का बाइ़स होता है।

✲ अल्लाह पाक चाहे तो मामूली अस्बाब से भी अ़ज़ीम नताइज पैदा फ़रमा देता है।

✲ अस्ल कामयाबी त़ाक़त व वसाइल से नहीं अल्लाह की मदद से मिलती है।

✲ परेशानी के आ़लम में उम्मीद व कामयाबी की बात करना आला क़ियादत की अ़लामत है।

✲ हुज़ूरे अकरम صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم सिर्फ़ मसाइल ही ह़ल नहीं फ़रमाते थे बल्कि दिलों को भी राह़त व मसर्रत अ़त़ा फ़रमाया करते थे।

✲ वक़्त आने पर हुज़ूरे अकरम صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की पेश गोइयां ह़र्फ़ ब ह़र्फ़ सच साबित हुवा करतीं।

✲ बड़े मक़ासिद के ह़ुसूल के लिये सब्र, ह़ौसला, मेह़नत और अल्लाह पाक पर भरोसा ज़रूरी है।

✲ अल्लाह पाक अपने मुक़र्रब बन्दों को वोह मनाज़िर दिखा देता है जो आ़म आंखों से ओझल होते हैं।

✲ ह़क़ पर क़ाइम रहने वालों के लिये मुस्तक़्बिल की फ़ुतूह़ात पहले ही तै हो चुकी होती हैं।

✲ अल्लाह पाक की क़ुदरत के सामने मज़बूत से मज़बूत चट्टान भी रेज़ा रेज़ा हो जाती है।

ह़ुरूफ़ मिलाइये !

प्यारे बच्चो ! मेहमान बन कर किसी के घर जाना अच्छी बात है, लेकिन एक अच्छा मेहमान वोह होता है जो दूसरों को तक्लीफ़ न दे और अदब व अख़्लाक़ के साथ रहे। आप किसी के हां मेहमान बन कर जाएं तो वहां शोर मचाने और इधर उधर भागने से बचें क्यूंकि इस से मेज़बान को परेशानी होती है। मेज़बान के घर की क़ीमती चीज़ों जैसे बरतन, शोपीस, मोबाइल और इस त़रह की दीगर चीज़ों को बग़ैर इजाज़त हाथ न लगाएं। अगर खेलने के लिये कोई चीज़ लेना चाहें तो पहले इजाज़त लेना ज़रूरी है। खाने पीने के मुआ़मले में भी ख़याल किया जाए, जो चीज़ पेश की जाए उसे शुक्र के साथ क़बूल करना चाहिये, और अगर कोई चीज़ पसन्द न हो तो ना पसन्दीदगी का इज़्हार नहीं करना चाहिये। घर में सफ़ाई का ख़याल रखना चाहिये, कचरा इधर उधर नहीं फेंकना चाहिये। जब वापस जाने लगें तो मेज़बान का शुक्रिया अदा करें और दुआ़ दें।

आप ने ऊपर से नीचे, दाएं से बाएं, ह़ुरूफ़ मिला कर पांच अल्फ़ाज़ तलाश करने हैं जैसे टेबल में लफ़्ज़ "مکہ" तलाश कर के बताया गया है। तलाश किये जाने वाले 5 अल्फ़ाज़ येह हैं :

1 میزبان 2 اخلاق 3 شکر 4 قبول 5 مہمان۔

ت	ر	ز	س	ع	ی	ن	ر	ا
ڑ	ش	ت	ق	ل	و	ب	ق	ک
م	ک	ا	پ	ک	ہ	ا	ت	ی
س	ر	ج	ق	ج	ل	ر	م	ن
ت	ش	ر	ہ	ک	م	و	ش	ا
ن	ا	ب	ز	ی	م	س	م	خ
ر	ح	ا	ا	ن	ھ	گ	ح	ل
م	و	ش	ز	ط	ر	س	و	ا
ا	ن	ا	م	ہ	م	خ	خ	ق

मक़ामे ख़न्दक़

तेज़ आंधी वाली जंग

बच्चों की दिलचस्पी तो पहले ही इस्लामिय्यात के लेक्चर में बहुत ज़ियादा होती थी लेकिन आज कल मज़ीद बढ़ चुकी थी क्यूंकि तारीख़े इस्लामी से मुतअ़ल्लिक़ बाब (Chapter) शुरूअ़ हो चुका था तो जैसे जैसे इस्लामी तारीख़ से आगाही बढ़ती जा रही थी वैसे वैसे उन्हें अपने मुसलमान होने पर फ़ख़्र भी बढ़ता जा रहा था।

सर बिलाल का कहना था कि तारीख़ भी आईने (Mirror) की त़रह होती है जिस में इन्सान ख़ुद को पहचान कर अपनी इस्लाह़ और तामीर कर सकता है। सर ने आज क्लास में आते ही व्हाइट बोर्ड पर बाब के नाम के साथ साथ आज के सबक़ का उ़नवान भी लिख दिया था : तारीख़े इस्लामी : ग़ज़्वए ख़न्दक़

तो बच्चो बात है आज से चौदह सौ साल पुरानी जब नबिय्ये करीम صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم को मदीनए पाक की त़रफ़ हिजरत किये पांच बरस गुज़र चुके थे उन पांच बर्सों में भी इस्लाम के दुश्मनों ने नबिय्ये करीम صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم और आप के साथी सह़ाबा को अम्नो सुकून के साथ न रहने दिया था कभी बद्र के मैदान में तो कभी उहुद पहाड़ के दामन में पूरी जंगी क़ुव्वत के साथ मुसलमानों से मुक़ाबला करने आए लेकिन हर बार मुंह की खानी पड़ी, आख़िर पांचवें बरस मदीना से निकाले हुए यहूदियों ने क़ुरैशे मक्का से मुलाक़ात की और चन्द दूसरे क़बीलों को भी साथ मिला कर सब को एक प्लेट फ़ॉर्म पर जमा कर के इत्तिह़ादी फ़ौज (Allied Forces) तय्यार की, इसलिये उसे जंगे अह़ज़ाब कहते हैं, क्यूंकि अह़ज़ाब का माना है कई जमाअ़तें और यहां भी बहुत सारी जमाअ़तें मिल गई थीं। तारीख़ में लिखा है कि उस फ़ौज की तादाद दस हज़ार थी और बिल आख़िर ज़ुल क़ादा के महीने में येह बड़ा लश्कर मुसलमानों पर धावा बोलने के इरादे से मदीनए पाक की त़रफ़ चल पड़ा।[1]

सर ये ज़ुल क़ादा का महीना कौन सा होता है ? एक बच्चे ने पूछा।

सर बिलाल : बच्चो ! ईदुल अज़्ह़ा यानी बड़ी ईद से पहले वाला महीना ज़ुल क़ादा कहलाता है। तो अ़रब की पूरी तारीख़ में किसी क़ौम के ख़िलाफ़ इतने बड़े लश्कर ने ह़म्ला नहीं किया था, इस लश्कर की ख़बर मदीने पाक पहुंची तो अल्लाह पाक के आख़िरी नबी صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने मन्सूबा बन्दी शुरूअ़ कर दी और सह़ाबए किराम को जमा कर के मश्वरा मांगा कि कैसे इतने बड़े लश्कर का मुक़ाबला किया जाए ?

ह़ज़रते सलमान फ़ारसी जो अ़रब के बाहर से आए थे, उन्हों ने बड़ा दिलचस्प मश्वरा दिया, “या रसूलल्लाह ! फ़ारस में जब हमारा मुह़ासरा किया जाता था तो हम ख़न्दक़ खोदते थे।” प्यारे आक़ा صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इस मश्वरे को क़बूल फ़रमा लिया और तीन हज़ार सह़ाबा का लश्कर ले कर आप मदीना में ही एक पहाड़ के पास आ ठहरे, पीछे से तो पहाड़ की ढाल थी लिहाज़ा सामने की त़रफ़ ख़न्दक़ बनाने का काम शुरूअ़ हो गया।[2]

रेह़ान : सर येह ख़न्दक़ क्या होता है ?

सर बिलाल : बच्चो ! दुश्मन के ह़म्ले से बचाव के लिये ज़मीन खोद कर मोर्चे बनाए जाते हैं, इसे अंग्रेज़ी ज़बान में Trench भी कहते हैं। तो तक़रीबन छे दिनों में ख़न्दक़ खोद ली गई, प्यारे नबी صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने ख़ुद भी इस काम में ह़िस्सा लिया।[3]

उसैद रज़ा : इसी लिये सर किताब में इस ग़ज़्वे का नाम ग़ज़्वए ख़न्दक़ लिखा हुवा है।

सर बिलाल : बिल्कुल दुरुस्त बेटा, जंगे अह़ज़ाब का दूसरा नाम ग़ज़्वए ख़न्दक़ भी है, बहरहाल जब दस हज़ार सिपाही लिये दुश्मन की जंगी फ़ौज मदीना ह़म्ले करने पहुंची तो सामने ख़न्दक़ देख कर हैरान व परेशान खड़ी रह गई, इस्लाम और मुसलमानों को दुनिया से मिटाने की उन की सारी उम्मीदों और इरादों के सामने ख़न्दक़ आड़ बन गई थी, कुछ सोच कर उन्हों ने ख़न्दक़ के पास ही फ़ौज के मोर्चे बना लिये। बाज़ ने तंग जगह से ख़न्दक़ उ़बूर करने की कोशिश भी की और उन में से कुछ का कामयाब भी हुए मगर ख़न्दक़ के इस पार आख़िरी नबी صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के जां निसारों के हाथों अपने अन्जाम को पहुंचे। कुछ रोज़ दोनों जानिब से एक दूसरे की फ़ौज पर तीर अन्दाज़ी की गई इस के इ़लावा बा क़ाइ़दा जंग न हो सकी।[4] मुसलमान तो चलो अपने शहर में ही थे लेकिन ग़ैर मुस्लिम फ़ौज के सिपाही अपने अपने घरों को छोड़ कर आए हुए थे फिर आगे से नतीजा भी मन चाहा नहीं मिल रहा था बल्कि ख़ूराक का जो ज़ख़ीरा साथ लाए थे उस के ख़त्म होने और आपस में एक दूसरे से दग़ाबाज़ी की ख़बरों ने दस हज़ार होते हुए भी ग़ैर मुस्लिम सिपाहियों को बद दिल कर दिया था और इन सब पर आख़िरी ज़र्ब अल्लाह पाक के करम से येह लगी कि ऐसी सख़्त आंधी आई कि देगें चूल्हों पर से उलट पलट हो गईं, ख़ैमे उखड़ उखड़ कर उड़ गए और ग़ैर मुस्लिमों पर ऐसा ख़ौफ़ त़ारी हुवा कि सिवाए भागने के उन्हें कुछ न सूझा, चुनान्चे अर्रह़ील अर्रह़ील (चलो ! चलो !) की सदाओं में मुश्रिकीन दुम दबा कर भाग निकले और यहूदी भी अपने क़ल्ओं की त़रफ़ चल दिये, अब मदीनतुर्रसूल की सर ज़मीन इस नापाक लश्कर के वुजूद से पाक साफ़ हो चुकी थी और इस्लामी लश्कर भी वापस घरों को लौट आया।[5]

तो बच्चो ! हमेशा याद रखें कि जब हम अल्लाह का नाम ले कर उस के दीन के लिये निकलते हैं तो फिर अल्लाह पाक की मदद भी ज़रूर पहुंचती है, येह कहते हुए सर बाहर की त़रफ़ चल पड़े।

---

(1)مواہب لدنیہ، 1/238، 239-طبقاتِ ابن سعد، 2/50(2)مغازی للواقدی، 2/445-طبقات ابن سعد، 2/51(3)طبقات ابن سعد، 2/51(4)طبقاتِ ابن سعد، 2/52-سیرتِ ابن ہشام، ص391(5)سیرتِ ابن ہشام، ص395۔

बच्चों और बच्चियों के 6 नाम

सरकारे मदीना صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : आदमी सब से पहला तोह़फ़ा अपने बच्चे को नाम का देता है लिहाज़ा उसे चाहिये कि उस का नाम अच्छा रखे।(جمع الجوامع، 3/285، حدیث:8875)यहां बच्चों और बच्चियों के लिये 6 नाम, उन के माना और निस्बतें पेश की जा रही हैं।

बच्चों के 3 नाम

नाम	पुकारने के लिये	माना	निस्बत
मुह़म्मद	आ़क़िब	सब से आख़िर में आने वाला	रसूले पाक صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का सिफ़ाती नाम
मुह़म्मद	त़ारिक़	रौशन सितारा	सहाबी رَضِیَ اللّٰهُ عَنْه का मुबारक नाम
मुह़म्मद	अख़्तर	सितारा	ताजुश्शरीआ़ मुफ़्ती अख़्तर रज़ा ख़ान رَحْمَةُ اللّٰهِ عَلَيْه का नाम

बच्चियों के 3 नाम

उम्मे सलमा	एतिराफ़ करने वाली की मां	उम्मुल मोमिनीन رَضِیَ اللّٰهُ عَنْهَا का बा बरकत नाम
क़िरसाफ़ा	घूमने वाली चीज़	सहाबिय्या رَضِیَ اللّٰهُ عَنْهَا का बा बरकत नाम
सकीना	इत़मीनान	एक मश्हूर सन्दूक़ का नाम जिस का ज़िक्र क़ुरआने पाक में भी है।

(जिन के हां बेटे या बेटी की विलादत हो वोह चाहें तो इन निस्बत वाले 6 नामों में से कोई एक नाम रख लें।)

बच्चों को नज़र अन्दाज़ मत कीजिये

वालिदैन के लिये इस बात की समझ बूझ बहुत ज़रूरी है कि कब बच्चे को नज़र अन्दाज़ करना है और कब मुनासिब अन्दाज़ में तरबियत करनी है। बाज़ वालिदैन समझते हैं बच्चों को नज़र अन्दाज़ करना मामूली बात है, हालांकि बाज़ मवाक़ेअ पर बच्चों की बात सुनना, उन की त़रफ़ मुतवज्जेह होना और उन की ज़रूरत को समझना बेहद ज़रूरी होता है, जब कि कुछ हालात ऐसे भी होते हैं जहां मामूली बातों को नज़र अन्दाज़ करना तरबियत का हिस्सा होता है।

इस मज़मून में वालिदैन की इस त़रफ़ तवज्जोह दिलाई गई है कि बच्चों को कब नज़र अन्दाज़ करें और कब न करें ? नज़र अन्दाज़ करने के क्या नुक़्सानात हैं ?

नज़र अन्दाज़ करने के अन्दाज़

बच्चों को नज़र अन्दाज़ करना बाज़ औक़ात मामूली बात लगती है लेकिन इस के असरात गहरे होते हैं। चन्द नुमायां त़रीक़े दर्जे ज़ैल हैं :

बच्चों की बात न सुनना बाज़ औक़ात बच्चे अपने दिल की बात कहना जानते हैं लेकिन वालिदैन किसी ग़ैर अहम काम में मसरूफ़िय्यत, या थकन की वज्ह से कह देते हैं कि **"बाद में बात करना"** या बच्चे की बात तवज्जोह से नहीं सुनते जिस की वज्ह से बच्चा अहम बातें भी वालिदैन से शेयर करना पसन्द नहीं करता जो कभी भी किसी नुक़्सान का बाइस बन सकता है।

मोबाइल या टीवी देखने में मसरूफ़ रहना बाज़ वालिदैन की आ़दत होती है कि जो वक़्त बच्चों को देना चाहिये वोह मोबाइल फ़ोन इस्तिमाल करने या टीवी देखने में गुज़ार देते हैं। इस त़रह वालिदैन का बच्चों को नज़र अन्दाज़ करना बच्चों की तरबियत पर मन्फ़ी असर डाल सकता है।

ख़ौफ़, ख़ुशी या ग़म को अहमिय्यत न देना ख़ौफ़, ख़ुशी या ग़म येह बच्चे के एह़सासात हैं। वालिदैन का बच्चों के एह़सासात को नज़र अन्दाज़ करना नुक़्सान देह है। जब बच्चा ख़ौफ़, ख़ुशी या ग़म का इज़्हार करता है तो वालिदैन की त़रफ़ से येह कह कर बात टाल दी जाती है कि **"येह कोई बात नहीं"** या "ऐसी बातों पर रोना या ग़मगीन नहीं होना चाहिये"। वालिदैन का येह रवय्या इन्तिहाई ग़लत़ है।

अच्छाइयों को नज़र अन्दाज़ करना कुछ वालिदैन बच्चों की सिर्फ़ ग़लतियों पर नज़र रखते हैं और उन की ख़ूबियों और अच्छी आ़दात को नज़र अन्दाज़ कर देते हैं। सिर्फ़ ग़लतियों पर डांट डपट करते हैं, अच्छाइयों पर ह़ौसला अफ़ज़ाई नहीं करते।

सुवालात को बोझ समझना बच्चों के सुवालात उन के सीखने की जुस्तजू को ज़ाहिर करते हैं लेकिन बाज़ औक़ात बड़ों को येह सुवालात फ़ुज़ूल या वक़्त का ज़ियाअ मह़सूस होते हैं। बाज़ वालिदैन बच्चों के सुवाल पूछने पर उन को झिड़क देते हैं जिस से बच्चे में सीखने की जुस्तजू आहिस्ता आहिस्ता ख़त्म होने लगती है। वालिदैन को चाहिये कि बच्चों के सुवालात को बोझ समझ कर

नज़र अन्दाज़ न करें।

दूसरों से तक़ाबुल करना बाज़ वालिदैन बच्चों का दूसरों से मुवाज़ना करते हैं जिस से ह़ौसला शिक्नी और नज़र अन्दाज़ करने का पहलू नुमायां होता है।

वक़्त पर रहनुमाई न देना बाज़ वालिदैन बच्चों को यूं भी नज़र अन्दाज़ करते हैं कि वक़्त पर उन को रहनुमाई नहीं देते, तरबियत के अहम मवाक़ेअ़ पर ख़ामोशी इख़्तियार करते हैं।

कब नज़र अन्दाज़ करें ?

बाज़ मुआ़मलात ऐसे भी हैं जिन में नज़र अन्दाज़ करना फ़ायदेमन्द भी होता है। मसलन

छोटी मोटी शरारतें बच्चों से कभी कभी ऐसी मामूली शरारतें हो जाती हैं जिस से न किसी को नुक़्सान होता है और न किसी बड़े मस्अले का सबब बनती हैं, जैसे हल्का फुल्का मज़ाक़, थोड़ा सा शोर, या खेल में हल्की फुल्की गड़बड़। ऐसी सूरत में बार बार डांटने के बजाए अगर वालिदैन नज़र अन्दाज़ करें तो अक्सर बच्चा ख़ुद ही रुक जाता है, क्यूंकि उसे ख़ास तवज्जोह नहीं मिलती।

तवज्जोह ह़ासिल करने की ज़िद बाज़ बच्चे सिर्फ़ तवज्जोह ह़ासिल करने के लिये बिला वज्ह रोना, चीख़ना, ज़िद करना या ज़मीन पर लोटपोट होना शुरूअ़ कर देते हैं। अगर वालिदैन हर बार उन की ज़िद को मान लें तो बच्चा येह आ़दत बना लेता है। ऐसे वक़्त में मुनासिब अन्दाज़ से नज़र अन्दाज़ करना फ़ायदा देता है, ताकि बच्चे को समझ आए कि ज़िद कर के कुछ ह़ासिल नहीं होता।

अन्जाने में होने वाली ग़लती कभी बच्चे से कोई ग़लती लाइल्मी, नासमझी या भूलचूक की वज्ह से हो जाती है, जैसे चीज़ गिर जाना, कोई बरतन गिर कर टूट जाना, पानी गिरा देना या कोई काम ठीक न कर पाना। ऐसी ग़लतियों पर सख़्ती करने के बजाए अगर वालिदैन नज़र अन्दाज़ करें या नर्मी से समझा दें तो येह तरबियत का ह़िस्सा बन सकता है।

इसी त़रह़ कभी ऐसा होता है कि वालिदैन किसी बात पर पहले समझा चुके होते हैं, मगर बच्चा फिर भी कभी कभार वोही मामूली ग़लती दोहरा देता है। अगर हर बार सख़्ती की जाए तो बच्चा ज़िद्दी बन सकता है। ऐसी सूरत में वक़्ती त़ौर पर नज़र अन्दाज़ करना और मुनासिब वक़्त पर दोबारा याद दिहानी करवाना ज़ियादा मुनासिब होता है।

बच्चों की आपस की मामूली नोक झोंक बहन भाइयों के दरमियान हल्की फुल्की तकरार कोई बड़ी बात नहीं है। अगर हर छोटी बात पर वालिदैन बीच में मुदाख़लत करें तो बच्चे ज़ियादा ज़िद्दी और झगड़ालू हो सकते हैं। इस लिये अगर झगड़ा मामूली हो और किसी को तक्लीफ़ न पहुंच रही हो तो बेहतर है कि वालिदैन नज़र अन्दाज़ करें और बाद में मुनासिब मौक़अ़ देख कर समझा दें।

ग़ुस्से में कही गई बातें बच्चे कभी ग़ुस्से में आ कर ऐसे अल्फ़ाज़ कह देते हैं जो नहीं कहने चाहियें। ऐसे वक़्त में बेहतर है कि वालिदैन नज़र अन्दाज़ करें और ख़ामोशी इख़्तियार करें, बच्चे को पुर सुकून होने दें, फिर बाद में महब्बत से समझा दें कि ग़ुस्से में बद तमीज़ी नहीं करनी चाहिये।

नज़र अन्दाज़ करने का नुक़्सान

अगर वालिदैन बच्चों की बात न सुनें, उन की ख़ुशी ग़मी, दुख दर्द और ख़ौफ़ जैसे एहसासात को अहमिय्यत न दें, या उन की अच्छाइयों को मुसलसल नज़र अन्दाज़ करें तो बच्चे एहसासे महरूमी और एतिमाद की कमी के इलावा और भी कई ख़राबियों का शिकार हो सकते हैं।

मोह़तरम वालिदैन ! हर मुआ़मले में नज़र अन्दाज़ करना या बात बात पर सख़्ती करना दुरुस्त नहीं। समझदारी और ह़िक्मत से काम लेते हुए फ़ैसला करना चाहिये कि कब बच्चे को नज़र अन्दाज़ करना है और कब नहीं।

अल्लाह पाक हमें अपने बच्चों की अच्छी तरबियत करने की तौफ़ीक़ अ़ता फ़रमाए।

اٰمِیْن بِجَاہِ النَّبِیِّ الْاَمِیْن صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم

बेटियां और माली मुआमलात की बुन्यादी तालीम

बेटियां अल्लाह पाक की नेमत और घर की रहमत होती हैं। उन की तरबियत और तालीम वालिदैन की अहम तरीन ज़िम्मेदारी है। आज के बदलते हुए दौर में जहां तालीम, शुऊर और ख़ुद एतिमादी की ज़रूरत पहले से कहीं ज़ियादा बढ़ गई है, वहीं माली मुआमलात की बुनियादी तालीम भी बेटियों के लिये निहायत ज़रूरी हो चुकी है।

अगर बेटियों को बचपन से ही पैसे की क़द्र, बचत के उसूल, ख़र्च के तवाज़ुन और मन्सूबा बन्दी की समझ दी जाए तो वोह एक बावक़ार और समझदार ख़ातून बन सकती हैं।

माली तालीम सिर्फ़ हिसाब किताब सीखने का नाम नहीं बल्कि येह ज़िन्दगी के अ़मली फ़ैसलों का शुऊर देती है। जब बेटी को येह इ़ल्म हो कि आमदनी और ख़र्च में तवाज़ुन कैसे रखा जाता है, ग़ैर ज़रूरी चीज़ों से बचत क्यूं ज़रूरी है, और मुस्तक़्बिल के लिये किस त़रह मन्सूबा बन्दी करनी चाहिये, तो वोह न सिर्फ़ अपनी ज़िन्दगी बेहतर बना सकती है बल्कि ज़रूरत पड़ने पर अपने ख़ानदान के लिये भी एक मज़बूत सहारा बन जाती है।

इस्लामी तालीमात माली नज़्मो ज़ब्त और दियानतदारी भी सिखाती हैं। क़ुरआने पाक में बारहा इन्साफ़, तवाज़ुन और अमानतदारी के अह़कामात मिलते हैं। अगर हम अपनी बेटियों को माली इ़ल्म के साथ दीनी उसूलों के मुत़ाबिक़ तरबियत दें, तो वोह एक ऐसी नस्ल को जन्म देंगी जो ईमानदार, समझदार और बाशुऊर होगी।

बेटियों को माली मुआमलात की समझ देना उन की ख़ुद एतिमादी, और बेहतर मुस्तक़्बिल की ज़मानत है। एक माली त़ौर पर बा शुऊर बेटी : आमदनी और अख़राजात का बेहतर इन्तिज़ाम कर सकती है।

बचत, सर्माया कारी और बजट साज़ी जैसे अहम फ़ैसले कर सकती है। माली धोका दही से बच सकती है और दूसरों की मदद भी कर सकती है। शादी के बाद येह सब से ज़ियादा काम आने वाली चीज़ है।

माली मुआमलात की बुनियादी तालीम में क्या शामिल होना चाहिये ?

इन निकात पर तवज्जोह देना ज़रूरी है :

- बुनियादी माली इस्तिलाहात की समझ, जैसे बजट, आमदनी, ख़र्च, बचत, क़र्ज़, मनाफ़ेअ़, ज़कात, सदक़ा वग़ैरा।
- बजट बनाना सिखाना, माहाना आमदनी और अख़राजात का हिसाब रखना, तरजीहात तै करना और फ़ुज़ूल ख़र्ची से बचना।
- बचत की आ़दत डालना, बचपन से ही सेविंग बॉक्स की

अहमिय्यत उजागर करना।

सदक़ा व ज़कात की तरबियत, माली इ़बादात की अहमिय्यत और उन के मुआ़शरती असरात से आगाही देना।

ह़लाल व ह़राम का शुऊ़र, इस्लामी उसूलों के मुत़ाबिक़ ख़र्च और सर्माया कारी की तमीज़ सिखाना।

डिजीटल मालियात की तरबियत, ऑनलाइन बैंकिंग, मोबाइल वोल्ट्स और माली एप्स के मह़फ़ूज़ इस्तिमाल शरई़ रहनुमाई के साथ।

माली शुऊ़र और मुआ़शरती असरात

बेटियों को माली मुआ़मलात की बुनियादी तालीम देना वक़्त की सब से अहम ज़रूरत है। जब बेटियां माली त़ौर पर बा शुऊ़र होंगी तो वोह एक मज़बूत, ख़ुशहाल और मुतवाज़न मुआ़शरा तश्कील दे सकेंगी। दर अस्ल माली तालीम सिर्फ़ पैसे की नहीं, बल्कि ज़िन्दगी संवारने की तालीम है।

हम में से बहुत सी ख़वातीन को मालियाती इन्तिज़ाम करने का त़रीक़ा नहीं सिखाया जाता। फिर भी हर रोज़ हम कमाती हैं, हम ख़र्च करती हैं, हम रक़म देती हैं, वुसूल करती हैं, हम क़र्ज़ लेती हैं और क़र्ज़ देती हैं, मगर येह अन्दाज़ा नहीं होता कि कितना, कैसे और कहां ख़र्च करना है। दूसरे लफ़्ज़ों में येह कहना ग़लत़ नहीं होगा कि कमाना सब को आ ही जाता है मगर ख़र्च करना किसी किसी को आता है।

जिसे ख़र्च करना आता है वोह 100 रुपिये को भी बेहतरीन त़रीक़े से ख़र्च कर सकता है और जिसे ख़र्च करना नहीं आता उस को 1000 भी कम लगेंगे। रियाज़ी आप को सिखाएगी कि शर्ह़ क्या है और इन का ह़िसाब कैसे लगाना है लेकिन मालियाती तालीम आप को इस बात पर ग़ौर करने में मदद करेगी कि 10 फ़ीसद डिस्काउन्ट पर अश्या ख़रीदना एक अच्छा फ़ैसला है या नहीं।

जिन लोगों को माली मुआ़मलात के बारे में सिखाया जाता है वोह ज़ियादा फ़आ़ल त़ौर पर बचत कर सकते हैं, वोह माली त़ौर पर ज़ियादा मुस्बत रवय्ये रखते हैं और माली इन्तिज़ाम में पुर एतिमाद होते हैं।

एतिदाल, तक़्वा और इस्लामी नुक़्तए नज़र

माली मुआ़मलात की तरबियत और माल के लालच में फ़र्क़ भी रखें, सब्र, शुक्र, दरगुज़र, किफ़ायत शिआ़री, तक़्वा व परहेज़गारी तरबियत का लाज़िमी व ज़रूरी ह़िस्सा है। हर बात पैसे पर शुरूअ़ और पैसे पर ख़त्म करना येह इन्तिहाई मज़मूम सिफ़ात में से है। येह बात भी क़ाबिले ग़ौर है कि बचत का मत़लब कन्जूसी नहीं, सख़ावत का मत़लब फ़ुज़ूल ख़र्ची नहीं।

इस्लाम एतिदाल को पसन्द करता है, दुनिया में रहने के लिये कुछ न कुछ माल ज़रूरी है, मगर इस माल की जगह दिल में नहीं बनानी, न ही माल की हवस में अपना आप भूलना है। देखिये माल तो ह़ज़रते उ़स्माने ग़नी رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہ के पास भी था, आप के पास जो माल था वोह कभी आप के दिल में जगह न बना सका। सब उन के जैसा माल तो चाहते हैं मगर उन के जैसी सख़ावत नहीं चाहते।

अपने दिल को दुनिया और माल की बे जा मह़ब्बत से बचाने के लिये हर हफ़्ते की रात नमाज़े इ़शा के बाद मदनी मुज़ाकरे में ह़ासिल होने वाली तरबियत से फ़ायदा उठाएं।

इस्लामी बहनों के शरई मसाइल

1 नफ़्ली तवाफ़ में औरत के चेहरे ढांपने का मस्अला

सुवाल : क्या फ़रमाते हैं उलमाए किराम इस मस्अले के बारे में कि नफ़्ली तवाफ़ में क्या औरत चेहरे का निक़ाब कर सकती है ?

بِسْمِ اللّٰہِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِیْمِ

اَلْجَوَابُ بِعَوْنِ الْمَلِکِ الْوَھَّابِ اَللّٰھُمَّ ھِدَایَۃَ الْحَقِّ وَالصَّوَابِ

जब उमरा या हज की निय्यत से एहराम बांधा हो तो मर्दो औरत दोनों के लिये चेहरा खुला रखना ज़रूरी है। क्यूंकि हालते एहराम में चेहरा न ढांपना एहराम की पाबन्दियों में से हैं। लेकिन जब औरत ने उमरा या हज की निय्यत नहीं की बल्कि वैसे ही नफ़्ली तवाफ़ कर रही है तो अब उस पर एहराम की पाबन्दियां लाज़िम नहीं होंगी। लिहाज़ा ऐसी सूरत में औरत चेहरे को निक़ाब वग़ैरा के ज़रीए छुपा कर तवाफ़ कर सकती है इस में कोई हरज नहीं बल्कि ग़ैर महरमा औरत के लिये हुक्म है कि वोह अजनबी मर्दों की नज़रों से बचने के लिये चेहरा ढांप कर ही नफ़्ली तवाफ़ करे क्यूंकि औरत का चेहरा अगर्चे सत्र में शामिल नहीं लेकिन फ़ी ज़माना फ़ित्ने से बचने और फ़साद की रोक थाम के लिये फ़ुक़हाए किराम ने बग़ैर ज़रूरत जवान औरत का ग़ैर महरम के सामने चेहरा खोलना मम्नूअ क़रार दिया है और उस को छुपाना लाज़िम क़रार दिया है। बल्कि हालते एहराम में भी अजनबियों से पर्दा करने की सूरत बयान फ़रमाई है कि चेहरे के सामने चेहरे से जुदा किसी चीज़ की आड़ कर ले मसलन गत्ता वग़ैरा या हाथ वाला पंखा चेहरे के सामने रखे ताकि एहराम की पाबन्दी पर भी अमल हो जाए और पर्दे के अहकाम की भी रिआयत हो जाए।

وَاللّٰہُ اَعْلَمُ عَزَّوَجَلَّ وَرَسُوْلُہٗ اَعْلَم صلَّی اللہ علیہ واٰلہٖ وسلَّم

2 मामूंज़ाद से पर्दे का शरई हुक्म

सुवाल : क्या फ़रमाते हैं उलमाए किराम व मुफ़्तियाने शरए मतीन इस मस्अले के बारे में कि क्या लड़की का अपने मामूं के बेटों से और लड़के का अपनी मुमानी और मामूं की बेटियों से पर्दा करना लाज़िम है ? और अगर उन में शरअन पर्दा लाज़िम है तो उस की ख़िलाफ़ वर्ज़ी का क्या हुक्म है ?

بِسْمِ اللّٰہِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِیْمِ

اَلْجَوَابُ بِعَوْنِ الْمَلِکِ الْوَھَّابِ اَللّٰھُمَّ ھِدَایَۃَ الْحَقِّ وَالصَّوَابِ

सुवाल में बयान कर्दा रिश्तेदारों का एक दूसरे से पर्दा फ़र्ज़ है, और इस तरह बे पर्दा होना हराम है कि जिन आज़ा का छुपाना फ़र्ज़ है उन के सामने उन में से कुछ खुला रखें, जैसे सर के बालों का कुछ हिस्सा, या गले या कलाई या पेट या पिन्डली का कोई जुज़ खुला हो। बल्कि फ़ी ज़माना फ़ित्नों की कसरत के बाइस उलमाए किराम ने तो औरतों को अजनबी मर्द के सामने अपने चेहरे को भी ज़ाहिर करने से मना फ़रमाया है।

وَاللّٰہُ اَعْلَمُ عَزَّوَجَلَّ وَرَسُوْلُہٗ اَعْلَم صلَّی اللہ علیہ واٰلہٖ وسلَّم

ह़ज की आरज़ू दिल में, फिर से गुदगुदाई है

ह़ज की आरज़ू दिल में, फिर से गुदगुदाई[1] है — शौक़ ने मदीने की, तिश्नगी[2] बढ़ाई है
उस को देख कर क़िस्मत, ख़ूब मुस्कुराई है — मौत जिस को त़यबा में, कलिमा पढ़ के आई है
मुस्त़फ़ा की पढ़ता है, जो ख़ुलूस से नातें — दो जहान की उस के, वासित़े भलाई है
मालो ज़र[3] की कसरत की, आरज़ू न करना तुम — बादशाही से अच्छी, त़यबा की गदाई है
ज़िक्रे ह़क़ में और यादे मुस्त़फ़ा में जो गुज़रे — आ़शिक़ो ! ह़क़ीक़त में, बस यही कमाई है
वो नसीब वाला है, इ़श्क़े मुस्त़फ़ा में आंख — जिस किसी मुसलमां ने, अश्कबार पाई है
उन की उल्फ़त अच्छी है, जिस क़दर ज़ियादा हो — इ़श्क़े मुस्त़फ़ा ही तो अस्ल में कमाई है
तुम को है किया ह़क़ ने, सब ख़ज़ानों का क़ासिम — दो जहां की हर नेमत, हम ने तुम से पाई है
मुझ को रश्क आता है, ऐसे ख़ुश नसीबों पर — जिन को ख़्वाब में सूरत, शाह ने दिखाई है
ग़ुन्चे चटके[4] गुल[5] महके, हर त़रफ़ बहार आई — मुस्त़फ़ा ने जिस जानिब भी नज़र उठाई है
बुग़्ज़ो कीना[6] मत रखो, तुम किसी का सीने में — नेक है वोही जिस के, क़ल्ब में सफ़ाई है
झूठ से सदा बचना, बात सच किया करना — सांच[7] को कभी देखा, तुम ने आंच[8] आई है ?
भाई ! राहे सुन्नत से, तुम कभी भी मत हटना — दो जहान की इस में, बिल यक़ीं[9] भलाई है

लह़द[10] में वोह आए हैं, फ़ज़्ले रब से ऐ **अ़त्तार**
छट गया[11] अन्धेरा है, क़ब्र जगमगाई है

(1) शौक़ में इज़ाफ़ा (2) रूह़ानी प्यास (3) दौलत, सोना (4) कलियाँ खिलना (5) फूल (6) दिल में छुपी दुश्मनी (7) सच्चाई (8) नुक़्सान (9) यक़ीनन, बेशक (10) क़ब्र (11) दूर हो गया

अल मौत

ग़मे मदीना, बक़ीअ़, मग़्फ़िरत और बे ह़िसाब जन्नतुल फ़िरदौस में आक़ा के पड़ोस का त़ालिब

14 शाबान शरीफ़ 1447 हि.
02-02-2026

दीने इस्लाम की ख़िदमत में आप भी दावते इस्लामी का साथ दीजिये और अपनी ज़कात, सदक़ाते वाजिबा व नाफ़िला और दीगर अ़त़िय्यात (Donation) के ज़रीए़ माली तआ़वुन कीजिये !

आप के चन्दे को किसी भी जाइज़, दीनी, इस्लाही़ (*Reformatory*), फ़लाही़ (*Welfare*) रूह़ानी ख़ैर ख़्वाही और भलाई के काम में ख़र्च किया जा सकता है